नवम्बर 2008 ■ Rs.20/-

चन्दामामा

Winning comes naturally, when you're on a Ladybird.

Embark on a word hunt and explore a priceless treasure of another kind. Discover a minimum of 30 words using the letters from the words LADYBIRD SPLASH, each word composed of at least 3 letters (e.g. bash), and send in your entries to us. The first 200 early bird entries stand a chance to win surprise gifts. Because on a Ladybird, every day is a new journey.

BSA LADYBIRD Pink Splash

Your best friend for life.

Fill in the details below and send your entries before 5th December 2008 to: The Brand Manager, TI Cycles of India, P.O. Box No. 5, MTH Road, Ambattur, Chennai - 600 053.

Name:__________ Address:__________

__________ Tel:__________ Age:______ Date of Birth:__________

School & Branch:__________ Class & Section:__________

Conditions Apply.

www.ticyclesindia.com

25% Off!

CHANDAMAMA'S

Ramayana

An Epic Journey

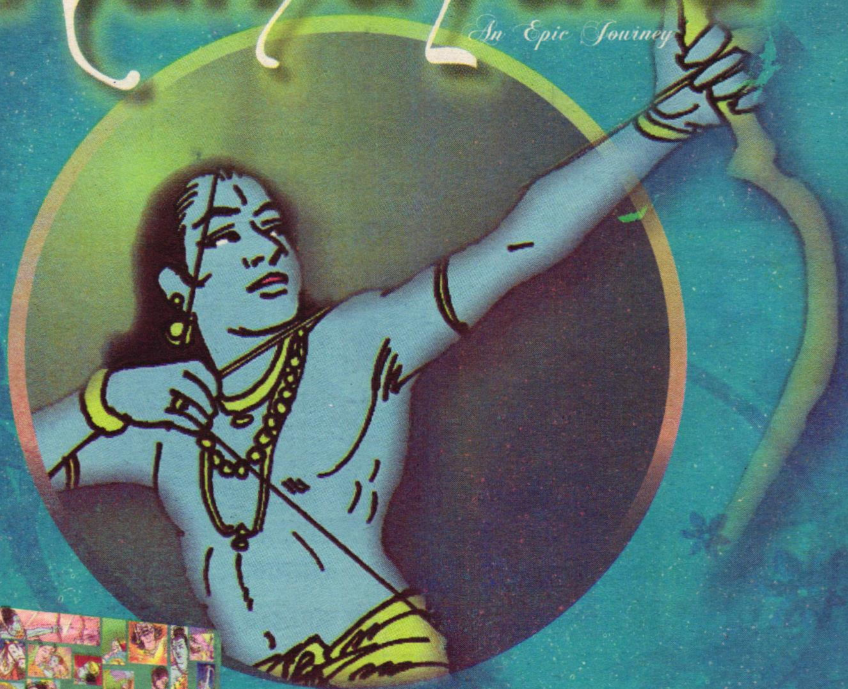

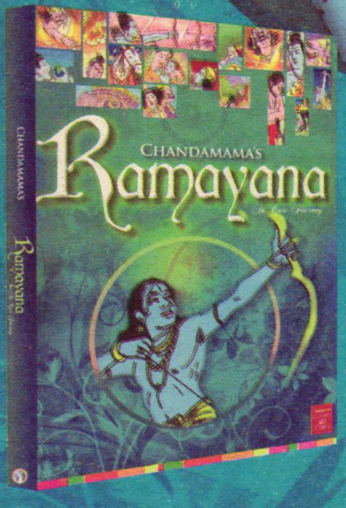

Follow the epic journey of Prince Rama, from his birth to his exile, from the abduction of his wife, Sita, to his great war with the Asura King, Ravana, in Chandamama's latest offering: Ramayana - An Epic Journey.

Price: Rs 450

Order now and get 25 % off!

To place an order go to www.chandamama.com and click on the Pre-order button.

Chandamama's Ramayana is available only in English at all leading book shops.

चन्दामामा सम्पुट-५९ नवम्बर २००८ सञ्चिका-११

विशेष आकर्षण

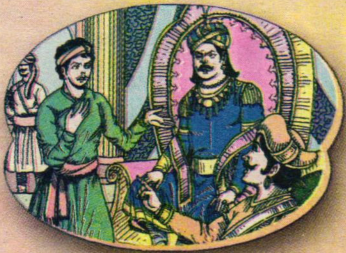

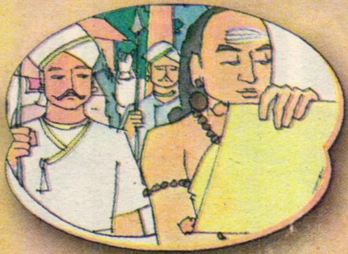

विहंग भूषण की चर्याएँ (वेताल कथाएँ) ...१९

तमिलनाडु की एक लोक कथा ...३७

चिरस्मरणीय ऐतिहासिक घटनाएँ-१४ ...४१

रामायण (सुन्दर काण्ड-६) ...५७

अंतरंग

* पाठकों का पन्ना ...०६
* माया की परत ...०७
* भारत के धरोहर स्थल ...११
* बाल दिवस पर एक जादू की कहानी ...१२
* पाताल दुर्ग-४ ...१३
* समाचार झलक ...२५
* पौराणिक युवा नायक-६ ...२६
* भारत दर्शक ...२९
* महान पुरुषों के जीवन की झाँकियाँ-३५ ...३०
* बीरबल की कहानियाँ-१५ ...३२
* गलती मान ली ...४५
* युक्षम के हीरो ...४९
* भारत के नये विश्व-चैम्पियन ...५२
* जातक कथा ...५४
* करनी का फल ...६३
* विहंग भेरी ...६७
* असली अंधा ...७०
* चन्दामामा प्रश्नोत्तरी-१० ...७१
* बच्चे अख़बार की सुर्खियों में ...७२
* चित्र कैप्शन प्रतियोगिता ...७४

अमर वाणी

हाथी, साँप, पक्षी आदि का पकड़ा जाना, सूर्य और चन्द्रमा में ग्रहण का लगना तथा बुद्धिमानों का दरिद्रता का शिकार होना, यह सब देखने पर मालूम होता है, प्रारब्ध कैसा शक्तिशाली है।

प्रारब्ध पृथ्वी के लिए अलंकार-प्राय पुरुष की सृष्टि करके क्षण में मार डालता है। ऐसा प्रारब्ध कैसा बुद्धिविहीन है!

देशभक्ति और आतंकवाद

स्वाधीनता के लिए प्रेम सभी प्राणियों की प्रकृति में जन्मजात है। राजनैतिक स्वाधीनता प्राप्त करने के पश्चात हम भारतीय बोलने, अपने विचारों को व्यक्त करने तथा धर्म के चुनाव की स्वाधीनता का आनन्द उठाते आ रहे हैं। लेकिन आज हम देखते हैं कि कुछ ऐसे लोगों का एक समूह उभर रहा है जो इस स्वाधीनता का दुरुपयोग करते हैं। यह स्पष्ट है कि उन्होंने स्वाधीनता की सच्ची भावना को समझा नहीं है, यहाँ तक कि वे हमारी प्राचीन संस्कृति और परम्पराओं के साथ धृष्टता करने का प्रयास करते हैं। कोई नहीं समझ सका है कि इनका आदर्श क्या है। लगता है उनका उद्देश्य जन-जीवन में शान्ति, सद्भाव और सामंजस्य को विघटित करना है। इस उद्देश्य की सिद्धि के लिए वे आतंक का आयुध उपयोग में लाते हैं। परिणामस्वरूप निर्दोष व्यक्तियों की जानें जाती हैं या वे आहत हो जाते हैं, भवन ध्वस्त हो जाते हैं तथा कीमती जायदादें नष्ट हो जाती हैं। देश में सर्वत्र आतंक का वातावरण बना दिया गया है।

सबसे अधिक चिन्ता का विषय यह है कि इन गतिविधियों में युवकों को शामिल किया जाता है। लगता है कि वे अपराध कर्त्ताओं के षड्यंत्र के शिकार हो गये हैं और उनके हाथों में कठपुतले बन गये हैं। ये ही कमसीन छोकरे पकड़े जाते हैं जबकि वास्तविक अपराधी प्रायः निरापद रहते हैं। स्वाधीनता का लाभ उठाने के बदले, जो हमें एक लम्बे संघर्ष के बाद मिली है, कुछ बहकाये हुए युवक शैतानी ताकतों के शिकार बन गये हैं जिन्होंने अपना सिर बेरोक टोक उठा रखा है। तरुण वर्ग को चाहिये, कि देश की सर्वसत्ता की रक्षा के लिए आगे कदम बढ़ाये और स्वाधीनता का प्रहरी बने जिससे देश में अराजकता न फैले।

उन्हें जहाँ तक कि निर्दोष व्यक्तियों का रक्त बहाने के बदले अपने जीवन का बलिदान करने को तैयार रहना चाहिये।

हममें से प्रत्येक को अपने देश को प्यार करना चाहिये और स्वाधीनता का आदर करना चाहिये। देशभक्ति ही आतंकवाद का एक मात्र प्रतिकारक है।

सम्पादक : विश्वम

Visit us at : http://www.chandamama.com/hindi

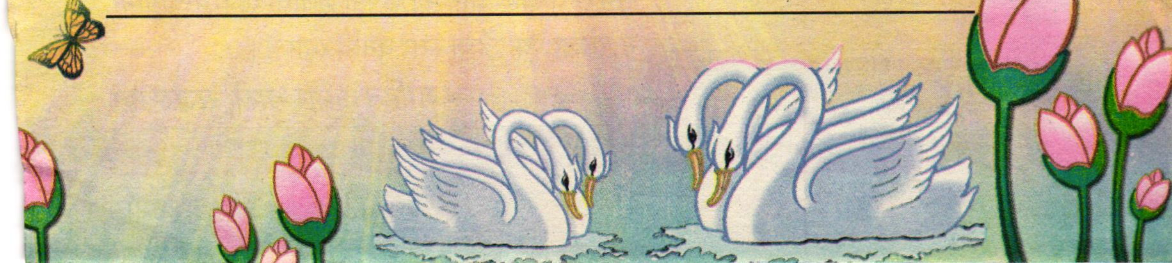

Founded by
B. Nagi Reddi and Chakrapani

Editor, Publisher : B. Viswanatha Reddi (Viswam)
Chief Executive Officer : L. Subramanyan
Editorial Advisors : Ruskin Bond, Manoj Das
Consultant Editor : K. Ramakrishnan
Associate Editor : Sowmya Rajendran
Senior Artists: K.C. Sivasankaran (Sankar), Gandhi Ayya, P. Mahesh
Artist : Jayapandian
Assistant Editor : R. Sudha
Creative Writer : R. Vaasugi
Layout Designer : B.A. Hemalata Malini

CIRCULATION TEAM :
Chennai : **T N Ravi Shankar, *National Sales Manager***
Mobile +91 99620 70014
email : ravishankar.tn@chandamama.com
Fazal Khan, *Manager-Circulation & Institutional Sales - South*
Mobile +91 99625 67860
email : fazal.khan@chandamama.com
Mumbai : **Rajendra K Jadhav, *Asst. Manager - Circulation***
Mobile +91 9320565048
CHANDAMAMA INDIA LTD., B-3, Lunic Industry
Opp. State Bank of India, Near Police Station Cross Road
No.6, MIDC Andheri (East), Mumbai-400093
Phone +91 22 28312872 / 28311849
email : rajendra.jadhav@chandamama.com
New Delhi : **Sushil Sharma, *Circulation Manager-North***
Mobile +91 98719 30767
CHANDAMAMA INDIA LTD., Goyal Business Centre,
C-23/2 First floor, Connaught Place, New Delhi-110001
Bangalore : **P. Murali, *Asst. Circulation Manager - Karnataka***
Mobile +91 94488 36952
CHANDAMAMA INDIA LTD., 18, 10th Cross, Mayura Street
Papanna Lay Out, Outer Ring Road, RMV 2nd Stage
Bangalore-560094, Phone +91 80 6655 1000
email:murali.p@chandamama.com
Kolkata : **Ananth Prakash, *Circulation Manager-East***
Mobile +91 98362 82202
email : ananth.prakash@chandamama.com
Ahmedabad : **Kalpesh Raval, *Sales Officer-Circulation***
Mobile +91 98245 19946
email : kalpesh.raval@chandamama.com
Content Head - Online : **Sowmya Bharadwaj**
email : sowmya.b@chandamama.com
Head - Business Development : **Surajit Agarwal**
email : surajit@chandamama.com
Advertisement : email : sales@chandamama.com
Subscription Queries: L Govindasamy
e-mail : govindaswamy.l@chandamama.com
Customer Cell : A B Sairam Mobile: +91 9841983774
e-mail : sairam.ab@chandamama.com
Production Executive : Panchakshari R Math
Head Office : **CHANDAMAMA INDIA LTD.,**
JVL Plaza, Block-A, 6th Floor, 626, Anna Salai,
Teynampet CHENNAI-600018
Phone +91 44 24334455, Fax +91 44 2432 2103
Email : chandamama@chandamama.com
Website : www.chandamama.com

ANNUAL SUBSCRIPTION :
Foreign : US$30 (including shipping and handling charges)

पाठकों का पन्ना

चन्दामामा के साथ ही मेरा बचपन बीता। अब मैं २२ वर्ष का हूँ, फिर भी जब तक *चन्दामामा* न पढ़ लूँ, कुछ अधूरापन-सा लगता है। प्रत्येक माह *चन्दामामा* की प्रतीक्षा बेसब्री से करता हूँ। कारण केवल एक है - *चन्दामामा* की उच्चकोटि और मानक स्तर की कथावस्तु। ऐसी शिक्षाप्रद, जीवन से जुड़ी तथा रोचक कहानियों का संकलन अन्य किसी पत्रिका में नहीं मिलता। विक्रम-वेताल मुझे सबसे प्रिय है। जहाँ अन्य बाल पत्रिकाओं ने अपना स्तर क्रमशः खो दिया, *चन्दामामा* आज भी कथा-साहित्य के आकाश में गर्व से प्रकाशमान हो रहा है।

चन्दामामा के संपादक मंडल एवं प्रबुद्ध लेखकों को मैं तहे दिल से धन्यवाद देता हूँ। पूर्ण विश्वास है कि आप सदैव अपने मानक स्तर को बनाए रखेंगे।

- प्रभात मिश्रा, पटना

मैं पिछले ३ वर्षों से चन्दामामा का नियमित पाठक हूँ। मैं *चन्दामामा* एवं *जूनियर चन्दामामा* दोनों ही पत्रिकाएँ पढ़ता हूँ। मैं बड़े विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि *चन्दामामा* बच्चों एवं हर उम्र के व्यक्तियों के लिये एकमात्र पत्रिका है जो समृद्ध भारतीय संस्कृति और परम्परा को इसकी पूरी गरिमा के साथ प्रस्तुत करती है। यह मेरी अभिलाषा है कि *चन्दामामा* रूपी सूर्य सदा हमारे ज्ञान का दीपक जलाता रहे। *चन्दामामा* ने हमेशा एक ऊँचा स्तर बनाये रखा है।

- मोहित कुमार भाटी, राजस्थान

© The stories, articles and designs contained in this issue are the exclusive property of the Publishers. Copying or adapting them in any manner/ medium will be dealt with according to law.

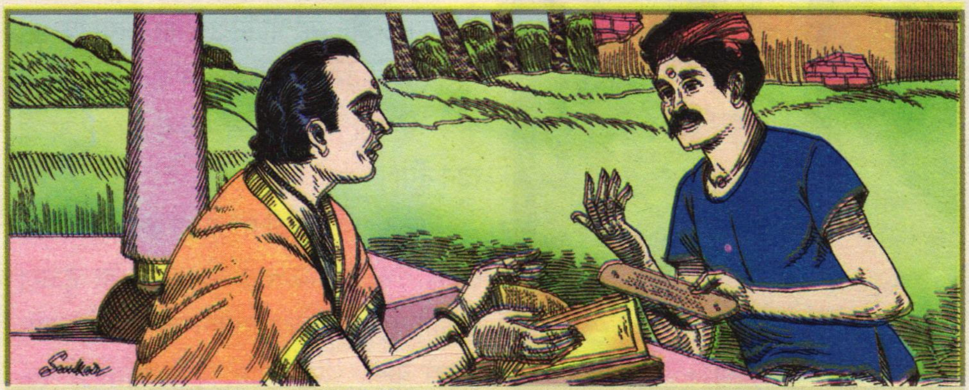

माया की परत

जयपुर के शंकर शर्मा महान पंडित थे। उन्होंने वेदों और धर्मशास्त्रों का गहरा अध्ययन किया था। जब चाहो, कविता सुनाने की असाधारण प्रतिभा उन्हें प्राप्त थी। सरस्वती की उनपर अपार कृपा थी।

उनके पास जो भी आते थे, उनकी समस्याओं का आसानी से वे हल करते थे और विषयों की अच्छाई-बुराई का विश्लेषण करते थे। पुरोहित का काम संभालते हुए वे अपनी जीविका चला रहे थे। इस वजह से उस गाँव के ही नहीं, अड़ोस-पड़ोस के गाँवों से भी लोग आया करते थे और उनकी सलाह लिया करते थे। वे उनका बड़ा आदर करते थे।

चूँकि शंकर शर्मा की अधिक संतान थी, इसलिए परिवार को चलाने में उन्हें कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। कभी-कभी अपनी दुःस्थिति पर उन्हें बड़ी ही चिंता होती थी। पांडित्य में उनकी बराबरी का कोई नहीं था, पर परिवार को चलाना उनके लिए दूभर हो गया। उनपर सरस्वती की कृपा दृष्टि थी, पर लक्ष्मी उनसे रूठी हुई थी। कभी-कभी इस विषय को लेकर वे चिंताग्रस्त हो जाते थे।

एक दिन शाम को अपने घर के चबूतरे पर बैठकर किसी ग्रंथ का पठन कर रहे थे। उस समय गाँव का किसान लक्ष्मीपति वहाँ आया और कहने लगा, ''शर्माजी, जब हम अपने घर की पुरानी दीवार गिरा रहे थे तब दीवार के अंदर से यह पेटी मिली। मैं तो अनपढ़ हूँ। आप ही इसे पढ़ लीजिये।'' कहते हुए उसने एक पुराना तालग्रंथ उनके हाथ में थमा दिया।

''अच्छा हुआ, आपने इस पुराने ग्रंथ को गंगा में नहीं फेंका। मैं इसका पठन करूँगा और इसमें

ज्वाला शंकर

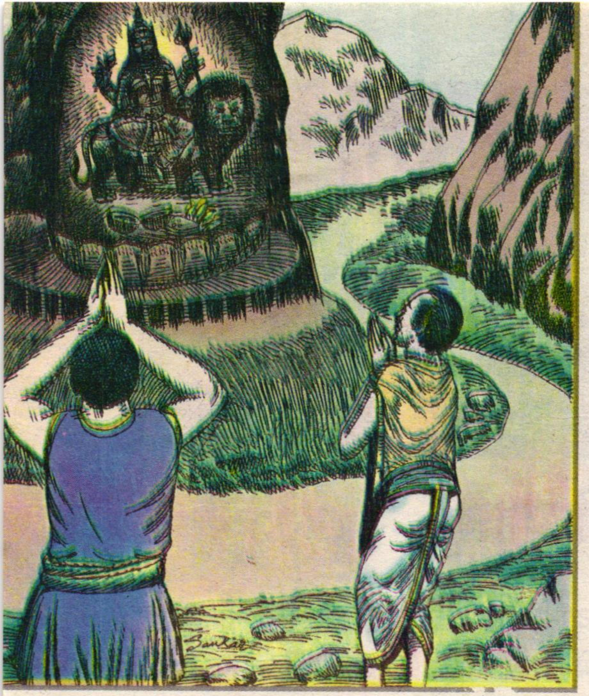

जो विषय है, बाद में आपको बताऊँगा'', कहते हुए उन्होने सहर्ष वह ग्रंथ स्वीकार किया।

दूसरे दिन सवेरे वे लक्ष्मीपति का दिया हुआ ग्रंथ पढ़ने लगे। यद्यपि इसमें अनेक विषय थे, पर विशेष रूप से इसमें नवदुर्ग व आठ प्रकार के ऐश्वर्यों के बारे में सविस्तार लिखा हुआ था। इसमें यह भी लिखा हुआ था कि पूर्वी पर्वतों की गुफाओं में गुप्त निधियाँ भरी पड़ी हैं।

निधि के बारे में पढ़ते ही उनकी विशाल आँखें खुली की खुली रह गयीं। अपनी दरिद्रता हट जायेगी, यह जानते ही उनमें उत्साह भर आया। उन्हें लगा कि भगवान ने उसकी पुकार सुन ली और उन्हें मार्ग दिखाया।

शंकर शर्मा कल्पना करने लगे कि इस निधि के हाथ में आ जाने से उनके सारे दुख़ दूर हो जाएँगे। उन्होंने यह भी निश्चय कर लिया कि इस तालग्रंथ को देनेवाले लक्ष्मीपति को इसके बारे में कुछ भी नहीं कहूँगा। इस रहस्य को रहस्य ही रहने दूँगा।

किन्तु, पूर्वी पर्वतों में अकेले जाने से वे कुछ समय तक हिचकिचाते रहे। उन्हें डर हुआ। उन्होंने तुरंत गाँव के पहलवान को बुलवाया और उससे कहा, ''पहलवान, पूर्वी पर्वतों में एक मूल्यवान जड़ी-बूटी मिलती है। उससे हर प्रकार के रोग का निवारण हो सकता है। मेरे साथ चलोगे तो तुम्हें जितना धन चाहिये, दूँगा। पर याद रखना, यह बात गुप्त ही रहे।''

इतने बड़े पंडित ने उसे अपने साथ आने के लिए कहा इसलिए उसने सहर्ष स्वीकार कर लिया। तिसपर उन्होंने बहुत धन देने का भी वादा किया।

दूसरे दिन सवेरे ही पहलवान के साथ शंकर शर्मा पूर्वी पर्वत की ओर निकल पड़े। अपने साथ रोटियों की गठरी भी ले गये। तीन दिनों की यात्रा के बाद पूर्वी पर्वतों के निकट पहुँचे। तालग्रंथ में जैसे सूचित किया गया था, उसी ओर वे जाने लगे। मार्ग मध्य में एक बड़े टीले के पीछे उन्होंने दुर्गा की बहुत बड़ी मूर्ति देखी।

शर्माजी ने हाथ जोड़कर उसे नमस्कार किया। मूर्ति के पीछे जो गुफ़ा थी, उसमें उन दोनों ने क़दम रखा। तुरंत एक गंभीर आवाज़ हुई, ''कौन है वहाँ? इस गुफ़ा में पैर रखने का यह साहस!'' उस भयंकर स्वर को सुनकर शंकर शर्मा चौंक उठे और खड़े के खड़े रह गये।

दूसरे ही क्षण एक राक्षस का विकट अट्टहास सुनायी पड़ा और उन्होंने देखा कि वह राक्षस उनके सामने खड़ा है। राक्षस ने आते ही पूछा, ''निधि ले जाने के लिए आये हो?''

''हाँ'' थरथर काँपते हुए शर्माजी ने कहा।

''तुम पंडित ही हो न?'' राक्षस ने पूछा।

''हाँ, पर यह तुम्हें कैसे मालूम है?'' शर्माजी ने पूछा।

''तुम्हें देखते हुए मुझे ऐसा लगा। पहले मैं भी तुम्हारी ही तरह एक बड़ा पंडित था, इसलिए तुरंत समझ गया'', राक्षस ने कहा।

''तो तुमने यह राक्षस रूप कैसे पाये?'' पंडित ने दुःखी होकर पूछा।

''मेरी दुराशा इस रूप का कारण है। मैं एक पंडित हूँ। एक दरिद्र ब्राह्मण को एक मुनि ने एक तालग्रंथ दिया था। मैंने उस ग्रंथ की चोरी की। उसमें गुप्त निधि का रहस्य था। यह पढ़कर किसी की जानकारी के बिना यहाँ आया। यह निधि सचमुच एक गंधर्व की है। उसे जब मालूम हुआ कि मैं इस पूरी निधि को ले जाना चाहता हूँ तो उसने मुझे राक्षस बन जाने का शाप दिया। मैं उसके पाँवों पर गिर पड़ा और शाप विमोचन का मार्ग बताने की प्रार्थना की तो उस गंधर्व ने कहा, ''अगर कोई तुम्हारी ही तरह दुराशा के वश में आकर यहाँ आये तो तुम्हें इस राक्षस रूप से मुक्ति मिलेगी। तब तक तुम्हें इसी रूप में यहाँ रहना पड़ेगा। यह कहकर गंधर्व गायब हो गया। तब से मैं राक्षस रूप में यहाँ हूँ। क्या इस विषय में तुम मेरी मदद कर सकोगे?''

''अगर सहायता नहीं करूँगा तो मैंने जो-

जो विद्याएँ सीखीं, वे सब व्यर्थ हैं। जब तक मौक़ा नहीं मिलता, तब तक सबके सब आदमी आदमी ही बने रहते हैं। मैं तो सभी शास्त्रों में महान पंडित हूँ। फिर भी मैं दरिद्र हूँ। मुझे इस बात का बड़ा दुख है कि इतना महान पंडित होते हुए भी आगे नहीं बढ़ सका। दुराशा ने मेरी आँखों पर परदा डाल दिया है, इसके लिए मैं बहुत शर्मिंदा हूँ।'' फिर उसने उस राक्षस को सविस्तार बताया कि वह यहाँ कैसे पहुँचा।

राक्षस ने कहा, ''मानता हूँ कि तुम्हारी बातों में सच्चाई है। मैं यह निधि तुम्हारे सुपुर्द करूँगा। इसमें से आधा निधि लक्ष्मीपति को देना। तुम्हारी सहायता करनेवाले इस पहलवान को थोड़ी निधि देना। शेष धन से अपना जीवन निश्चिंत होकर जीना। अपनी दुराशा छोड़ दोगे तो इस राक्षस रूप से मुझे मुक्ति मिलेगी। वादा भुला दोगे तो तुम्हें नरक में जाना होगा।'' यों शर्माजी को सावधान करते हुए उस राक्षस ने रत्नों की गठरी उसे सौंपी।

रत्नों की गठरी लिये स्वस्थल लौटे शंकर शर्मा ने लक्ष्मीपति को यह रहस्य बताया और उसे आधा धन दिया। थोड़ी-सी निधि उस पहलवान को भी दी। शेष निधि पाठशालाओं, वैद्यशालाओं तथा सरायों के निर्माण में लगायी। एक दमड़ी भी उन्होंने अपने लिए बचा नहीं रखी। हमेशा की तरह पुरोहित का काम संभालते हुए अपने परिवार का पालन-पोषण करते रहे। वे अब उत्तम पंडित ही नहीं रहे, उत्तम परोपकारी भी बन गये।

लोगों ने उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की। शंकर शर्मा जब एक दिन पाठशाला का पर्यवेक्षण कर रहे थे तब एक अपरिचित व्यक्ति वहाँ आया और उनके पैरों पर गिर पड़ा। वह कहने लगा, ''मुझे राक्षस रूप से विमुक्ति दिलायी, इसके लिए मैं आपका कृतज्ञ हूँ।''

क्षण भर में ही शर्माजी ताड़ गये कि यह व्यक्ति कोई और नहीं, साक्षात् वह गुफ़ा का राक्षस ही है। उन्होंने उससे कहा, ''मेरी आँखों पर माया की जो परत थी, वह तुम्हारे ही कारण हट गयी। इसके लिए मैं भी तुम्हारा कृतज्ञ हूँ।'' यह कहते हुए शंकर शर्मा ने उसे प्यार से गले लगा लिया।

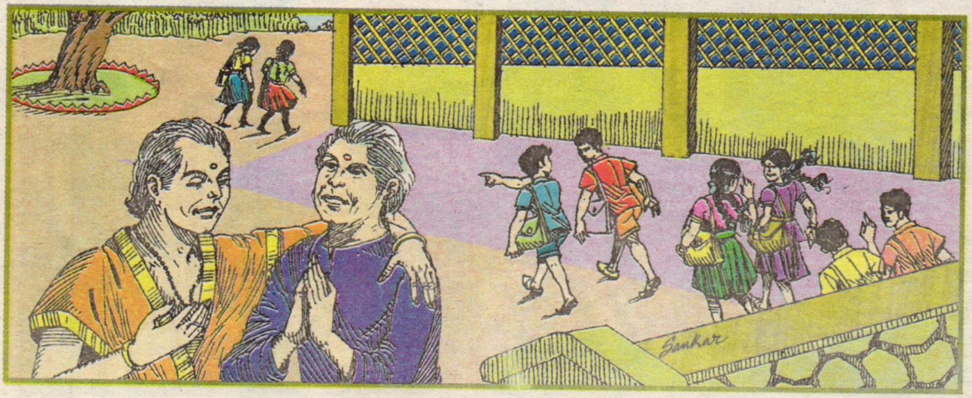

चम्पानेर - पावागढ़ पार्क

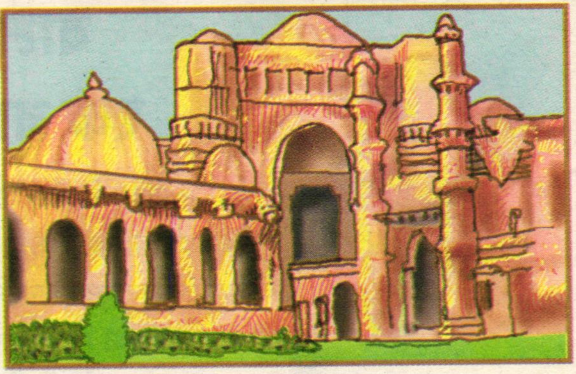

चम्पानेर अहमदाबाद के निकट पावागढ़ की पहाड़ियों के नीचे एक प्राचीन नगर बसा हुआ है। नगर के नाम के बारे में जनश्रुतियाँ हैं। कुछ लोगों का विश्वास है कि इसका नाम नगर के संस्थापक चम्पाराज के ऊपर है, जबकि दूसरे यह विश्वास करते हैं कि चम्पा वृक्ष के कारण, जो यहाँ बहुतायत में पाये जाते हैं, इस नगर का नाम चम्पानेर पड़ा। नगर की ऐतिहासिक संस्कृति बहुत समृद्ध है जो एक बड़ा व्यापारिक केन्द्र था जहाँ उत्तम कोटि के रेशम, बुने और रँगे कपड़े तथा तलवार निर्माण का व्यवसाय किया जाता था।

चम्पानेर में कितने ही भग्नावशे हैं; प्राचीरें, मकबरे, बाग-बगीचे, तोरण, स्तम्भ तथा कूप प्राचीन काल से यहाँ के भूदृश्य में अतीत की रोमांचकारी स्मृतियों के प्रहरी बनकर खड़े हैं। इस स्थान को चम्पानेर-पावागढ़ पुरातत्वीय पार्क का नाम दिया गया है। इस स्थल का अंग है- महलों, मन्दिरों, आवासीय क्षेत्रों, कृषि संरचना तथा जल व्यवस्था के साथ परिपूर्ण, गुजरात में १६ वीं शताब्दी की प्रारंभिक हिन्दू राजधानी का एक पहाड़ी किला। ये संरचनाएँ ८ वीं से १४ वीं शताब्दी के काल की हैं।

पावागढ़ की पहाड़ियों पर काली माता का एक मनोहर मन्दिर है। यहाँ साल भर हजारों तीर्थयात्री पूजा और दर्शन के लिए आते हैं। यह स्थल मुगल इस्लामिक इतिहास के पूर्व काल के अध्ययन की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह उस काल का एक मात्र सम्पूर्ण शहर है जिसमें बाद के वर्षों में कोई परिवर्तन नहीं आया।

चम्पानेर-पावागढ़ पुरातत्वीय पार्क एक ऐसी छोटी राजधानी का उदाहरण है, जिसमें इसके विन्यासों, स्थलाकृति तथा प्राकृतिक विशेषताओं का सर्वोत्तम उपयोग किया गया है। इसी विशिष्टता के कारण यूनेस्को ने सन् २००४ में इसे विश्व विरासत स्थल के रूप में स्वीकार किया।

दर्शनीय स्थल हैं : १. चम्पानेर के भग्नावशेषः वे हम्पी के समान हैं। किले के अन्दर काफी संरक्षित शहर की मस्जिद है। २. कालि माता का मन्दिर जो पावागढ़ पहाड़ी पर हैः यह मन्दिर वास्तुकलात्मक सौन्दर्य की अपेक्षा धार्मिक महत्व के कारण अधिक प्रसिद्ध है। पहाड़ी की आधी ऊँचाई से चोटी तक केबुल कार की व्यवस्था है। विकल्प के रूप में केबुल कार पाइण्ट से लगभग १,५०० सीढ़ियों का एक फुटपाथ है। फुटपाथ पर रंगा रंग दुकानों की पंक्ति है जहाँ ऊपर चढ़ते समय शक्ति वर्द्धक नीम्बू पानी पी सकते हैं।

बाल दिवस पर एक जादू की कहानी

एक बार पंडित नेहरू तमिलनाडु के दौरे पर थे। सड़कें भीड़ से भरी थीं। सड़कों के किनारे के वृक्षों पर बच्चे लदे पड़े थे। जब उनका मोटरकेड सड़क पर जा रहा था, उन्होंने भीड़ के अन्तिम छोर पर रंगों का विस्फोट देखा। एक बैलून विक्रेता बैलूनों के सूत अपने हाथ में लिये खड़ा था।

पंडित नेहरू ने मोटरकेड रुकवाई। वे जीप से उछल कर नीचे आये और बैलून वाले को बुलाया। बैलूनवाला डरता हुआ नेहरू की तरफ आया। उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब नेहरू जी ने अपने सहायक को उसके सारे बैलून खरीद लेने और बच्चों में बाँट देने के लिए कहा। फिर वे एक छोटी लड़की के पास गये जो अपने बैलून को ऊँचा उड़ने हुए देख रही थी। उन्होंने प्यार से उसका गाल थपथपाया और जीप में लौट आये।

क्या तुम शिकायत कर रहे हो कि ''इसमें जादू कहाँ है?'' अच्छ! तो सुनो! जादू उन बैलूनों में है जिन्हें नेहरूजी ने बच्चों को दे दिया। यह एक नेता का जादू है जो बच्चों में विश्वास रखता है और उन्हें खुश करने में उनमें कोई पूर्वाग्रह नहीं है। यह एक प्रौढ़ का जादू है जो अपना बचपन नहीं भूला है।

यह एक वी आई पी का जादू है जो मनोविनोद का मूल्य समझता है, जैसे बच्चे समझते हैं। और वह जादू, मेरे दोस्तो! आप किसी मर्तबान में नहीं खरीद सकते!

इस १४ नवम्बर को *चन्दामामा* अपने पाठकों के लिए शुभ बालदिवस की कामना करता है।

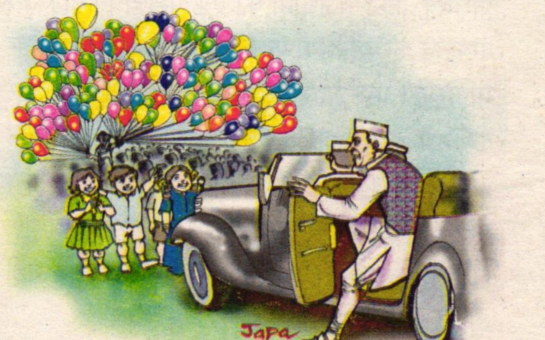

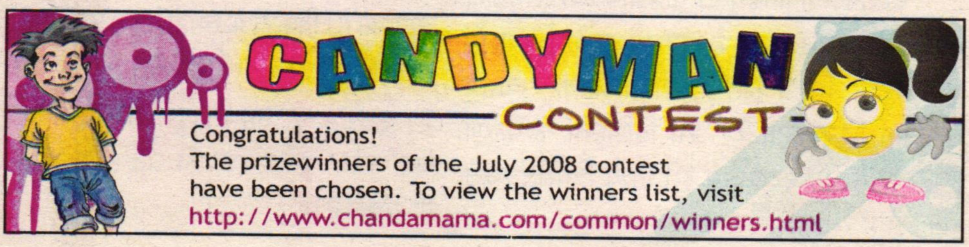

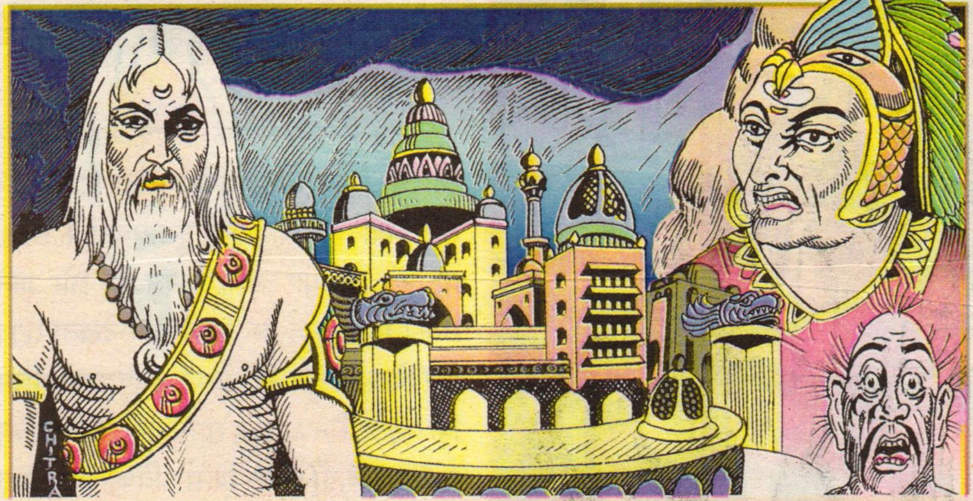

पाताल दुर्ग

4

(रात के समय कदम्ब की राजधानी में एक महाकाय राक्षस आया। राजकुमारी कान्तिसेना को वह उठाकर भागने लगा। पहरेदार उस पर बाण और भाले फेंकने लगे। राजा उग्रसेन की आज्ञा पर कुछ घुड़सवार उसका पीछा करने लगे और कुछ उस पर अग्नि बाण छोड़ने लगे। बाद में-)

राजमहल में हुए शोर के कारण सारा शहर जाग उठा। लोगों ने सोचा कि किसी शत्रु ने उन पर हमला कर दिया। उनमें से कुछ नगर के द्वार की ओर भागे। इस बीच सैनिकों के छोड़े हुए बाण निशाने पर न लग कर, शहर के घरों पर गिरे और जहाँ-जहाँ वे गिरे, वहाँ-वहाँ छोटी मोटी आग भभक उठी। लोगों में हो हल्ला मचा और वे अपने घरों की रक्षा करने के लिए भागे।

राजमहल की छत पर खड़े होकर राजा उग्रसेन यह सब देख रहा था। उसने मन्त्री की ओर मुड़कर गुस्से में कहा, ''मन्त्री, यह है हमारे लोगों की राजभक्ति ! आपत्ति में भी सबको अपनी-अपनी पड़ी है। हमारी रक्षा के लिए एक नहीं आगे बढ़ रहा है। यदि शत्रु राजा ने हम पर हमला किया, तो इनमें से एक भी किले की रक्षा के लिए नहीं आयेगा।''

''महाराज! राज्य की रक्षा के लिए वेतन पर

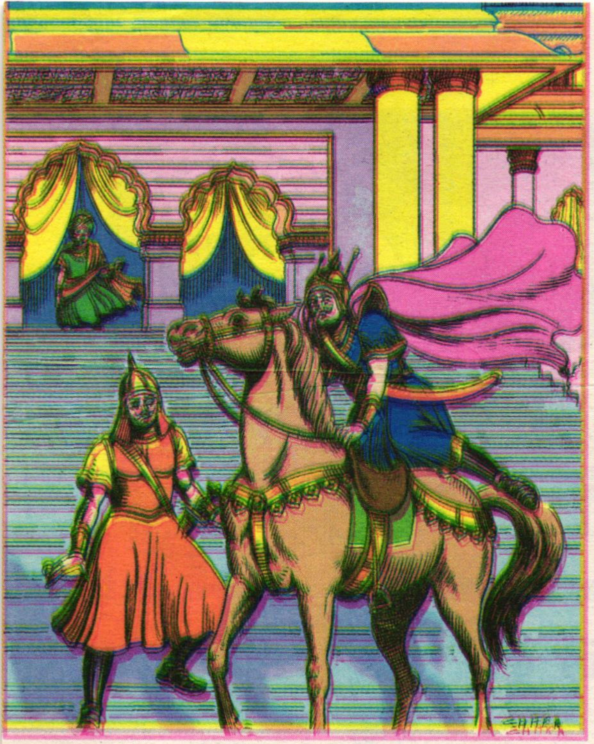

रखे हुए, हमारे सैनिक हैं न? इन डरपोक लोगों से भला क्या होगा? उनको मरनें दीजिये। और फिर ये तो आप की प्रजा हैं। इनकी रक्षा करना राजा का धर्म होता है। राज्य और राज्य की प्रजा की सुरक्षा का भार राज्य की सेना पर है।'' कहकर, मन्त्री ने उन सैनिकों की ओर राजा का ध्यान आकृष्ट किया, जो अग्नि बाण छोड़ रहे थे और कहा, ''जो बाण और भाले हमारे सैनिक, राक्षस पर फेंक रहे हैं, उनसे राजकुमारी की हानि हो सकती है। इस बारे में सैनिकों को सावधान करना आवश्यक है।''

उग्रसेन ने कहा, ''हाँ... हाँ...''। उसने सिर हिलाया और जल्दी-जल्दी छत पर से उतरने लगा। ''मन्त्री, मेरे वापस आने तक नगर की रक्षा की जिम्मेदारी तुम पर है। शतभानु कुछ भी कर सकता है। उन दूतों का क्या हुआ, जिनको हमने उनके पास भेजा था?''

इतने में एक सैनिक ने एक घोड़ा लाकर सीढ़ियों के पास खड़ा किया। उग्रसेन उस पर तुरंत सवार हो गया। कुछ घुड़ सवारों के साथ, वह नगर द्वार पार करके, जंगल की ओर जाने लगा। मन्त्री कुछ देर उनकी ओर देखता रहा। फिर किले की बुर्ज की ओर जाते हुए उसने सोचा कि यह उग्रसेन अधिक समय तक अपना राज्य न रख सकेगा। वह किसी विषय पर बिना नीतिपूर्वक विचार किये निर्णय ले लेता है और निर्णय के पूर्व मुझसे विचार-विमर्श भी नहीं करता। उसका अभी जंगल में जाना और जंगल में मशालों के साथ बाण छोड़ने का आदेश देना खतरे से खाली नहीं हैं। पड़ोसी राजा की नजर पहले से ही हमारे ऊपर है। इसके कुशासन के कारण प्रजा भी हमारे साथ नहीं है।

कदम्ब नगर के पूर्व के जंगल में जहाँ देखो, वहाँ मशाल लिये सैनिक थे। 'मशालों की रोशनी में राक्षस उनको आसानी से पहचान सकता था। जो उसे खोज रहे थे उस हालत में उन्हें राक्षस कैसे मिलेगा?' मन्त्री यह सोचकर अचरज करने लगा।

जंगल में धूमक और सोमक ने भी यही सोचा। वे कदम्ब राजा की मूर्खता पर हँसे। ज्यों ही सैनिक उनकी ओर आये त्यों ही वे घोड़ों से उतरकर पेड़ों पर चढ़ गये और घोड़ों को पेड़ों के पीछे छिपा दिया। कदम्ब राज्य के कुछ सैनिक उन

पेड़ों के नीचे आकर बातें करने लगे। उनकी बातों से धूमक और सोमक जान गये कि राजकुमारी अपहृत कर ली गयी है और उग्रसेन स्वयं जंगल में आया हुआ है।

''उस दुष्ट को मारने के लिए यह अच्छा मौका है।'' सोमक ने कहा।

''जल्दी न करो सोमक। अगर हम सैनिकों की वर्दी में होते, तो वह काम आसान था। अब हम जिन कपड़ों में हैं, अगर उसमें देखे गये, तो हमारे मरने की ही नौबत आ सकती है। फिर तो उनके लिए यह सिद्ध करना आसान होगा कि हम वास्तव में हन्ता हैं। और मौत की सज़ा हमारे लिए निश्चित रूप से होगी। बिना विचारे काम करना मूर्खता है।'' धूमक ने कहा। कदम्ब राज्य के सैनिक पेड़ के नीचे से चले गये।

''सोमक, उजाला होने से पहले हमारा पेड़ों से उतरकर, अपने गाँव चले जाना अच्छा है। जब तक हम अपने परिवारों को, इस राज्य की सीमा से बाहर नहीं कर देते तब तक हम कुछ भी नहीं कर सकते।'' धूमक ने कहा। सोमक ने कोई जवाब न दिया। वह धूमक की बात से सहमत नहीं था। वह सोचता था कि जंगल में अकेले आये राजा से बदला लेने का सुअवसर फिर नहीं मिलेगा।

सैनिक समझेंगे कि वह राक्षस द्वारा मारा गया, हमारे लिए खतरे की कोई बात ही नहीं है। पर महल में राजा तक पहुँचना असम्भव होगा। फिर भी वह चुपचाप रहा। दोनों पेड़ों पर से उतरने

लगे। इतने में पास के बड़े पेड़ के पीछे से एक काली भयंकर आकृति निकली और पास की गुफाओं की ओर चलने लगी। उसके कन्धे पर कोई स्त्री बेहोश पड़ी हुई थी।

धूमक ने सोमक का कन्धा पकड़कर रोका। गुफा की ओर जाती हुई भयंकर आकृति को उसे दिखाते हुए कहा, ''वह देखो राक्षस। उसके कन्धे पर राजकुमारी ही है। देखते हो, उसके हीरे मोती के गहने कैसे इस अन्धेरे में चमक रहे हैं।'' सोमक यह दृश्य देखकर चकित रह गया। राक्षस ज्यों ही एक गुफा के पास आया, त्यों ही अन्दर से एक गम्भीर स्वर सुनाई दिया, ''कौन है? वापस चले जाओ।''

''अरे पगले, क्यों यूँ ज़ोर से चिल्ला रहा है? मैंने कसम खा रखी है कि आज रात किसी को

नहीं मारूँगा। सीधे सादे गुफा से बाहर चले आ और चुपचाप भाग जा।'' राक्षस ने कहा।

''तुम कोई राक्षस मालूम होते हो। मैंने एक महावीर को, चिकित्सा करके, होश में लाया है। बहुत बात न करो। बिना चूँ चाँ किये यहाँ से चले जाओ।'' गुफा में से जवाब आया।

यह जवाब सुनते ही राक्षस क्रोधित हो उठा। उसने गरजते हुए एक कदम आगे रखा। ''अरे मनुष्य! तुम क्या कह रहे हो? मैं राक्षस हूँ। कुम्भीर हूँ।''

''मैं मान्त्रिक हूँ। मान्त्रिक काल शम्बर।'' गुफा के अन्दर से आवाज़ सुनायी दी। तुरंत शम्बर का चमकता हुआ मन्त्रदण्ड साँप की तरह फुँकारता बाहर आया और वह कुम्भीर के सिर पर लगा।

उतना बलवान कुम्भीर मन्त्रदण्ड की चोट लगते ही नीचे गिर गया। परन्तु उसने राजकुमारी कान्तिसेना को चोट न लगने दी। वह ऐसे उठी, जैसे नीन्द से उठ रही हो। उसने चारों ओर देखा। वह ऊँची बढ़ी घास की कालीन पर लेटी हुई थी। पास में ही राक्षस हाथ में सिर रखकर कराह रहा था। दाँत पीस रहा था। उसके सिर पर जो सींग थे, उनमें से एक मन्त्रदण्ड की चोट से टूट गया था। वहाँ एक घाव हो गया था और उसमें से लगातार खून निकल रहा था।

महा भयंकर राक्षस को उस हालत में देखकर, कान्तिसेना का डर जाता रहा और उसे उस पर दया आ गई। वह सोचने लगी कि इस महाबली विकराल राक्षस की ऐसी हालत कैसे हो सकती है जो हमारी पूरी सेना के होते हुए अकेला ही मेरे महल से मुझे उठा कर ले आया। क्या इससे भी शूर वीर इस जंगल में रहते हैं? उसे आश्चर्य हुआ। फिर उसने सोचा कि शायद उसके पिता और सैनिक उसे खोजते हुए जंगल में आये होंगे और मुझे छुड़ाने के लिए उन्होंने ही राक्षस को घायल कर दिया होगा। उसने उठकर कहा, ''अरे राक्षस, अगर मुझे खाना ही था, तो इतनी दूर क्यों मुझे उठाकर लाये? तुम्हें किसने घायल किया है? क्या मेरे पिता ने ही? वह बड़े शूर हैं, पर जो उनकी शरण में आते हैं, उनका कुछ नहीं बिगाड़ते। मैं उनको मनाकर तुम्हें बचा दूँगा। पर यहाँ तो न मेरे पिता और न मेरे सैनिक दिखाई दे रहे हैं।'' यह कह उसने इधर-उधर नज़र दौड़ाई।

राजकुमारी की बात सुनकर, उस दर्द में भी

राक्षस बिना हँसे न रह सका। उसे उसकी बातों का लहजा भी भाया।

कुम्भीर उस जगह से उठा और पास की झाड़ियों के पास गया। पत्तियाँ तोड़कर उन्हें पीसकर, अपने घाव पर लगाया और फिर कान्तिसेना के पास वापस चला आया। तब कान्तिसेना गुफा की ओर देख रही थी। वह डर के मारे काँप रही थी। ''इस गुफा में कौन बातें कर रहा है? वह क्या कोई महाराक्षस है? तुम्हारे सेवक हैं? कौन हैं?'' कान्तिसेना ने पूछा।

कुम्भीर ने गुफा की ओर क्रोध भरी दृष्टि से देखा। ''उसमें मेरे सेवक नहीं, शत्रु हैं। मेरे सिर पर चोट इस शत्रु ने ही लगाई है। वह कोई मान्त्रिक है। बड़ा बलवान मालूम होता है। अगर मैं उसके पीछे लगा, तो मेरा काम खराब हो सकता है। इसलिए अब मैं उसे छोड़ रहा हूँ।''

''तुम किस काम पर आये हो? मुझको चोर की तरह घर से उठाने के लिए? तुम भी क्या वीर हो... छी...'' कान्तिसेना ने उठकर खड़े होते हुए कहा।

कुम्भीर यह सुनकर स्तब्ध खड़ा रह गया। लज्जा से उसका सिर झुक गया। आँखें छलक आईं। उसने कान्तिसेना के सामने हाथ मलते हुए कहा, ''कान्तिसेना, मुझ से इतनी घृणा न करो। मैं स्वतन्त्र नहीं हूँ। मैं एक अति क्रूर महा शक्तिमान राक्षस का नौकर मात्र हूँ। उस महापापी ने मुझे तुम्हें उठा लाने के लिए भेजा है। उस काम को यदि मैं नहीं करता, तो मुझसे भी अधिक क्रूर

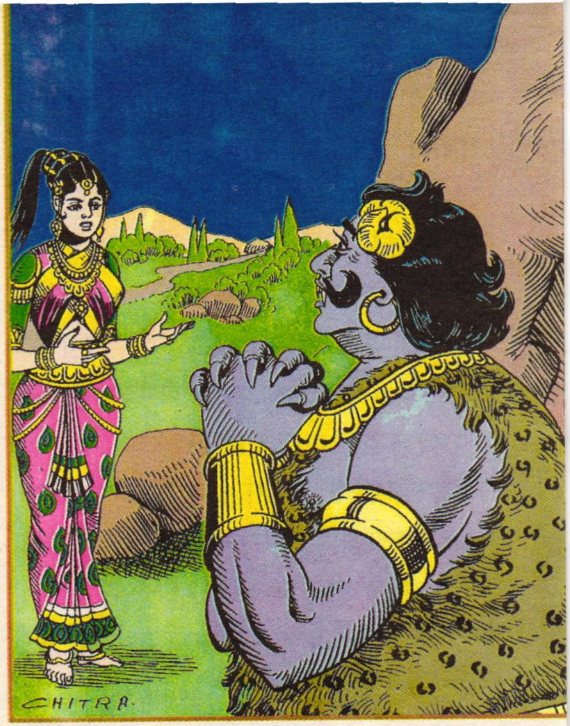

निर्भय राक्षस यह कर देता। उसकी आज्ञा का धिक्करण नहीं हो सकता। परन्तु मैं तुझे, एक न एक दिन, तुम्हारे घर छोड़ आऊँगा। भले ही यह करते हुए मेरे प्राण चले जायें। तुम्हारी सरलता और भोलेपन को देख कर ही मैंने यह निश्चय किया है। मैं तुम्हारे ऊपर कोई आँच नहीं आने दूँगा।''

''वह काम अभी क्यों नहीं करते हो?'' कान्तिसेना ने पूछा। उसे राक्षस पर दया आ रही थी।

''ऐसा करने से हम दोनों पर ही आपत्ति आ सकती है। जहाँ तुम्हें मेरे मालिक ने लाने के लिए कहा है, वहाँ तुम्हें मुझे ले जाना ही पड़ेगा। तुम डरो मत। मैं तुम्हें उसके पंजे से ज़रूर छुड़ाऊँगा और इस संसार में तुम जिससे शादी करना

चाहोगी, उससे तुम्हारी शादी करवाऊँगा। समझे।'' कुम्भीर ने कहा।

कान्तिसेना कुछ भी न कह सकी। कुम्भीर की भलमनसाहत पर उसे कुछ तो विश्वास हुआ पर क्या कह रहा था, कुछ भी न समझ सकी। अब मुझे क्या करना चाहिए? भाग जाने का प्रयत्न व्यर्थ था? राक्षस की आँखों में धूल झोंकना सम्भव न था। न मदद के लिए चिल्लाने से ही कोई फायदा था। कुम्भीर क्रुद्ध हो, उसका गला घोंट सकता था। उससे, मीठी मीठी बातें करने से ही उसका काम बन सकता था- उसने सोचा।

उसके विचारों का सिलसिला दूसरी ओर मुड़ गया– यह राक्षस एक भले इनसान की तरह है। इससे डरने की जरूरत नहीं है। पर जिसके लिए यह राक्षस मुझे उठा कर ले जा रहा है, पता नहीं, वह मेरा क्या हाल करेगा और उससे यह मुझे कैसे बचायेगा, कान्तिसेना यूँ सोच रही थी कि गुफा के सामने उसे मशाल की रोशनी में एक विकृत आकृति दिखाई दी। उसके बड़े-बड़े बाल थे। सिर से लेकर, एड़ी तक उसने काषाय वस्त्र पहन रखे थे और हाथ में एक मन्त्रदण्ड था।

''राक्षस अधम! अब भी तुम यहीं खड़े हो? क्या हल्ला कर रहे हो यहाँ? क्या तुम अपने से बात कर रहे हो? या कोई तुम्हारा दोस्त तुम्हारे साथ है?'' मान्त्रिक ने पूछा।

कुम्भीर, कान्तिसेना को छिपाकर खड़ा हो गया। आँखें लाल करके दाँत पीसते गुए उसने कहा, ''अरे, मनुष्य कहीं के। मैंने कसम खायी है कि आज किसी को नहीं मारूँगा। फिर भी अब तुम्हें मैं जीता जी नहीं छोड़ूँगा।'' वह गरजता आगे बढ़ा।

मान्त्रिक ने अट्टहास करते हुए मन्त्रदण्ड उठाकर कहा, ''अरे, राक्षस-कीड़े को इतना गुस्सा कहाँ से आ गया?'' कहकर वह मन्त्रदण्ड छोड़ने ही वाला था कि उसके हाथ पर एकमशाल का बाण लगा।

इतने में पेड़ों के पीछे से इतना हो हल्ला सुनाई दिया कि सारा जंगल गूँज उठा। मान्त्रिक ने अपने हाथ की मशाल नीचे फेंक दी। वह गुफा के अन्दर चला गया। कुम्भीर राजकुमारी को कन्धे पर रख, एक और गुफा में भागा। इस बीच बाणों की वर्षा होने लगी।

(अभी है)

विहंग भूषण की चर्याएँ

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया; पेड़ पर से शव को उतारा, उसे अपने कंधे पर डाल लिया और यथावत् श्मशान की ओर बढ़ता हुआ जाने लगा। तब शव के अंदर के वेताल ने कहा, ''राजन्, मानव जाति में दो प्रकार के मनुष्य दीखते हैं। एक वे हैं, जो भविष्य में संभव होनेवाले परिणामों पर अत्यधिक मात्रा में ध्यान केंद्रित करते हैं, जिसके कारण उन कामों की ओर ध्यान नहीं देते, जो वे कर रहे हैं। दूसरे वे हैं, जिन्हें फल तो प्राप्त हो जाते हैं, पर उनको उपभोग किये बिना हाथ से फिसल जाने देते हैं। मुझे संदेह हो रहा है कि तुम द्वितीय प्रकार के हो। तुम्हें सावधान करने के लिए मैं विहंग भूषण नामक राजा की कहानी सुनाऊँगा, जिसने भयंकर युद्ध किया और

वेताल कथा

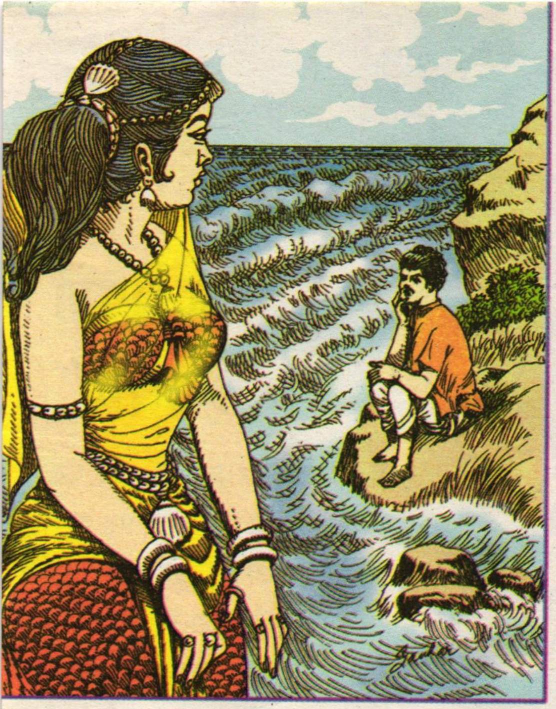

विजयी भी हुआ, पर उसके सुफल का आस्वादन पूर्ण रूप से नहीं किया।''

वराहगिरि और कूर्मगिरि अड़ोसी-पड़ोसी राज्य थे। वराहगिरि का राजा विहंग भूषण प्रजा क्षेम को ही अपना ध्येय मानता था और सुचारु रूप से शासन चला रहा था। इस वजह से प्रजा सुखी थी, उन्हें किसी चीज़ की कमी नहीं थी। पर, कूर्मगिरि का राजा मणिधर विलासप्रिय था। शासन संबंधी विषयों को वह मंत्रियों के सुपुर्द कर वह विलासों में लिप्त रहता था। प्रजा क्षेम के बारे में वह सोचता नहीं था।

कूर्मगिरि राज्य के समुद्री तट पर स्थित रत्नगिरि में मणिकंठ नामक रत्नों का एक व्यापारी रहा करता था। साकेत उसका एकलौता पुत्र था। अचानक मणिकंठ की मौत हो गयी। इस वजह से व्यापार से संबंधित सभी लेन-देन अस्त-व्यस्त हो गये। जो कर्ज वसूल करते थे, वसूल करने की योग्यता उनमें नहीं थी। जो रक़म दूसरों से मिलनी चाहिये, उसे वसूल करने में भी वे असमर्थ थे। अब युवक साकेत विपत्ति में फंस गया, उसकी स्थिति डांवाडोल हो गयी। इन परिस्थितियों का सामना न कर सकने के कारण वह अशांत हो गया।

एक चांदनी रात को साकेत सो न सकने के कारण समुद्री तट पर बैठकर सोचने लगा। उस समय समुद्र से एक सुंदर युवती बाहर आयी। इस दृश्य को देखकर वह अवाक् रह गया। वह युवती सीधे उसके पास आयी और कहने लगी, ''मैं एक जलकन्या हूँ। हिसिका मेरा नाम है। क्षीरेंद्र नामक युवक ने और मैंने एक-दूसरे से गाढ़ा प्रेम किया। नये-नये स्थलों को देखने के लिए तीन महीने पहले क्षीरेंद्र कहीं गया, पर अब तक नहीं लौटा। मुझसे अकेलापन बरदाश्त नहीं हो पाया, इसलिए उसे ढूँढ़ती हुई आयी हूँ। भूमि पर जो विशेषताएँ हैं, उन्हें देखने की भी मेरी तीव्र इच्छा है। हो सकता है, इस यात्रा के दौरान क्षीरेंद्र दिखायी पड़े। तुम्हें देखते हुए लगता है कि तुम सत्य स्वभाव के हो, कोमल हृदय के हो। क्या तुम मेरी सहायता कर सकते हो?''

''तुम्हारी मदद करने में मुझे कोई आपत्ति नहीं। पर उसके पहले, मुसीबत में फंसे मुझे तुम्हारी सहायता की नितांत आवश्यकता है। क्या यह तुमसे संभव है?'' साकेत ने पूछा।

"कहो, मुझे क्या करना होगा?" हिसिका ने पूछा। साकेत ने अपनी गंभीर स्थिति का विवरण दिया और कहा, "समुद्र से तुम मोतियों और रत्नों को ले आ सकोगी तो उन्हें बेचकर मैं अपना कर्ज़ चुका दूँगा। फिर तुम्हें भूमि पर जो विचित्रताएँ और विशेषताएँ हैं, उन्हें दिखा सकूँगा। इसके लिए मेरे पास पर्याप्त धन भी होगा और समय भी।"

हिसिका ने उसके प्रस्ताव को तुरंत स्वीकार किया। वह समुद्र की गहराई में गयी और उत्तम रत्न लेकर बाहर आयी। उन्हें साकेत को दिया। वह बेहद खुश हुआ और बाज़ार में उन्हें बेचकर उसने अपना कर्ज़ चुकाया, साथ ही अपने व्यापार को भी संभाला। हिसिका को अपने घर में ही आराम से रहने की व्यवस्था की। नगरों में तथा इर्द-गिर्द के प्रांतों में नृत्य, नाटक जैसे कार्यक्रमों को देखने के लिए उसे योग्य युवतियों के साथ भेजा।

एक दिन जब हिसिका युवतियों के साथ एक इंद्रजाल कार्यक्रम को देखने में मग्न थी, तब वह अपने को भी भुलाकर खिलखिलाकर हँस पड़ी। बगल में ही खड़ा बहुरूपिया राजा उसी कार्यक्रम को देख रहा था। उसने उसकी ओर देखा और उसके अद्‌भुत सौंदर्य को देखता ही रह गया। उसे अपना बनाने की प्रबल इच्छा उसमें जगी और पास ही खड़े सिपाहियाँ से धीमे स्वर में आज्ञा दी कि वे उसे अपने भवन में ले आयें।

हिसिका ने जैसे ही राज्य वन में क़दम रखा,

मणिधर उसके सामने आया और बोला, "मेरे मन को लूटनेवाली सौंदर्य राशि का सुस्वागत। मुझसे विवाह करोगी तो तुम्हें महारानी बनाऊँगा। मेरी इच्छा पूरी करोगी न?"

"महाराज, कुसुम को अगर विकसित होना हो तो इसके लिए कीड़े को उपयोग में लाने की कोई ज़रूरत नहीं है; यह समझ बैठना ग़लत है कि अधिकार बल के आधार पर सब कुछ साधा जा सकता है। मुझसे विवाह करने के दूसरे ही क्षण आप भी जलचर के रूप में परिवर्तित हो जाएँगे।" यों उसने मणिधर को चेतावनी दी और अपने बारे में पूरा विवरण दिया।

उसकी चेतावनी से भयभीत राजा सोच में पड़ गया। "किसी भी स्थिति में तुम जैसी अपूर्व सुंदरी को छोड़ने का सवाल ही नहीं उठता",

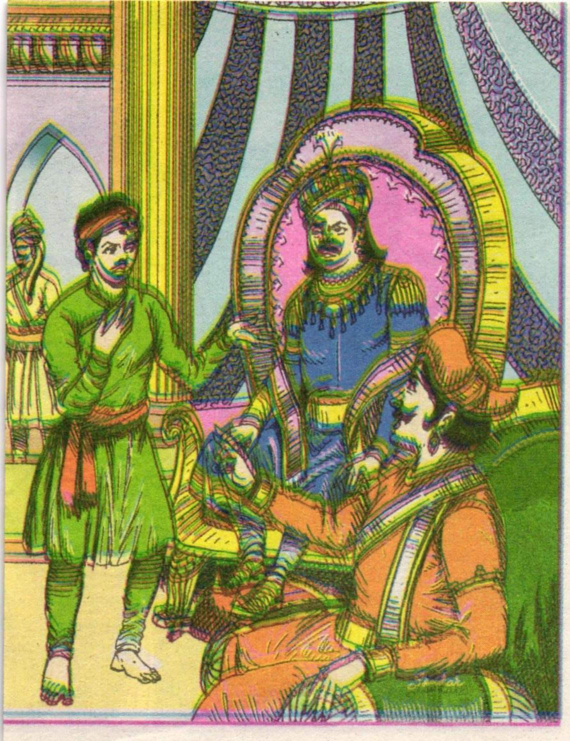

कहते हुए उसने सिपाहियों को आज्ञा दी कि वह अंत:पुर के कक्ष में बंद कर दी जाए।

राजा की मूर्खता पर दिग्भ्रांत हिसिका यह कल्पना भी नहीं कर सकी कि भूमि पर सुंदर दृश्यों तथा विनोदों के साथ-साथ ऐसे कष्ट भी होते हैं। बेचारी वह अपने आपको कोसने लगी।

ऐसे समय पर दूर प्रांतों को देखने गया क्षीरेंद्र स्वस्थल पहुँचा। जैसे ही उसे मालूम हुआ कि उसे ढूँढ़ती हुई हिसिका भूमि पर गयी हुई है तो वह भी मानव रूप में भूमि पर आया। वह गाँवों और शहरों में उसे ढूँढ़ने लगा।

आख़िर साकेत द्वारा उसे मालूम हुआ कि हिसिका कहाँ है, तो वह राजा से मिला और कहा, ''महाराज, मैं क्षीरेंद्र नामक जलचर हूँ। मुझे मालूम हुआ है कि मेरी प्रेयसी हिसिका आपकी हिरासत में है। उससे कोई अपराध हुआ हो तो उसकी तरफ़ से मैं क्षमा चाहता हूँ। दया करके उसे छोड़ दीजिये और मेरे साथ भेजिये।''

राजा को समझ में नहीं आया कि क्या जवाब दूँ। उसने मंत्री की ओर देखा। तब मंत्री ने कहा, ''क्षीरेंद्र, राज्य के समस्त चराचर राजा की संपदाएँ हैं। इनमें मानव, भूचर, जलचर भी सम्मिलित हैं। महाराज के अधिकार को धिक्कारने का अधिकार किसी को नहीं है।''

''मैं महाराज के अधिकार को धिक्कार नहीं रहा हूँ मंत्रिवर। उनके प्रतिकूल बोलने का साहस भी नहीं कर रहा हूँ। मैं केवल सविनय आपसे विनती कर रहा हूँ कि समुद्र गर्भ में निवास करनेवाले हमें अलग मत करें। हम अपनी ज़िन्दगी बिताने की अनुमति मात्र दें।'' क्षीरेंद्र ने कहा।

''महाराज की अनुमति के बिना हिसिका ने हमारे राज्य में क़दम रखा। यह उसकी पहली ग़लती है। इस अपराध के लिए उसे दंड देने का पूरा-पूरा अधिकार महाराज को है। फिर भी, चूँकि तुम बड़े ही दीन स्वर में विनती कर रहे हो, महाराज अनुमति देंगे तो तुम्हारी प्रार्थना को स्वीकार करने के लिए एक शर्त माननी होगी।'' मंत्री ने कहा।

''कृपया बताइये, वह शर्त क्या है?'' क्षीरेंद्र ने बड़े ही आतुरता-भरे स्वर में पूछा।

''तुम्हारे निवास स्थल समुद्र गर्भ में रत्नों की राशियाँ होती हैं। एक लाख रत्न लाकर दोगे तो तुम्हारी प्रेयसी को छोड़ने के लिए महाराज अनुमति देंगे।'' मंत्री ने कहा।

राजा ने मंत्री के समर्थन में सिर हिलाया। क्षीरेंद्र मंत्री की शर्त के मुताबिक समुद्र के अंदर जाता रहा और रत्नों को चुन-चुनकर इकट्ठा करके लाता रहा। राजा की आज्ञा के अनुसार ये रत्न विविध राज्यों में बेचे जाने लगे और उससे राजा का खज़ाना भरता गया। लेकिन राजा इस धन को प्रजा की सुविधाओं और उनके कुशल-मंगल के लिए इस्तेमाल में नहीं ला रहा था। अपने स्वार्थ और सुखों के लिए वह उसका उपयोग करने लगा। साथ ही अपने राज्य को विस्तारित करने के लिए, दूसरे राज्यों को अपने राज्य में मिलाने के लिए हथियार खरीदने लगा।

गुप्तचरों के द्वारा यह समाचार विहंग भूषण को मालूम हुआ। क्षीरेंद्र द्वारा लाये जानेवाले रत्नों से कूर्मगिरि की आर्थिक स्थिति सुधर ही नहीं रही थी बल्कि उसका सैनिक बल दिन व दिन बढ़ता जा रहा था। यह जानते ही विहंग भूषण ने कूर्मगिरि पर आकस्मिक आक्रमण कर दिया।

इस आकस्मिक आक्रमण पर मणिधर चिंतित हो उठा। धन भरा पड़ा है, किन्तु फौरन ही सेना को युद्ध के लिए तैयार करना उसे असंभव लगा। इसलिए कूर्मगिरि की सेना वराहगिरि की सेना का सामना नहीं कर पायी। युद्ध में विहंग भूषण ने कूर्मगिरि के राजा मणिधर और उसके मंत्री को मार डाला और कूर्मगिरि राज्य को अपने अधीन कर लिया।

हिसिका को रिहा किया और क्षीरेंद्र को उसे सौंपकर उन्हें जाने की अनुमति दी। उन दोनों ने हाथ जोड़ कर कहा, ''हम जन्म भर आपके ऋणी रहेंगे। आपकी इस उदारता को कभी नहीं भूलेंगे।

हम आपकी कोई सहायता कर सकें तो यह हमारा सौभाग्य होगा।''

''मुझे आपसे किसी भी प्रकार की सहायता नहीं चाहिये; जाइये और सुखी जीवन बिताइये।'' फिर उन्होंने उन्हें सादर भेजा।

वेताल ने यह कहानी सुनाने के बाद राजा से पूछा, ''राजन्, अब तक कूर्मगिरि राज्य से विहंग भूषण के मैत्रीपूर्ण संबंध थे, पर उसने क्यों कूर्मगिरि पर चढ़ाई की? संपन्न कूर्मगिरि को देखते हुए कहीं ईर्ष्यालु तो नहीं हो गया? अथवा जलचरों द्वारा अपनी संपदा को और बढ़ाने की आशा तो नहीं जगी? तब उनकी सहायता लेने से क्यों इनकार किया? यह उसका अविवेक नहीं तो फिर क्या है? मेरे इन संदेहों के उत्तर जानते हुए भी चुप रहोगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।''

राजा विक्रमार्क ने उसके संदेहों को दूर करते हुए कहा, ''कूर्मगिरि का दुष्ट राजा मणिधर अब तक बलहीन था, इसलिए अब तक वराहगिरि को किसी प्रकार की हानि उसने नहीं पहुँचाई। पर अब वह हथियारों को खरीद रहा था और अपने सैनिक बल को बढ़ाता जा रहा था, इसलिए हो सकता है, वह किसी भी क्षण वराहगिरि पर आक्रमण करे। दुष्ट बलवान हो तो दूसरों को सतायेगा। विहंग भूषण ने इसे भांपा और उसका अंत करने का निश्चय किया। अपनी प्रजा के क्षेम के लिए ही उसने यह क़दम उठाया। कूर्मगिरि पर आकस्मिक आक्रमण किया। विहंग भूषण नहीं चाहता था कि जलचरों के द्वारा अपनी संपदा बढ़ाऊँ। वराहगिरि और कूर्मगिरि सहज ही प्राकृतिक संपदाओं से भरे पडे थे। हिसिका और क्षीरेंद्र एक-दूसरे को बहुत चाहते थे। उनहें अलग करना उसे अमानुषिक कृत्य लगा। राजा तो वह है, जो जनता का क्षेम चाहे और हर स्थिति में उनकी रक्षा करे। विहंग भूषण धर्मनिष्ठ राजा था, इसीलिए उसने जलचरों को मुक्त किया। उसने अपना धर्म शासन कूर्मगिरि तक भी विस्तारित किया।''

राजा के मौन-भंग में सफल वेताल शव सहित गायब हो गया और पुनः पेड़ पर जा बैठा।

(आधारः श्रीवास्तव की रचना)

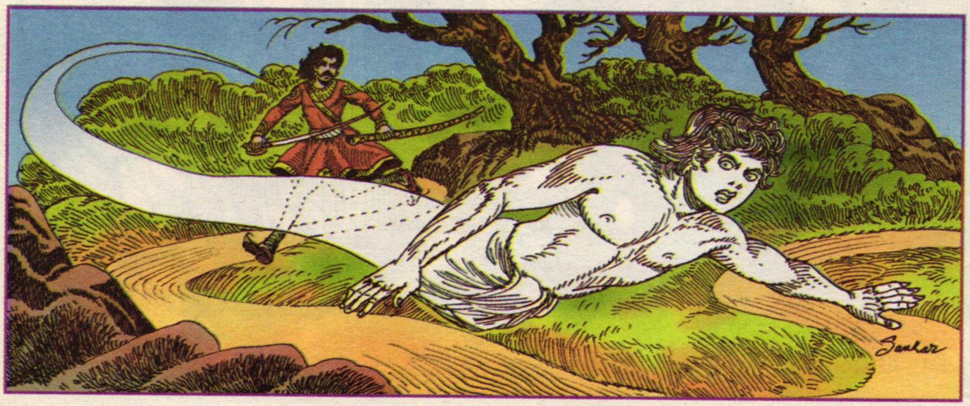

समाचार झलक

नये प्रकार का म्यूजियम

अब वाशिंटन भ्रमण करनेवालों के लिए एक और आकर्षक दर्शनीय स्थल है। इसे बस म्यूजियम कहा जाता है। इसमें प्रदर्शन की वस्तुएँ कुछ मुख्य घटनाओं से जुड़ी हुई हैं जो प्रेस में छप चुकी हैं, जैसे - वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर हवाई हमला, बर्लिन की दीवार का विध्वंस, बाल्कन्स में अमरीकी रिपोर्टर्स द्वारा इस्तेमाल की गईं बुलेट लगीं कारें तथा अन्य घटनाएँ। छः मंजिलों का यह अजायबघर भवन वास्तुकला का चकाचौंध कर देनेवाला नमूना कहा जाता है। प्रदर्श विकास की निर्देशका कैथी ट्रॉस्ट ने ११ अप्रैल को उद्घाटन पर कहा, ''यह पत्रकारिता का पूजा स्थल नहीं है। यह अजायब घर बड़ी कहानियों तथा कैसे समाचारों का समय के साथ विकास हुआ, उनके विषय में है।'' इस भवन की लागत ४५० मिलियन डॉलर है। प्रदर्शन की वस्तुएँ बीसवीं और इक्किसवीं शताब्दी से सम्बन्धित हैं।

अब भावी मकान

जिन्हें विश्व प्रसिद्ध डिस्नी लैण्ड देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है और जिन्होंने वहाँ की कल की दुनिया में घूम कर भविष्य की झाँकी का अनुभव किया है, वे अब हाउस ऑफ द फ्यूचर का भ्रमण कर सकते हैं जो मई में कैलिफोर्निया में उद्घाटित हो चुका है। यदि कल की दुनिया यानी टुमौरो लैण्ड में कितनी ही आश्चर्यजनक वस्तुएँ हैं- जैसे, दीवार के आकार का टी.वी.स्क्रीन, हैण्ड्स-फ्री फोन, प्लास्टिक कुर्सियाँ तथा बिजली के टूथ ब्रश, नवीनतम हाउस ऑफ फ्यूचर में, जो ४६५ वर्ग मील के प्लॉट पर १५ मिलियन डॉलर्स की लागत से बना प्लास्टिक का निवास स्थल है, भावी हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर तथा दैनिक जीवन को सरल बनाने के लिए टच स्क्रीन सिस्टम्स हैं। जब आप छिमनी की आकृति वाले भवन में प्रवेश करते हैं तब प्रकाश अपने आप व्यवस्थित हो जाता है। एक क्लोसेट, पार्टी के लिए सही ड्रेस निकाल देगा, तथा काउण्ट टॉप्स आप के मेनू के अनुसार पंसारी के सामान का चयन कर देगा।

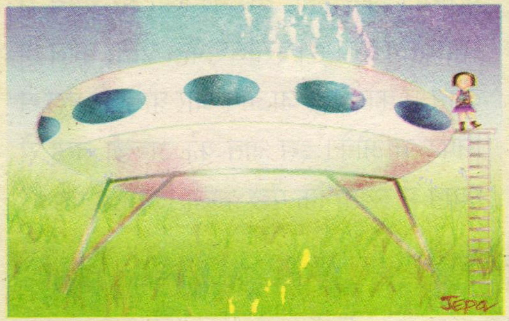

गरुड़

कश्यप प्रजापति की पत्नियाँ कद्रू और विनता समुद्र तट पर विहार कर रही थीं। अचानक विनता ने कहा, ''देखा, वह अश्व कितना सफ़ेद है'', कहती हुई उसे दूर खड़े अश्व को दिखाया।

''क्या कह रही हो? वह अश्व क्या इतना सफेद है? क्या उसकी काली पूँछ तुम्हें दिखाई नहीं दे रही है? दूर से देख नहीं पा रही हो, तुम्हारी दृष्टि शायद धुंधली हो गयी है'', कद्रू ने कहा।

''पूँछ ही नहीं, उसका पूरा शरीर धवल कांति से जगमगा रहा है'', विनता ने ज़ोर देकर कहा।

''तो क्या हम दोनों के बीच बाजी हो जाए?'' यों कद्रू ने उसे उकसाया। ''कहो तो सही, वह बाजी क्या है?'' विनता ने पूछा। ''तुम्हारे कहे अनुसार वह घोड़ा बिलकुल सफ़ेद हो तो, मैं और मेरी संतान जीवन भर तुम्हारे दास बनकर रहेंगे। यदि उसके शरीर पर धब्बा हो, तुम और तुम्हारी संतान मेरे दास बने रहेंगे। क्या तुम्हें यह मान्य है?'' कद्रू ने कहा।

''ठीक है। चलो, चलें उस घोड़े के पास'', विनता ने कहा।

''अवश्य चलेंगे, देखेंगे भी। परंतु अभी नहीं। सूर्यास्त होनेवाला है। कल सवेरे वहाँ जायेंगे'', कद्रू ने सलाह दी।

''ठीक है'', कहती हुई विनता कद्रू के साथ निवास स्थल जाने के लिए निकल पड़ी।

उस रात को कद्रू ने अपने हज़ार नाग कुमारों को बुलाया और बाजी के बारे में सविस्तार बताया। फिर कहा, यह मेरे लिए मेरे गौरव से संबंधित विषय है। इसलिए कल प्रातः काल ही तुममें से कोई वहाँ जाओगे और घोड़े की पूँछ से लिपट जाओगे। इस बात को अच्छी तरह से ध्यान में रखना कि पूँछ काली दिखायी पड़े।''

पौराणिक युवा नायक - ६

नाग कुमारों ने इसका विरोध किया और कहा, ''यह धर्म विरुद्ध है।'' पर माता के शाप से डरकर कर्कोटक नामक पुत्र ने यह काम करने के लिए अपनी सहमति दे दी।

दूसरे दिन प्रात:काल ही कर्कोटक उस घोड़े के पास गया। साँप के लिपट जाने से घोड़े की पूँछ काली दिखायी देने लगी। विनता ने अपनी हार मान ली और वचन के अनुसार कद्रू की दासी हो गयी।

बाद विनता-कश्यप ने गरुड़ को जन्म दिया। गर्भ से जैसे ही वह बाहर आया, आकाश की ओर उड़ा और तेज़ी से वापस आकर माँ को प्रणाम किया। माता के वचन के अनुसार वह कद्रू व उसके पुत्रों की दासता करने लगा।

एक बार जब गरुड़ नागों को अपनी पीठ पर चढ़ाकर आकाश में उड़ रहा था, तब नाग गर्मी को सह नहीं पाये और नीचे गिर गये। इसपर कद्रू ने उसे कोसा।

चिंतित गरुड़ माँ के पास गया और कहा, ''पर्वतों को भी पीसकर आटा बनाने की शक्ति मुझमें भरी पड़ी है। तो उसके पुत्रों का सेवक मैं क्यों बना रहूँ, उनकी दासता मैं क्यों करूँ? तुम क्यों उनकी दासी बन गयी हो?'' कद्रू के हाथों बाजी में हारी विनता ने वह वृत्तांत बताया और कहा, ''मुझसे बड़ी गलती हो गयी, जिसके कारण मैं ही नहीं तुम भी अनेक कष्ट सह रहे हो। मेरी गलती क्षमा के योग्य नहीं है।'' उसने अपनी वेदना व्यक्त की।

गरुड़ कद्रू के पास गया और कहा, ''मुझे और मेरी माता को अपना दास बनाये रखना आप को शोभा नहीं देता। कृपया हमें इस दासता से मुक्त कीजिये।'' इसपर कद्रू ने कहा, ''तुम अगर अमृत लाकर मुझे दोगे तो मैं तुम सबको इस दासता से मुक्त कर दूँगी।''

गरुड़ ने उसकी शर्त मान ली और माता का आशीर्वाद पाकर, देवलोक के लिए निकल पड़ा। मार्ग मध्य में उसे कितनी ही रुकावटों का सामना करना पड़ा, पर निर्भीक होकर वह देवलोक पहुँचा। उसकी मातृभक्ति व लक्ष्य सिद्धि पर प्रसन्न होकर ब्रह्मदेव ने उसे आशीर्वाद दिया और अमृत प्राप्त करने का उपाय बताया।

देवलोक में अनेक देवता अमृत कलश की रक्षा कर रहे थे। अमृत कलश के चारों ओर भभकती

अग्नि थी। उसपर एक चक्र घूमता रहता था। उस कलश की रक्षा दो महासर्प कर रहे थे।

गरुड़ ने अमृत रक्षकों से घोर युद्ध किया और उन्हें वहाँ से हटाने में सफ़ल हुआ। ब्रह्मा के कहे अनुसार पर्वत भर का मक्खन उस अग्नि पर रखा और उसे पिघलाया। सूक्ष्म रूप में बड़ी ही सतर्कता के साथ चक्र के नीचे घुस गया और महासर्पों को मारकर, अमृत कलश को लिये, भूलोक की ओर जाने लगा।

यह विषय जानकर इंद्र क्रोधित हो उठा और उसपर वज्रायुध का प्रयोग किया। गरुड़ नहीं चाहता था कि ऐसे आयुध का अपमान हो, इसलिए जैसे ही आयुध ने उसके शरीर का स्पर्श किया, उसने अपने एक पंख मात्र को नीचे गिराया। इंद्र को यह जानने में देर नहीं लगी कि उससे युद्ध करना और जीतना असाध्य कार्य है। तो उसने उससे समझौता कर लिया और चाहा कि यह अमृत किसी को दिया न जाए।

"मेरी माता को दासता से छुटकारा दिलाने के लिए, कद्रू की संतान को यह अमृत देने जा रहा हूँ और यह अनिवार्य है। पर, इसे वे पियें, इससे पहले ही इसे ले आऊँगा", गरुड़ ने कहा।

उसी प्रकार वह अमृत कलश को ले गया और उसे कद्रू के पुत्रों के सामने रखा। कद्रू ने घोषणा की कि अब उसकी माता दासी नहीं है। नाग कुमार अमृत पियें, इसके पहले वह कलश को लेकर स्वर्ग लोक पहुँचा। उसके साहस, शक्ति तथा सामर्थ्य की प्रशंसा सब देवताओं ने की।

जन्म से ही अति पराक्रमी गरुड़ माता को दासता से विमुक्त करने के लिए अमृत कलश को भूलोक में ले आया और जैसे ही यह कार्य पूर्ण हुआ, उसे वापस लाकर देवताओं को समर्पित कर दिया।

गरुड़ धर्म और कर्तव्यनिष्ठ था। इसीलिये उसने दुष्टों का संहार किया और शिष्टों की रक्षा की। तीनों लोकों के स्वामी परमात्मा विष्णु भगवान का वाहन बन पाये। अत्यन्त शक्तिशाली होने कारण इन्हें पक्षिराज भी कहा जाता है। स्वयं भगवान के वाहन होने के कारण इनकी महिमा किसी देव से कम नहीं है जिसकी चर्चा गरुड़ पुराण में की गई है। रामायण में इनका विशिष्ट स्थान है।

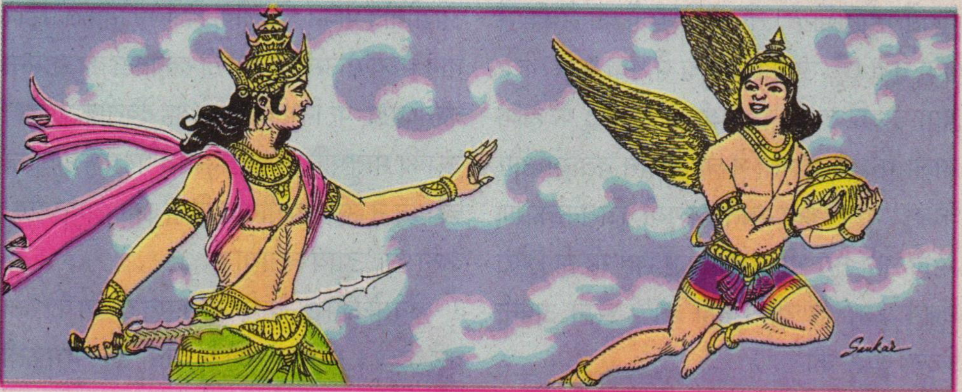

समाचार पत्र के पाठक

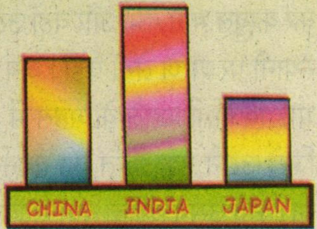

वर्ल्ड एसोसियेशन ऑफ न्यूजपेपर्स (वान) द्वारा जून में जारी की गई एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में प्रतिदिन मुद्रित समाचार पत्रों की संख्या ९९,०००,००० प्रतियाँ है जो चीन के बाद, जहाँ प्रतिदिन १०७,०००,००० प्रतियाँ छपती हैं, दूसरे स्थान पर है। जापान का स्थान तीसरा है जहाँ ६८,०००,००० प्रतियाँ प्रतिदिन मुद्रित होती हैं। अमरीका में इसकी संख्या ५०,०००,००० से कुछ ऊपर है। केवल सन् २००७ में भारत में मुद्रित प्रतियों में ११.२ प्रतिशत की वृद्धि हुई। उसी वर्ष विश्व भर में केवल २.५७ प्रतिशत की बढ़ोतरी देखी गई। विश्व भर में सबसे अधिक बिकनेवाले १०० समाचार पत्रों में से लगभग ७४ समाचार पत्र भारत, चीन तथा जापान से प्रकाशित होते हैं।

अब इस्पात में

केरल के स्नेक बोट प्रसिद्ध हैं। परम्परागत स्नेक बोट में लगभग १२० व्यक्तियों का कर्मीदल होता है, जिसमें चियर लीडर्स शामिल हैं जो खेवैयों को तालबद्ध रखने में तथा गति बनाये रखने में मदद के लिए गीत गाते हैं। बेशक ये स्नेक बोट एक खास तरह के काष्ठ से बने होते हैं जिसके तख्तों को एक साथ मिलाने से पहले एक विशेष प्रक्रिया से निकाला जाता है। वृक्षों को बचाने की दृष्टि से काष्ठ से भिन्न पदार्थ से इन बोटों को बनाने का प्रयास किया जा रहा है। एरिज मेरिन तथा इंजीनियरिंग सर्विसेज ने सफलतापूर्वक इस्पात के साथ बनाने का प्रयोग किया है। उनका १४३ फुट लम्बा बोट ऐरिज 'चन्दन' १४० कर्मीदल ले सकता है। गति के अलावा इसके परीक्षण से यह भी सुनिश्चित पाया गया कि इसके डूबने का खतरा नहीं है।

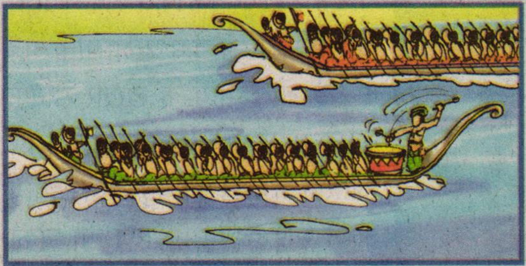

महान पुरुषों के जीवन की झाँकियाँ - ३५

भावी सम्राट के जीवन का पहला जोखिम

जैसा कि सुविदित है, भारत के मुगल शासकों में सर्वाधिक विख्यात अकबर था (१५४२-१६०५)। उसका पिता, हुमायूँ शेरशाह से हार कर काबुल भाग गया और वहाँ उसे अलग-अलग स्थानों पर शरण लेनी पड़ी। जब वह अपने छोटे भाई मिर्जा हिण्डाल के महल में ठहरा हुआ था, जिसे उसने एक प्रान्त का गवर्नर नियुक्त किया था, तभी उसने हमीदा बानू से विवाह कर लिया। उसने अमरकोट के शासक के किले में अकबर को जन्म दिया।

हुमायूँ ने शेरशाह से साम्राज्य वापस लेने के अनेक प्रयास किये पर कोई फल न निकला। उसे नई रणनीति बनानी थी और अपने तथा अपनी बीवी हमीदा बानू के लिए अल्पकालिक शरण की तलाश करनी थी, जो इसके साथ थी, इसलिए उसने अकबर को एक स्वामिभक्त नर्स महम अंगा के पास छोड़ दिया।

चार वर्ष की आयु में अकबर, हुमायूँ के एक अन्य भाई कामरान के साथ था। जब कामरान को खबर मिली कि हुमायूँ काबुल की सरहद पर लड़ाई में मारा गया, तो उसने तुरन्त हालात का फायदा उठाने का फैसला किया। उसने अपने को हिन्दुस्तान का बादशाह घोषित कर दिया और अकबर को कैद कर लिया।

खैर, हुमायूँ केवल थोड़े दिनों के लिए ही असमर्थ हो गया था और शीघ्र ही वह फिर से अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने को तैयार था। परन्तु शेरशाह के अलावा, कामरान अब उसका एक नया शत्रु बन गया था। पहले उसे वह दबाना चाहता था।

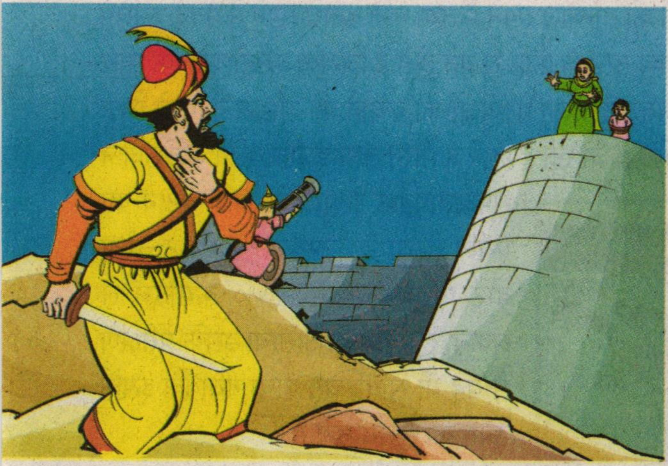

हुमायूँ की सेना ने कामरान के किले पर आक्रमण कर दिया। कामरान ने अपने किले के सामने एक मजबूत सुरक्षा पंक्ति खड़ी कर दी थी जिससे हुमायूँ के सैनिक बहुत देर तक किले के पास पहुँच नहीं पाये। पर अन्त में सुरक्षा पंक्ति तोड़ दी गई और हुमायूँ के खूंखार सैनिक अपने आगे एक विशाल तोप लिये कामरान के महल तक पहुँच गये। हुमायूँ अपने भाई के साथ धीरज खो चुका

था। उसने किले के टावर को पहले उड़ा देने का हुक्म दिया। तोप को बारुद के साथ उसी दिशा में लगा दिया गया। जैसे ही तोप को तोपची दागनेवाला था कि हुमायूँ ने एक विचित्र दृश्य देखा। टावर के साथ एक बच्चा बंधा हुआ था और एक स्त्री हाथ हिला कर तोप दागने से मना करने का संकेत दे रही थी।

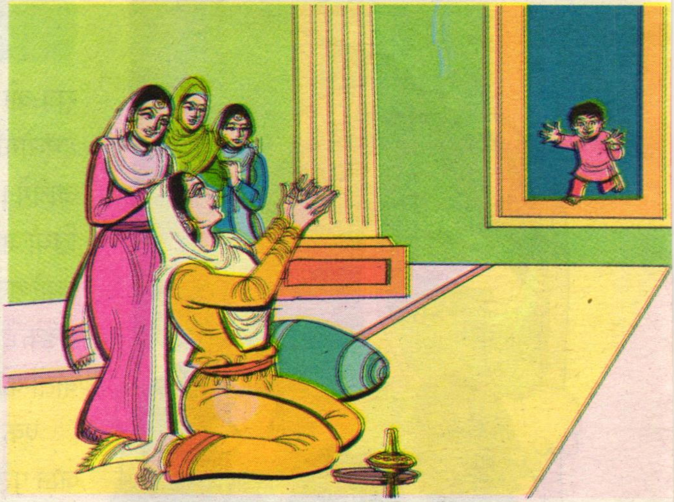

ठीक समय पर हुमायूँ तोप की दिशा बदलने में कामयाब हो गया और टावर के स्थान पर आग के गोलों से प्राचीर नष्ट हो गया। कामरान को मुँहकी खानी पड़ी और वह बचकर भाग गया। किला पर हुमायूँ का अधिकार हो गया।

टावर के साथ बँधा हुआ बच्चा और कोई नहीं, भावी सम्राट अकबर था। जो स्त्री हिम्मत के साथ जोखिम लेकर संकेत कर रही थी वह महम अंगा थी। उसने अकबर के साथ-साथ किले के सभी निवासियों को बचा लिया।

हमीदा बानू अपने बेटे को एक वर्ष की उम्र में ही महम अंगा को सौंप कर चली गई थी। फिर भी, कहा जाता है, अकबर अनेक स्त्रियों के बीच में बैठी अपनी माँ की गोद में जाकर बैठ गया।

दुर्जेय शेरशाह की मौत के बाद हुमायूँ के लिए हिन्दुस्तान की बादशाहत लेना आसान हो गया। अब वह अपना अधिक समय साहित्य और कला के अध्ययन में लगाने लगा। एक दिन शाम को सबसे ऊपर की सीढ़ी से गिर कर बुरी तरह घायल हो गया। उसका बुद्धिमान मंत्री बैरम खाँन तब पानीपत में था। उसे गुप्त रूप से सूचना भेजी गई कि हुमायूँ के बचने की कोई आशा नहीं है। वह तुरन्त दिल्ली आ गया। उसने हुमायूँ का पुतला बनाकर अकबर का राजतिलक कर दिया और उसे बादशाह घोषित कर दिया। उसके बाद ही हुमायूँ की मौत की खबर दी गई। इस प्रकार बैरम खाँ ने किसी और महत्वाकांक्षी द्वारा गद्दी हड़पने की कोशिश को रोक दिया।

अकबर तब १४ वर्ष का था। लेकिन वक्त के साथ बैरम खाँ के विश्वास के सर्वथा योग्य उसने अपने आप को साबित कर दिया। यद्यपि कुछ वर्षों के पश्चात वे दोनों अलग-अलग हो गये। ***- एम डी***

Exclusively for Chandamama Readers!

Do you want to be a whiz kid? SIP Academy has a lot of cool programmes, like an International Art Programme, International Abacus and Brain Gym. Enrol TODAY at any one of 455 centres across India and get 15% off!

बुद्धि का एक घड़ा

राजा वीर सिंह एक जागीर का मालिक था। उसने तुरन्त मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली। वह मुगलों के अधीन सन्तुष्ट था, क्योंकि इससे उसकी जागीर में शान्ति बनी रही। आम आदमी सब समय शान्ति, सुरक्षा और रोजी-रोटी कमाने का साधन चाहता है।

परन्तु कुछ ऐसे नौजवान थे जिन्हें यह पसन्द नहीं था। दुनियादारी के मामलों में राजा बुद्धिमान था, इसलिए उनके विरुद्ध कोई कार्रवाई नहीं की। बल्कि जब भी उन्होंने पूरी स्वाधीनता की समस्या उठाई, राजा ने उन्हें समझाया। उन्होंने कहा, ''मुझे भी स्वाधीनता उतनी ही पसन्द है, जितनी सब को। परन्तु मुगलों के साथ उलझने के लिए हमलोगों के पास साधन नहीं है। हम परास्त हो जायेंगे। हम में से अधिकतर लोगों को कैद कर लिया जायेगा। कुछ लोगों को फाँसी दे दी जायेगी। हमारे राज्य के कोने-कोने में स्कूल, अस्पताल तथा सड़कें हैं। और हमें क्या चाहिये?'' वे नौजवान इन बातों को सुनकर प्रायः शान्त हो जाते थे।

एक अवसर पर कुछ युवक कुछ अधिक जिद्दी जान पड़े। एक ने कहा, ''बुद्धिमान असम्भव को सम्भव कर देते हैं।''

''काश! हमारे पास काफी बुद्धिमान लोग होते!'' राजा ने अफसोस जाहिर की।

''हमलोगों के पास हैं,'' युवक ने कहा।

''मैं जानता हूँ। लेकिन मैं यह भी जानता हूँ कि अकबर के दरबार में दुनिया में किसी स्थान की अपेक्षा अधिक बुद्धिमान लोग हैं।'' राजा ने तर्क दिया, ''मैं यह जानने के लिए कि क्या हम मुगल दरबार के लोगों की बुद्धि का मुकाबला कर सकते हैं, तुम्हारे मन के मुताबिक कोई भी परीक्षा करने को तैयार हूँ।'' राजा शान्त और स्थिरचित्त बने रहे।

युवकों ने कहा कि वे मुगलों की बुद्धि की जाँच करने की एक योजना के साथ जल्दी ही लौट कर आयेंगे। राजा ने सिर हिलाया। युवक अभिवादन करके लौट गये।

एक सप्ताह के बाद एक युवक राजा से मिला। उसने सलाह दी कि राजा मुगल दरबार से बुद्धि का एक घड़ा भेजने का अनुरोध करें।

"बुद्धि का एक घड़ा? क्या बुद्धि घड़े में रखी जा सकती है?" राजा ने ऊँची आवाज में कहा।

"क्या आप समझते हैं कि यह असम्भव है, महाराज?"

"निस्सन्देह, यह असम्भव है।"

"क्या सच्चा बुद्धिमान वही नहीं है जो असम्भव को सम्भव कर दे?" युवक ने पिछली मुलाकात का सन्देश दुहराया और फिर कहा, "यदि मुगल दरबार ने सही उत्तर दिया तो हम अपनी माँग छोड़ देंगे।"

"इसमें मुझे कोई परेशानी नहीं है। किन्तु मुझे यह डर है कि मुगल दरबार के बुद्धिमान लोगों को हमारी योजना के पीछे सन्देह हो सकता है। वे हमें करारा जवाब दे सकते हैं। दरबार मुगल दरबारियों की बुद्धि की जाँच करने के लिए माफीनामा मांग सकता है और अर्थ दण्ड भी दे सकता है।" राजा जल्दबाजी में कोई काम नहीं करता था।

"सफलता उनके चरण चूमती है जो हिम्मत करते हैं और कर गुजरते हैं...," युवक ने तीखे स्वर में कहा।

"यदि वह जानता है कि सफलता की काफी सम्भावना है तो," राजा ने हस्तक्षेप किया।

"महाराज, इसे जाँच करके देखें, मेरी प्रार्थना है। खोने के भय से हमें कायर नहीं बनना चाहिये," युवक ने नम्र भाव से पूछा।

"ऐसा नहीं होगा," राजा ने युवक को आश्वासन के साथ भेज दिया।

राजा ने बादशाह के लिए कुछ उपहार के साथ मुगल दरबार में एक दूत भेजा। दूत ने दरबार में प्रवेश किया। दरबारी भी मौजूद थे। दूत ने बादशाह को झुककर सलाम किया, सिंहासन की सीढ़ियों के सबसे निचले सोपान पर तोहफों को रख दिया और खड़ा होकर बादशाह की नजर का इन्तजार करने लगा।

"राजा वीर सिंह सकुशल तो हैं!"

"आलमपनाह, हमारे राजा आप के संरक्षण में सुखी हैं, इसलिए उनके लिए चिन्ता का कोई कारण नहीं है।" दूत कूटनीतिक कला और नीति में कुशल था।

"उपहार के लिए राजा वीरसिंह को मेरी शुक्रिया कहना," बादशाह सिंहासन पर पीठ टिका कर आराम से बैठ गये, फिर बोले, "क्या राजा को हमलोगों से और कुछ काम है?"

"आलमपनाह, बुद्धिमानों की विशिष्ट मंडली आप के दरबार की शोभा बढ़ाती है। इसलिए यदि आप की कृपा हो तो राजा को बुद्धि के एक घड़े की जरूरत है।" दूत ने इस अनुरोध को इस प्रकार

प्रस्तुत किया मानों यह सामान्य बात है और इसमें कुछ भी असाधारण नहीं है।

घड़ों में अनेक वस्तुएँ रखी जाती हैं। परन्तु बुद्धि ! किसी ने घड़े में बुद्धि के बारे में नहीं सुना। बुद्धिमान इसे अपने सिरों में रखते हैं, घड़ों में नहीं।

बादशाह इससे परेशान नहीं हुए। उन्हें पूरा विश्वास था कि उनके दरबार के बुद्धिमान लोग बता देंगे कि बुद्धि का घड़ा कैसे ला सकते हैं। इसलिए उसने दूत को कह दिया कि वे राजा के पास एक महीने के अन्दर एक बुद्धि का घड़ा भेज देंगे।

''आप कितने उदार हैं, आलमपनाह! मेरे राजा आप के सेवक और जागीरदार के रूप में बहुत खुश हैं। वे कहते हैं कि आप जैसे महाराजा को पाकर वे धन्य हैं। दूत ने झुक कर अपने सिर से जमीन को स्पर्श किया और बादशाह से विदा ली।

''राजा के अनुरोध के बारे में सुना?'' बादशाह दरबारियों की तरफ मुड़े।

''वह असम्भव की माँग कर रहा है,'' सबसे पुराने दरबारी ने कहा।

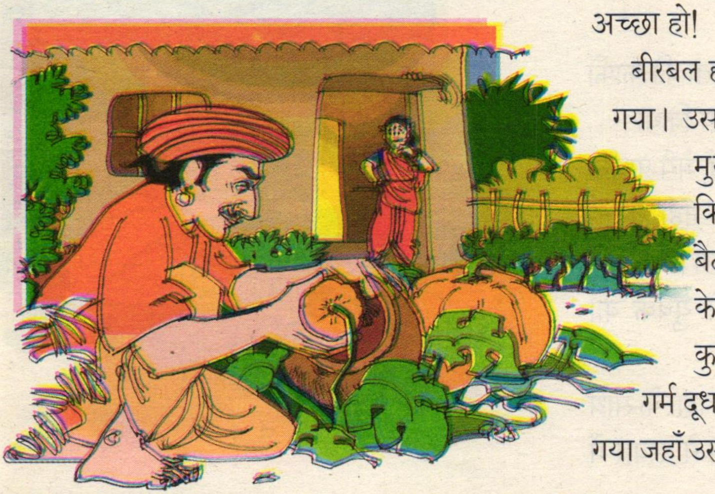

''तब इसे सम्भव बनाओ,'' बादशाह ने उसे एक तीखी झिड़की से चुप कर दिया।

दरबारियों ने अपने सिर झुका लिये। वे जान गये कि बादशाह गुस्से में हैं और गुस्सा उतरने में समय लगेगा।

''शहनशाह!'' बीरबल की धीमी आवाज सुनकर सब की नजरें उसकी ओर उठ गईं। ''मुझे १५ दिनों का मोहलत दीजिये। मैं घड़ा भर बुद्धि तैयार रखूँगा।''

''ठीक है।''

''शहनशाह! क्या मैंने कभी आप को निराश किया है?''

''अल्लाह को शुक्रिया! कम से कम एक सच्चा बुद्धिमान मेरे दरबार में है।'' बादशाह ने अन्य दरबारियों पर नफरत से एक निगाह डाली, ''उल्लू के पट्ठे हैं सब!''

एक दरबारी भी कुछ न बोला। पर सब के सब ने अपमानित महसूस किया। सबने चाहा कि बीरबल को बुद्धि का घड़ा न मिले तो कितना अच्छा हो!

बीरबल हर रोज की अपेक्षा जल्दी घर चला गया। उसकी पत्नी दरवाजे पर थी। उसने मुस्कान के साथ उसका स्वागत किया। बीरबल उसके पास कुछ देर बैठा और उससे कुछ मामूली चीजों के बारे में बातें करता रहा। पत्नी ने कुछ खाने को नाश्ता और पीने के लिए गर्म दूध दिया। फिर वह अपने पिछवाड़े में गया जहाँ उसने कुछ सब्जियाँ उगाई थीं। उसकी

नजर एक लता पर पड़ी जिसमें मोटे-मोटे काशी फल लगे थे।

अचानक उसकी आँखों में एक चमक आ गई और होठों पर एक अद्‌भुत खुशी की मुस्कान फैल गई जब उसने मटर के दाने के बराबर एक भतिया काशीफल देखा। यह भी १५-२० दिनों में उतना ही बड़ा और मोटा हो जायेगा। उसने सोचा। वह अपने भाग्य पर इतराता घर के अन्दर गया और एक बड़े घड़े के साथ लौटा। उसने सावधानी से भतिया काशीफल के साथ लता को उठाया और घड़े में डाल दिया। ऐसा दिखाई पड़ता था जैसे लता घड़े के मुँह के एक किनारे से भतिया के साथ अन्दर गई और दूसरे किनारे से बाहर आ गई।

''इससे काम बन जायेगा,'' बीरबल ने मुस्कुराते हुए अपने आप से कहा। उसने पत्नी को सावधान करते हुए कहा कि वह किसी भी हालत में घड़े को न छेड़े। माली को भी कड़ी हिदायत दे दी गई। बीरबल हर रोज घड़े पर नजर रखने लगा। दस दिनों के बाद काशीफल घड़े के अन्दर काफी बड़ा हो चुका था। यदि वैसे ही बढ़ने दिया जाता तो घड़ा टूट जाता। इसलिए उसने रसोईघर से चाकू लाकर लता को दोनों ओर से काट दिया। उसने घड़े पर ढक्कन रख कर उसे सीलबन्द कर दिया और फिर राज दरबार में ले गया।

''शहनशाह! बुद्धि का घड़ा यह रहा। इसे राजा वीर सिंह के पास एक घुड़सवार द्वारा भेज दीजिये, जिससे कल तक वहाँ पहुँच जाये।''

अपने भारत को जानो प्रश्नोत्तरी

इस महीने की प्रश्नोत्तरी इतिहास के कुछ व्यक्तित्वों तथा वक्त के लमहों की याद ताजी कर देती है।

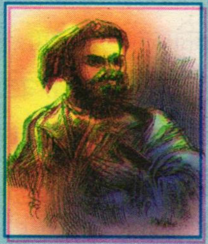

१. भारत का प्रथम पुर्तगाली वायसराय कौन था?

२. किस अंग्रेज़ ने सम्राट जहाँगीर से व्यापार का अधिकार प्राप्त किया था?

३. किस भारतीय शासक ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए अपने पुत्र और पुत्री को लंका (अब श्रीलंका) भेजा था?

४. वह फारसी राजा कौन था जो भारत पर आक्रमण कर प्रसिद्ध मयूर सिंहासन ले गया?

५. भारत पर दूसरा मंगोल आक्रमण १३९८ में हुआ। आक्रामक कौन था?

६. औरंगजेब ने अपनी गैर मुस्लिम प्रजा पर एक टैक्स लगाया। टैक्स का नाम क्या था?

७. भारत को स्वाधीनता मिलने के बाद यहाँ का गवर्नर जनरल कौन था?

८. जब स्वाधीनता की पहली लड़ाई हुई तो उस समय मुगल बादशाह कौन था?

९. मार्को पोलो भारत कब आया?

१०. भारत का प्रथम महिला शासक कौन था?

(उत्तर पृष्ठ ७४ पर)

''क्या तुम्हें निश्चित रूप से विश्वास है कि इसमें बुद्धि है?''

''हाँ, आलमपनाह! राजा को यह सन्देश भेज दीजिये कि वह घड़े के अन्दर की वस्तु को उसी हालत में सही सलामत घड़े को नष्ट किये बिना बाहर निकाले और घड़े को उसी मौलिक अवस्था में लौटा दे। यदि वह ऐसा न कर सके तो उसे घड़े की कीमत देनी पड़ेगी...दस हजार मोहरें।''

''मिट्टी के एक घड़े के लिए?''

''क्योंकि यह अमूल्य है और इसके अन्दर बुद्धि है,'' बीरबल मुस्कुराया।

बादशाह जान गये कि इसमें कुछ और राज छिपा है जिसे बीरबल ने पूरी तरह नहीं खोला है। खैर, राजा के पास बुद्धि का घड़ा भेजने के बाद वह इसे मालूम कर लेगा, उसने सोचा।

''अब बताओ बीरबल, तुम्हारी योजना क्या है?''

बीरबल ने पहले समझाया कि उसने घड़े में क्या किया है। ''राजा काशीफल को बिना कुचले या काटे या बिना घड़े को तोड़े बाहर नहीं निकाल सकता। उसे इन दो चीजों से बचने के लिए कहा गया है।'' बीरबल दाँत निपोरता हुआ बोला।

''तुम बड़े चतुर बदमाश हो।'' बादशाह अकबर ने शाबाशी दी।

राजा को घड़ा मिला। उसने दोनों शर्त्तें सुनीं। उसने घड़े के अन्दर एक काशीफल देखा। वह इसे बिना चीर फाड़ किये बाहर नहीं निकाल सका। घड़े को तोड़ नहीं सकता था। उसमें अब ज्ञान का नेत्र खुला। उसने हजम करने से अधिक खा लिया था। उसने युवकों को बुला कर विस्तार से समझाया और घड़े को दिखाया तथा बादशाह की शर्त्तें सुनाईं।

''मैंने तुम्हारी बात मान ली। अब और कठिन परिश्रम के लिए तैयार हो जाओ तथा बादशाह द्वारा मांगे गये दस हजार मोहरों की क्षति को पूरा करो।'' राजा ने यह कह कर उन्हें भेज दिया।

राजा के प्रतिनिधि ने मुगल दरबार में दस हजार मोहरों से भरे दस थैले पेश किये।

''शाही खजाने में दस हजार मोहरों की बढ़त हुई है'', बीरबल ने स्मरण दिलाया।

''तुम आधा ले लो,'' बादशाह ने अट्टहास किया।

- आर.के. मूर्ति

तमिलनाडु की एक लोक कथा

कविता का वजन

रामादोरई दक्षिण भारत में एक छोटे राज्य का शासक था। वह केवल वीर ही नहीं था, बल्कि वह कठिन परिश्रमी और साहसी भी था। उसका एक मात्र लक्ष्य था अपने राज्य का विस्तार। इसलिए कला और साहित्य को प्रोत्साहित करने के लिए उसके पास समय नहीं था। उसके विचार में कविता लिखना और उसका पाठ करना समय नष्ट करना था।

अनेक कवियों को उसके द्वारा अपमानित होना पड़ा। जब भी कोई कवि उसके दरबार में कविता सुनाने के लिए आता, वह उसका स्वागत तो करता और उसकी कविता का पाठ भी सुनता था। फिर वह उसे इनाम देना चाहता था। वह एक तराजू मँगवाता और एक पलड़े पर कवि को अपनी कविताओं के कागज़ों को रखने के लिए कहता और दूसरे पलड़े पर कागजों के वजन के बराबर सोना रखवाता। फिर वह कवि को अपनी कविता के कागज़ों तथा उसके वजन के बराबर सोना को ले जाने के लिए कहता था। कोई भी कल्पना कर सकता है कि कागज़ों के बराबर कितना सोना चढ़ता होगा!

बहुत दिनों तक रामादोरई के दरबार में कोई कवि नहीं आया। वास्तव में, कविता लिखनेवालों ने कविता लिखना बन्द कर दिया, क्योंकि उन लोगों ने महसूस किया कि साहित्य-साधना से उनकी जीविका नहीं चलेगी। जीविकोपार्जन के लिए वे कुछ और काम करने लगे। क्रमशः राज्य में कोई साहित्यकार न रहा जिसकी रचना को सोने से तौला जा सके।

राज्य के एक दूरवर्ती गाँव में वरप्रसाद नाम का एक व्यक्ति था जो बच्चों को पढ़ाने, गाँव की सेवा करने तथा मन्दिर में पूजा-पाठ करने में अपना अधिक समय लगाता था। वह कविताएँ और गीत लिखता था और ग्रामीणों को सुनाता था, जो इसकी कविताएँ सुनकर बहुत आनन्दित होते थे।

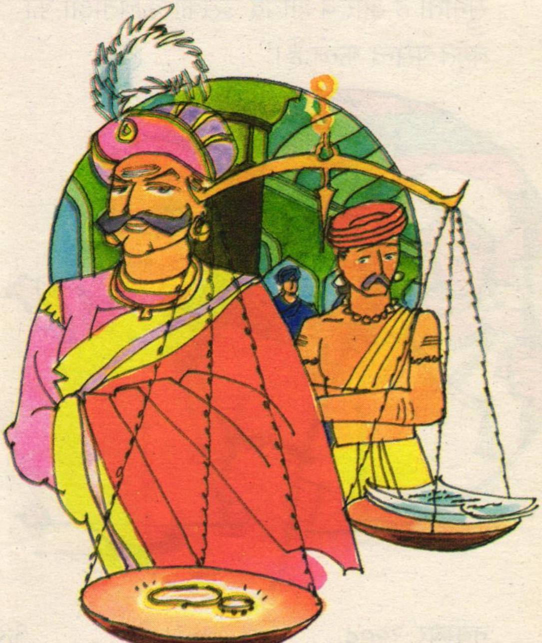

वह अपनी कविताओं द्वारा धन अर्जित करना कभी नहीं चाहता था। उसके मित्र तथा प्रशंसक उसे रामादोरई के दरबार में जाकर अपनी कुछ श्रेष्ठ कविताएँ सुनाने के लिए प्रेरित करते थे लेकिन वह स्पष्ट रूप से कह देता था कि वह अपनी कविताएँ ऐसे व्यक्ति को सुनाना नहीं चाहता जो कवियों को अपमानित करने के लिए कुख्यात है।

एक दिन दरबार लेते समय रामादोरई ने अपना विचार प्रकट करते हुए कहा, ''मैं समझता हूँ कि मेरे राज्य ने सफलतापूर्वक उन मूर्खों को निकाल दिया है जो बड़े-बड़े कवि होने का दावा करते थे! अच्छा हुआ, उनसे छुटकारा मिल गया!''

अनेक दरबारी उनसे सहमत थे। पर मंत्री ने संकोच करते हुए कहा, ''महाराज, वरप्रसाद नाम का एक कवि है जो अपनी कविताएँ ग्रामीणों को सुनाता है और वे शायद उसकी कविताओं को बहुत पसन्द करते हैं।''

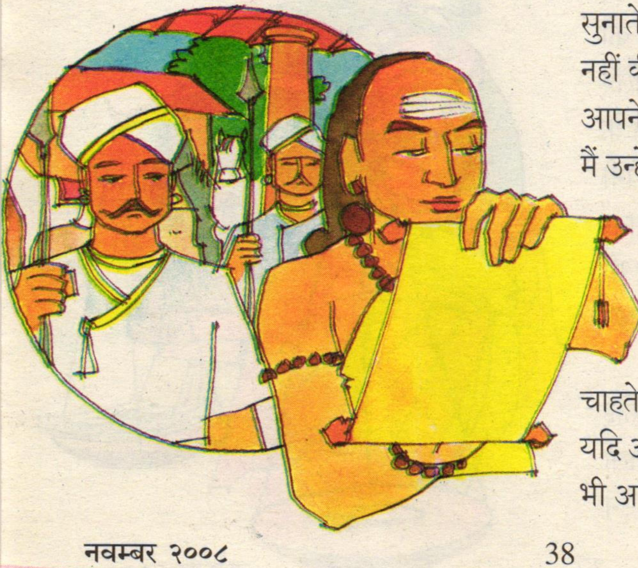

राजा को यह सुनकर मानों धक्का लगा। ''यदि वह गाँव में इतना लोकप्रिय है तो मुझे कविता सुनाने के लिए मेरे पास कभी क्यों नहीं आया?''

मंत्री ने क्षमा माँगते हुए कहा, ''यह कहने के लिए क्षमा चाहता हूँ कि लोग कहते हैं वह आप के सामने अपनी कविताएँ सुनाना नहीं चाहता।''

''क्या वह ऐसा कहता है?'' यह सुनकर वह इस तरह चिल्लाया मानों बिच्छू ने उसे डंक मारा हो। ''किसी अंगरक्षक को भेजकर उसे यहाँ बुलाओ।''

अंगरक्षकों ने वरप्रसाद को ढूँढ़ निकाला। ''महाशय, हमारे राजा आप को दरबार में बुलाते हैं। मेहरबानी करके मेरे साथ चलिये।''

वरप्रसाद को आश्चर्य हुआ, परन्तु वह राजा के क्रोध का शिकार होना नहीं चाहता था, इसलिए वह तैयार होकर अंगरक्षकों के साथ चल पड़ा। रामादोरई ने उसका स्वागत किया। ''मैंने सुना है कि आप कविताएँ लिखते हैं और ग्रामीणों को सुनाते हैं। आप ने कभी मुझे सुनाने की परवाह नहीं की। मैं आप से प्रश्न नहीं करूँगा कि क्यों आपने मुझे अपनी कविताएँ नहीं सुनाईं, लेकिन मैं उन्हें सुनना चाहता हूँ।''

अब वरप्रसाद को सचमुच बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने कुछ देर सोचा, फिर कहा, ''महाराज, आप के सेवकों ने ऐसा कुछ नहीं कहा कि आप मेरी कविताएँ सुनना चाहते हैं। इसलिए मैं अपने साथ कुछ न ला सका। यदि आप कुछ समय दें तो मैं कुछ नई कविताएँ भी आप की सेवा में प्रस्तुत करूँगा।''

रामादोरई ने पूछा, ''ठीक है! आप को कितना समय चाहिये?''

वरप्रसाद ने कहा, ''दो सप्ताह से अधिक नहीं।'' राजा के कुछ कहने से पूर्व उसने फिर कहा, ''परन्तु महाराज, मेरी एक शर्त है।''

''शर्त्त? वह क्या है?'' रामादोरई ने नाराज होते हुए पूछा।

''महाराज, मैं दरबार में कविता सुनाऊँगा, परन्तु मुझे कोई देख न सके, ऐसी व्यवस्था की जाये।'' वरप्रसाद ने कहा।

''बस, केवल यही शर्त्त है?'' राजा राहत की सांस लेता हुआ बोला। ''मुझे तुम्हारी शर्त्त मंजूर है।''

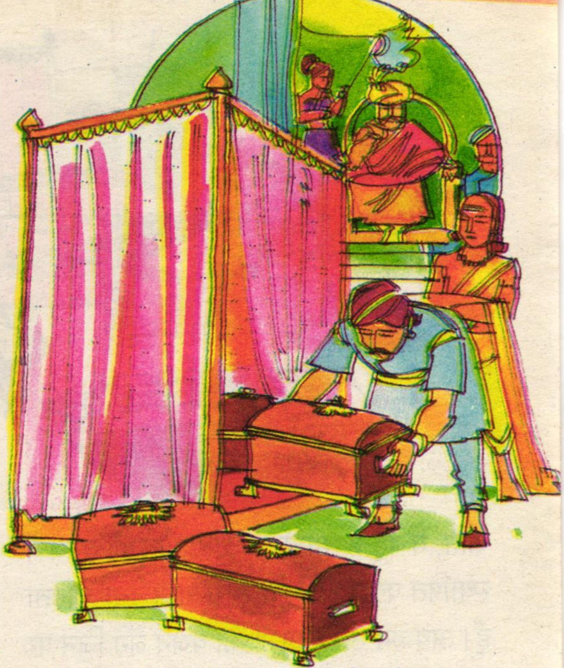

वरप्रसाद के कविता-पाठ के लिए एक दिन निश्चित किया गया। उस दिन उसके बैठने के लिए आसन के चारों ओर परदा लगाया गया। राजा, उसका मंत्री और सभी दरबारी मौजूद थे। रामादोरई ने प्रजा को भी अन्दर आने की अनुमति दे दी।

वरप्रसाद के पधारने से पहले उसके चार आदमी चार भारी पेटियों के साथ आये और उन्होंने उन पेटियों को परदों के अन्दर रख दिया। फिर वे श्रोताओं के बीच में बैठ गये। इसके बाद कवि पहुँचा। उसने राजा को झुक कर सलाम किया और पूछा, ''क्या मैं आप की आज्ञा से कविता पाठ आरम्भ करूँ?''

राजा ने सिर हिलाकर अनुमति दी। कवि परदे के अन्दर गया। दरबार में अब सूचिकापात नीरवता छा गई। शीघ्र ही कविताओं का पाठ एक के बाद एक सुरीले स्वर में सुनाई पड़ने लगा। पहली कविता राज्य के सम्मान में लिखी गई थी। इसके बाद की कविता राजा के सम्मान में गाई गई जिसमें उसके पूर्वजों के प्रसंग थे। जब श्रोताओं ने राजा को तालियाँ बजाते देखा तब दरबारियों की ओर से भी वाह! वाह! की आवाज आने लगी।

इसके बाद की कविता में रामादोरई के शासन में प्रजा की संवृद्धि तथा खुशहाली की चर्चा की गई थी। दरबार में मौजूद जनता जनार्दन ने जय जयकार किया। अन्तिम कविता में राजा, प्रजा और राज्य के लिए देवी देवताओं से आशीर्वाद की प्रार्थना की गई थी।

चारों ओर वाह वाह की गूंज के साथ वरप्रसाद परदों के पीछे से निकला और उसने झुक कर राजा का अभिवादन किया। राजा ने कहा, ''हे

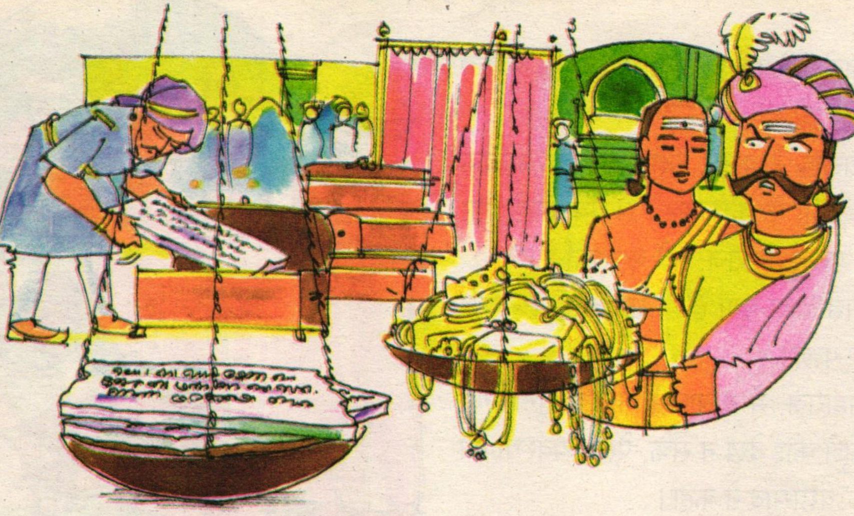

कवि, मैं बहुत प्रभावित हूँ और आप को राज्य में स्थापित परम्परा के अनुसार इनाम देना चाहता हूँ। अब हम उन कागजों का वजन लेंगे जिन पर आपने कविताएँ लिखी हैं।''

तब वरप्रसाद के चार आदमी परदे के अन्दर से चारों पेटियाँ उठाकर ले आये। वर प्रसाद ने एक पेटी खोलकर एक ग्रेनाइट पत्थर निकाला। ''महाराज, मैं अपना काव्य भावी पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखना चाहता था, इसलिए मैंने इसे पत्थरों पर खुदवाया है। आप इन्हें तौल सकते हैं।''

रामादोरई ने अनुभव किया कि उसकी धूर्तता का उसे सही उत्तर मिल गया है। लेकिन वह अपने वचन से पीछे नहीं हटेगा, उसने निश्चय किया। तराजू और सोने के सिक्के लाये गये और राजा के संकेत पर पत्थरों को सोने के मोहरों से तौला गया। तौले गये सिक्कों का ढेर लग गया।

वरप्रसाद ने राजा की ओर देखा। राजा के चेहरे पर लज्जा की अनुभूति स्पष्ट झलक रही थी। ''महाराज,'' कवि ने कहा, ''मुझे सोने का लोभ नहीं है, और न मैं अपना काव्य बेचना चाहता हूँ। कृपया ये सिक्के वापस ले लें और इन्हें जनकल्याण के उपयोग में लायें। मेरा केवल एक ही अनुरोध है। भविष्य में कवि और कविता को अपमानित न करें।''

वरप्रसाद ने एक बार फिर राजा और दरबारियों का झुक कर अभिवादन किया। फिर वह बाहर निकल आया। उसके पीछे उसके चार आदमी भी पेटियों के साथ थे।

चन्दामामा प्रश्नोत्तरी-८ सितम्बर-२००८ उत्तर :

१. हिमाचल प्रदेश की कांगड़ा तराई में; २. राजा रवि वर्मा; ३. वे आधुनिक भारतीय कला के अगुआ थे; ४. नई दिल्ली में; स्वाधीनता के पूर्व सन् १९४५ में; ५. एलिफैण्टा की गुफाओं में; ६. पल्लव वंश के राजा; ७. फ्रांसिसी वास्तुकार कॉरबुजिये; ८. फतेहपुर सिकरी।

चिरस्मरणीय ऐतिहासिक घटनाएँ-१४

वह सचमुच एक योग्य भाई था!

''वीरापांडियन को हराये बिना ब्रिटिश राज्य की स्थापना असम्भव है। केवल सैनिक शक्ति दिखा कर क्या हम उसे समर्पण करने के लिए बाध्य कर सकते हैं,'' घबराया हुआ कलक्टर जैक्सन ने कहा। किन्तु यह बहादुर योद्धा हमेशा उनके लिए चुनौती बना रहा, जो सम्भवतः दो शताब्दी पूर्व विदेशी आक्रामकों के विरुद्ध आवाज उठाने की हिम्मत करनेवाले राजकुमारों में पहला यही था। बहादुर वीरापांडियन कट्टाबोम्मन ने दुश्मन को शोले भरे शब्दों में यह करारा जवाब दिया, ''क्या विदेशी अंग्रेज़ पांचालनकुरिची के राजवंश के सरदार को डरा रहे हैं?''

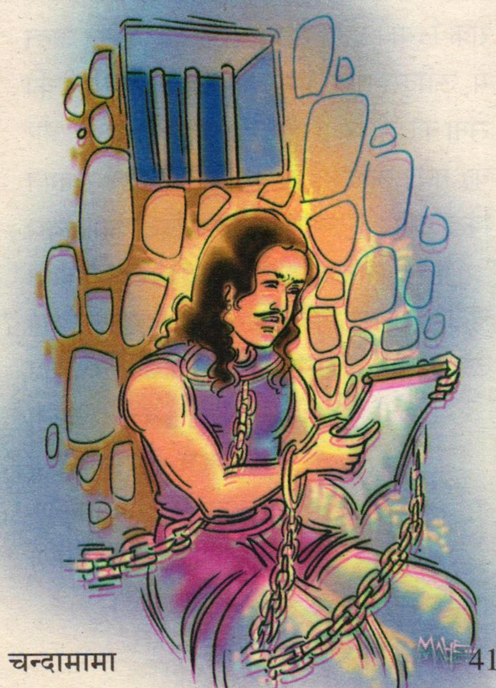

पिछले महीने आप ने पढ़ा कि उसके अपने ही देशवासियों ने इस देशभक्त के साथ छल किया और इसे अग्रेंज़ों के हाथ सौंप दिया। फाँसी से पहले वह अपने प्रिय भाई ऊमैदुरई को अंतिम बार देखना चाहता था। पर पत्थरदिल दुश्मन ने मिलने नहीं दिया। फिर भी, वीरापांडियन ने गरजते हुए निर्भीक शब्दों में कहा, ''जिसका एक भाई हो, वह शत्रु से क्यों डरेगा?'' यह कह कर वह एक वीर के समान स्वयं फाँसी पर लटक गया। वह १७ अक्तूबर १७९९ का दिन था।

सचमुच, ऊमैदुरई बहादुर और निडर था। उस छोटे राज्य के सरदार से छुटकारा पाने की खुशी से पागल शत्रु ने उसके उत्तराधिकारी को भी कैद कर लिया। आह! अंग्रेजों ने पांचालनकुरिची के किले को तहस-नहस कर दिया और उनके सैनिकों ने उसकी सारी दौलत लूट ली।

भारत के अंग्रेज़ इस बात से प्रसन्न और सन्तुष्ट थे कि एक दुःस्वप्न की तरह बड़ी मुसीबत से छुटकारा पाने में वे कामयाब हो गये।

लेकिन वे इस बात से अनजान थे कि अन्दर अन्दर विद्रोह की ज्वाला सुलग रही है। लोगों के अन्दर क्रोध उबल रहा था और अपने वीर राजा की मौत का बदला लेने के लिए वे उतावले हो रहे थे। जोश से भरे भारी संख्या में नवयुवकों ने कम्पनी के अत्याचार को खत्म करने का निश्चय

किया। पर काश! पालयमकोट्टई के किले में दुश्मन के जेल से ऊमैदुरई को वे मुक्त करा पाते! उसे लोहे के भारी जंजीरों में बाँध कर रखा गया था। क्या वह और उसके साथी कभी बच निकलने का सपना भी देख सकते थे?

डेढ़ साल गुजर गये, पर बन्दी राजकुमार ने उम्मीद नहीं छोड़ी। गुप्त दूतों के द्वारा बाहर के क्रान्तिकारियों से उसने सम्पर्क स्थापित किया और एक निश्चित योजना बनाई। इधर अब तक अपनी विजय की खुशी में अंग्रेज़ गाफिल पड़े चैन की सांस ले रहे थे।

सन् १८०१ में २ फरवरी को हर रोज की तरह सूर्योदय हुआ। अचानक, रहस्यमय ढंग से ढेर सारे फेरीवाले अलग-अलग दल बना कर पालयमकोट्टई में प्रकट हुए। वे जलावन की लकड़ी, टहनी और घास बेच रहे थे। वे सैकड़ों की संख्या में थे। वे बहुत ज्यादा दाम बता रहे थे, इसलिए किसी ने उनकी चीजें नहीं खरीदीं। जैसे वे रहस्यमय ढंग से आये थे, वैसे ही बड़ी विचित्रता के साथ वे शहर में कहीं अदृश्य हो गये। गेरुआ वस्त्र में दर्जनों साधु भी भजन गाते और भीख माँगते देखे गये। पर्यटकों के अनेक झुण्ड भी मार्ग के किनारे सरायों में आकर आराम करने लगे। किसी को उन पर न सन्देह हुआ और न किसी ने उनसे कोई प्रश्न पूछा।

शीघ्र ही शाम हो गई। मेजर मेकॉले, जो उस क्षेत्र का इनचार्ज था, स्थानीय अंग्रेज़ वासिन्दों को पार्टी दे रहा था। इसी मौके के लिए वे विचित्र यात्रीगण प्रतीक्षा में थे।

वे अचानक भयानक योद्धाओं में बदल गये। जलावन की लकड़ियों और घासों के अन्दर से पिस्तौल, बन्दूकें, भाले और तलवारें निकलीं। उन सब ने जेल पर आक्रमण कर कैदियों को मुक्त कर दिया। फिर गलियों में नारे लगाते हुए अदृश्य हो गये।

अब वे पांचालनकुरिची की ओर बढ़ रहे थे। लेकिन मार्ग में दुश्मन की एक बटालियन ने उन्हें रोक दिया। दोनों में घमासान युद्ध हुआ। अन्त में, ऊमैदुरई तथा उसके आदमियों ने कम्पनी की सेना को हरा दिया और वे अपने गन्तव्य की ओर बढ़ गये। ऊमै दुरई का समारोह के साथ स्वागत किया गया और उनका शासक घोषित किया गया।

परन्तु उनका शानदार किला खंडहर में बदल चुका था। फिर भी वह निराश नहीं हुआ। यद्यपि उसका नाम ऊमै दुरई यानी गूँगा और चुपचाप था फिर भी, बताया जाता है कि वह प्रभावशाली वक्ता था। उसके आह्वान पर लोगों ने किले का पुनर्निर्माण आरम्भ कर दिया।

इधर ऊमै दुरई के नाटकीय पलायन के कारण मेजर मेकॉले तथा उसके अफसरों में भारी भय और चिन्ता फैल गई। उन्होंने एक भारी सेना इकट्ठी की। पर पांचालनकुरिची पहुँचने पर वे शानदार नये किले को देख कर चकित रह गये। ''अद्‍भुत और अविश्वसनीय! यह शानदार निर्माण कैसे हो गया? क्या यह चमत्कार है?'' वे विश्वास नहीं कर सके।

वे नहीं जानते थे कि उनके नये शासक ने युद्ध स्तर पर नया किला बनाने के लिए लोगों में प्रेरणा और उत्साह भर दिया था। हज़ारों नागरिकों ने रातदिन काम किया था। यह जान कर अंग्रेज़ों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा कि वह भव्य किला केवल ७ दिनों में बन कर खड़ा हो गया।

इस चमत्कारपूर्ण किले को भेद कर उसमें घुसना मेजर मेकॉले और उसके अफसरों के लिए असम्भव सा लगा। उन्हें अभी भी इसके अचानक निर्माण पर सन्देह हो रहा था। उन्हें यह भी पता चला कि किले के अन्दर हजारों योद्धा दुश्मन पर टूट पड़ने के लिए तैयार हैं। इसलिए अंग्रेज़ी सेना ने पीछे हटने में अपनी भलाई समझी। सरदार के सिपाहियों ने उनका पीछा कर उन्हें खदेड़ दिया। कुछ दिनों के बाद कम्पनी की सेना और अधिक तैयारी के साथ पुनः आई। परन्तु दूसरी बार भी उन्हें भागना पड़ा। इस बार उन्हें भारी क्षति उठानी पड़ी। अपनी पूरी कोशिश के बावजूद वे किले के अन्दर घुसने में कामयाब नहीं हुए।

ब्रिटिश अधिकारी चिन्तित थे। कट्टाबोम्मन के जाने के बाद विद्रोह की ज्वाला धीरे-धीरे फैलने लगी। निर्भीक ऊमै दुरई अंग्रेज़ों के पूरे देश को अपने अधीन करने के सपने को पूरा करने में बहुत बड़ी रुकावट बन गया था। वे उसके साथ आसानी से शान्तिपूर्ण सन्धि कर सकते थे। परन्तु इसके स्थान पर उन्होंने उसे कैद करने और उसके किले को नष्ट कर देने का निश्चय किया। इसलिए इस बार एक बड़े योग्य अधिकारी कर्नल अग्नेव के नेतृत्व में शक्तिशाली तोपों और भारी पैदल सेना के साथ एक दुर्जेय दल पांचालनकुरिची के किले की ओर कूच कर गया।

शीघ्र ही सेना ने किले के चारों ओर मजबूत घेराबन्दी डाल दी। कोई न अन्दर जा सकता था, न अन्दर से बाहर आ सकता था। अंग्रेज़ों को आशा थी कि उनकी बटालियन की भारी शक्ति को देखते हुए साहसी सरदार हिम्मत हार कर घुटने टेक देगा। किन्तु समर्पण का कोई संकेत नहीं दिखाई पड़ा और ऊमै दुरई और उसका बहादुर दल चुपचाप युद्ध की तैयारी करते रहे। दुश्मन की तोपें विशाल प्राचीरों पर गरजती हुई गोले दागने लगे। दिन सप्ताहों में और सप्ताह महीनों में बदलते रहे। फिर भी किले की दानवी दीवारों में भारी गोलाबारी के

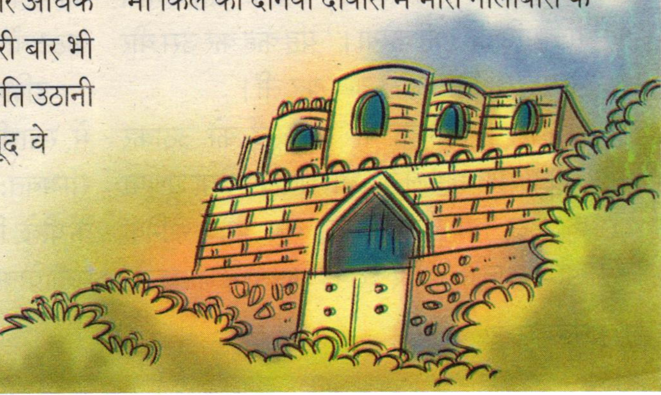

बावजूद दरार तक नहीं आई। अंग्रेज़ों की हैरानगी की सरहदें टूट गईं। इन्हें कब तक इन्तजार करना पड़ेगा? उनकी हिम्मत टूटने लगी।

किले के अन्दर भी रसद की तेजी से कमी होने लगी और लोग भूख से छटपटाने लगे। ऊमै दुरई के सामने केवल दो विकल्प थे: आत्म समर्पण या चतुराई से पलायन। उसने पलायन करने का निश्चय किया।

घोर अन्धेरी रात थी। किले के विशाल द्वार अचानक खुल गये और बन्दूकों से गोलियाँ दागते हुए और अपनी तलवारें चमकाते हुए असंख्य सैनिक सरपट घोड़े दौड़ाते हुए तेजी से बाहर निकले। दुश्मन पूरी तरह असावधान थे। फिर भी वे तुरन्त सक्रिय हो गये और निर्दयतापूर्वक बहुतों को उन्होंने कत्ल कर दिया। किन्तु ऊमै दुरई, उनका सरदार कहाँ है? क्या वह मर गया या जिन्दा है?

दूसरे दिन सुबह एक बूढ़ी औरत अपने बेटे की तलाश करती हुई आई। उसने एक पेड़ के नीचे उसे मरते हुए देखा। "माँ! मुझे बचाने का अब कोई लाभ नहीं। हमारे मालिक और राजा को जाकर बचाओ जो आगे, बुरी तरह घायल होकर, अन्तिम सांस ले रहा है, क्योंकि वही हमारी मातृभूमि की रक्षा करेगा।" यह कह कर उस वीर ने सदा के लिए आँखें बन्द कर लीं।

उस ममतामयी माँ ऊमै दुरई को उठाकर अपनी झोंपड़ी में ले गई और रातदिन सेवा शुश्रूषा कर उसे नया जीवन दिया। जब अंग्रेज सैनिक खोज-बीन करते हुए उसकी झोंपड़ी में जाने लगे, तब उसने उन्हें यह कहकर भगा दिया कि झोंपड़ी के अन्दर चेचक का एक रोगी सो रहा है। चेचक का नाम सुनते ही वे सिर पर पाँव रख कर भागे।

ऊमै दुरई स्वस्थ होकर शिवगंगा के मरुडु भाइयों के साथ मिल कर स्वाधीनता संग्राम की ज्योति को प्रज्वलित रखा। परन्तु अन्ततः वे सब पकड़ लिये गये और उन्हें मौत की सजा दी गई। यह १८०१ का वर्ष था।

फाँसी के तख्ते पर चढ़ते हुए वीरापांडियन के वचन कितने सच निकले जिसने कहा था कि जिसका एक भाई है, उसे दुश्मन से डरने की जरूरत नहीं है। सचमुच, ऊमै दुरई ने उसी उत्साह और वीरता के साथ स्वाधीनता संग्राम को वहाँ से निरन्तर जारी रखा जहाँ उसका भाई कट्टाबोम्मन छोड़ गया था।

दक्षिण के ये दोनों बहादुर देशभक्त, वास्तव में, स्वाधीनता आन्दोलन के अग्रणी नेता थे तथा सम्भवतः १८५७ के भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के पीछे, जिसे सिपाही विद्रोह कहा जाता है, बहुत बड़ी प्रेरक शक्ति थे।

- ए.के.डी.

गलती मान ली

योगपुर के राम मन्दिर का पुजारी रामांग बड़ा ही रामभक्त था। जब पुराना मन्दिर उजड़ रहा था तब उसने ग्रामाधिकारी देवन्य से विनती की कि वे मंदिर की मरम्मत कराएँ। उसने मन्दिर के राम की महिमा के बारे में विस्तृत प्रचार कराया। फलस्वरूप भक्त बड़ी संख्या में भगवान राम के दर्शन करने आने लगे।

इस कारण से मन्दिर की आमदनी में काफी वृद्धि हुई। आमदनी में से कुछ रकम ग्रामाधिकारी ने गाँव की वृद्धि के नाम पर अपने पास रख ली और शेष रकम से मंदिर की मरम्मत करवायी।

इस अवधि में रामानंद नामक एक योगी भगवान राम के दर्शन करने मंदिर आये। पुजारी ने उनका स्वागत किया और मन लगाकर उनकी परिचर्या की। योगी पुजारी की सेवाओं से बहुत ही प्रसन्न हुए और बोले, ''मेरे देह-त्याग का समय आ गया है। मेरे पास एक महिमावान अंगूठी है। उसे मैं तुम्हें दूँगा। लोगों की सेवा करना और अच्छा नाम कमाना। अगर कोई तुम्हें दुतकारे, तुम पर दोष लगाये तो तभी उसे माफ़ करना जब वह अपनी ग़लती मान ले। एक दिन के लिए छोटा सा दंड देकर उन्हें डराना। जो तुम पर दोष मढ़ते हैं, फिर अपनी ग़लती मान लेते हैं, और जब तक वे दंड पाते हैं, तब तक इस अंगूठी में महिमा होती है।'' कहते हुए उन्होंने रामांग को वह अंगूठी दी।

पुजारी ने साधु से कहा, ''मैं राम का भक्त हूँ। उन्हीं का विश्वास करता हूँ। उन्हीं की कृपा कर निर्भर रहता हूँ। इसलिए मुझे अंगूठी की ज़रूरत नहीं है। अच्छा हो प्रजा क्षेम चाहनेवाले देवन्य को अंगूठी दे दी जाए।''

रामानंद ने उसकी सिफारिश मान ली और

श्याम दत्ता

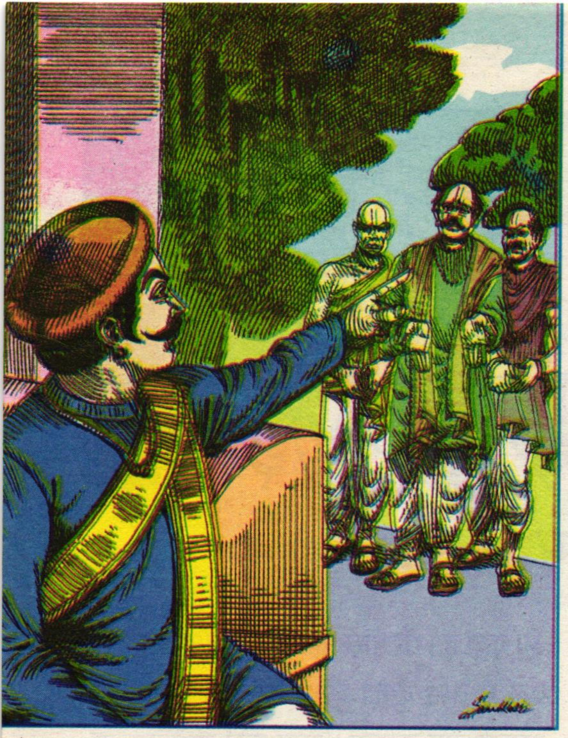

कहा, ''योग्यता के बिना अद्भुत शक्तियों को पाने से, पतन का ख़तरा है। अगर देवन्य का पतन हो तो इस अंगूठी की महिमा के खोने की जिम्मेदारी तुम पर है। इसके बाद जिसकी वजह से अद्भुत अंगूठी की महिमा खो जाती है, उसे ग्रामाधिकारी बनना होगा। अगर ऐसा नहीं हो तो देवन्य लंबे अर्से तक रोगी बनकर खाट पर ही पड़ा रहेगा।'' यों चेतावनी देकर साधु वहाँ से चले गये।

रामांग देवन्य से मिला और जो हुआ, सब कुछ बताया। बहुत ही प्रसन्न होकर देवन्य ने सब शर्तें मान लीं और उस अंगूठी को अपनी उँगली में धारण कर लिया। तब से लेकर उसने कितने ही रोगियों के रोग दूर किये। इससे गाँव भर में लोग उसकी पूजा करने लगे। भेंटों के लिए उसने एक अलग हुँडी का प्रबंध किया और तद्वारा लोगों से धन ऐंठने लगा।

क्रमशः रामालय में आनेवाले भक्तों की संख्या बढ़ती गयी। राम भक्त इससे दुखी होते तो रामांग उन्हें समझाता बुझाता। उनसे असली विषय भी बताया। भक्तों ने ठान लिया कि देवन्य के विरुद्ध प्रचार किया जाए कि भगवान से प्राप्त अद्भुत शक्तियों का वह दुरुपयोग कर रहा है।

जब यह ख़बर देवन्य तक पहुँची तब उसने उन्हें बुलाया और कहा, ''मैंने भगवान के प्रति अविश्वास प्रकट नहीं किया, मैंने उनकी पूजा-आराधना में बाधा नहीं डाली। मेरी वजह से तुम लोगों को कोई नुक़सान नहीं पहुँचा। फिर मेरा क्या दोष है? अगर आप लोग मान जाएँ कि मुझपर दोष मढ़ना ग़लत है, तो क्षमा कर दूँगा। नहीं तो दंड भुगतना होगा।''

जिस प्रथम व्यक्ति ने ग़लती स्वीकार नहीं की, उसके शरीर में पीड़ा होने लगी। दूसरे की दृष्टि धुँधली हो गयी। तीसरे का मुख विकृत हो गया। इसे देखते हुए चौथा व्यक्ति डर गया और उसने अपनी ग़लती मान ली। देवन्य ने शेष लोगों से कहा, ''कल तक दंड का अनुभव कीजिये और फिर साधारण मनुष्य बन जाइये। आगे से कभी भी मुझे दोषी बताने का दुस्साहस मत कीजिये।''

उस दिन से लेकर गाँव के लोग देवन्य से डरने लगे। देवन्य को विश्वास हो गया कि अब उसका कोई विरोधी है ही नहीं, तो उसमें अहंभाव बढ़ गया और वह ऐशो-आराम का आदी हो गया।

देवन्य के पतन को देखकर रामांग परेशान हो उठा और उसने उसे सावधान भी किया। उसकी उपेक्षा करते हुए उसने रामांग से कहा, ''मेरी वजह से जनता की भलाई हो रही है। मैंने किसी का अपकार नहीं किया। कोई अगर मुझे गाली दे या मुझे दोषी कहे तभी दंड देता हूँ। तुम भी इस दंड से बच नहीं सकते।''

देवन्य का पतन रोकना हो तो अंगूठी की महिमा को मिटाना होगा। अंगूठी की महिमा का अंत करना हो तो उस आदमी को दंड देना होगा, जिसने अपनी ग़लती मान ली। रामांग सोच में पड़ गया कि यह कैसे कार्यान्वित किया जाए। तब उसे अपने बड़े भाई क्षमांग की याद आ गयी, जो बृहदारण्य में गुरुकुल चला रहा था। वह तुरंत निकल पड़ा और भाई क्षमांग से मिला।

ठीक उसी समय पर विकास, विनोद, विवेक नामक तीन शिष्य ईमानदारी के विषय पर चर्चा करते हुए वहाँ आये। विकास का कहना था कि सच बताना और अपने वचन पर टिके रहना ईमानदारी है। विनोद का मानना था कि सच बताने पर भी परिस्थिति अनुकूल न हो तो, उसे वापस ले सकते हैं। इससे ईमानदारी के पालन में बाधा नहीं पड़ती। विवेक का समझना था कि ख़तरे से बचने के लिए झूठ कहा जा सकता है।

क्षमांग ने उन तीनों की ओर मुड़कर कहा, ''यह तुम तीनों की अक़्लमंदी और मेरे अध्यापन की परीक्षा का समय है। ईमानदारी के विषय में शास्त्र निर्धारित रूप से कुछ कहता है तो लौकिक

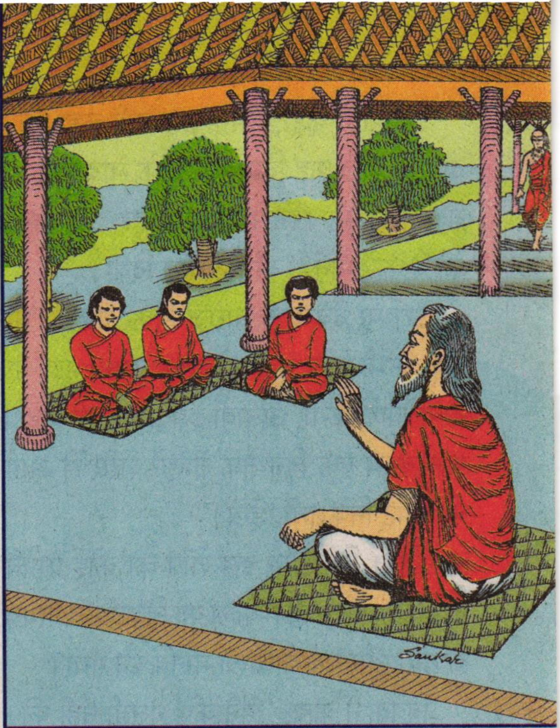

ज्ञान कुछ और कहता है। तुम लोग अपने संदेह का समाधान चाहते हो तो तुम लोगों को अपनी-अपनी पद्धति में ईमानदार रहते हुए योगपुर में एक कार्य को साधना होगा।''

गुरु का आशीर्वाद लेकर तीनों शिष्य योगपुर चले गये। वहाँ देवन्य की चेष्टाओं को देखते हुए वे प्रचार करने लगे कि वह धोखेबाज है। देवन्य ने उन तीनों को बुलाया और चेतावनी दी। फिर यह भी कहा कि अपनी ग़लती मान लो तो क्षमा कर दूँगा।

विकास ने नाराज़ होकर कहा, ''धोखेबाज को धोखेबाज कहना कोई ग़लती नहीं है।'' जैसे ही उसने यह कहा, उसका चेहरा विकृत हो गया।

यह देखते ही विनोद डर गया और मान लिया कि मुझसे ग़लती हुई है।

विवेक ने कहा, ''मैंने कुछ नहीं कहा। उन दोनों ने कुछ कह दिया तो उनके साथ मुझे भी यहाँ लाया गया। इनसे जो ग़लती हुई, उस ग़लती को मैं कैसे मानूँ?' यों झूठ बोल दिया।

इस पर देवन्य ने नाराज़ होकर कहा, ''मेरे भक्त कभी झूठ नहीं बोलते। तुमने मुझ पर दोषारोपण किया, अलावा इसके झूठ भी कहा। फलस्वरूप एक दिन तक तुम्हारे शरीर से आग की लपटें निकलती रहेंगी।''

किन्तु विवेक पर इस शाप का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। फ़ौरन ही विकास का विकृत रूप ग़ायब हो गया और वह साधारण मानव बन गया।

विवेक ने कहा, ''मैंने कोई ग़लती नहीं की। इसका यह मतलब हुआ कि तुम्हें दोषी कहना ग़लत है। जो नहीं मानते उन्हें ही दंड तुम दे सकते हो। इतनी ही शक्ति तुममें है। इसी कारण से अंगूठी की महिमा का अंत हो गया। इसमें कदापि तुम्हारे भक्तों की कोई ग़लती नहीं है।''

देवन्य ने शर्म के मारे सिर झुका लिया। रामानंद योगी के आदेश के अनुसार उसने अपनी जगह पर विवेक को ग्रामाधिकारी बनाने की इच्छा व्यक्त की ।

इतने में रामांग और क्षमांग दोनों वहाँ आ गये। क्षमांग ने अपने शिष्यों की ओर देखते हुए कहा, ''विवेक की तार्किक बुद्धि अवश्य ही प्रशंसनीय है, पर यह समझना सरासर ग़लत है कि केवल झूठ ही से कार्य साधा जा सकता है। किसी भी हालत में सच्चाई को छोड़ना नहीं चाहिये। निर्भय होकर विकास ने सच कहा, इसलिए लोगों में उसके प्रति अविश्वास पैदा हुआ। इतने ही में सच्चाई प्रकट हो गयी। जब हमसे बतायी जानेवाली सच्चाई उपयोगी साबित नहीं होती तब पीछे हटकर अपने को बचाना ज़रूरी है और इसे विनोद ने साबित किया। ईमानदारी से संबंधित तुम्हारे संदेहों को दूर करने के लिए ही उस योगी ने दिव्य शक्तियों से भरी यह अंगूठी दी होगी।''

रामांग ने हँसकर कहा, ''इतना ही नहीं, जो मनुष्य पतन चाहता है, वही अद्‌भुत शक्तियों को पाना चाहता है। योगपुर के श्रीराम ने योगी के द्वारा हमें यह संदेश भेजा।''

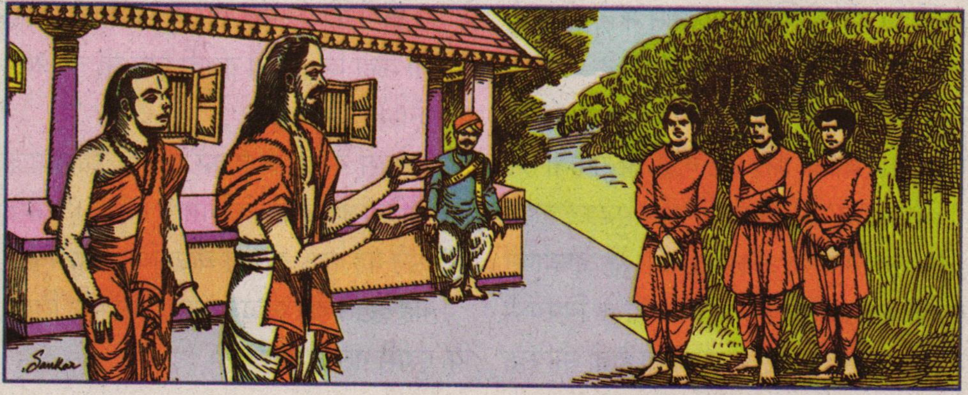

युक्षम के हीरो

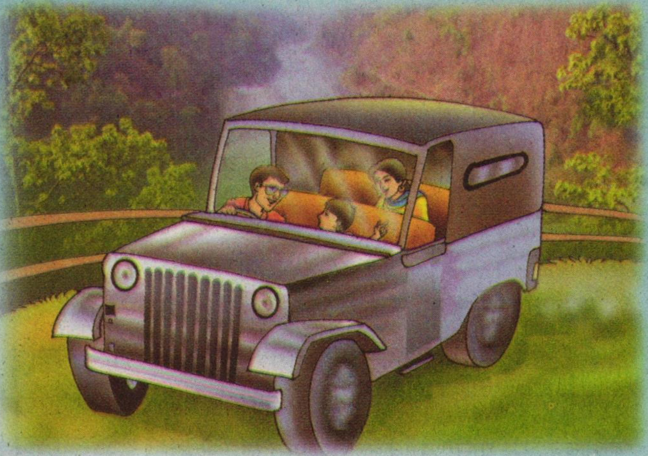

स्कूल के टर्म का आखिरी दिन था। दस वर्षीय नीरज उत्तेजित था, क्योंकि वह अपने दादा-दादी के साथ एक माह तक रहने के लिए अपना "शाश्वत घर" जा रहा था। उसने सोचा कि यह एक पूर्ण अवकाश मनाने जा रहा है, पर उसके ठीक पहले उसने शिक्षक की आवाज सुनी, "अवकाश गृह कार्य"। "सत्यानाश हो गया," वह बड़बड़ाया, "मेरे पूर्ण अवकाश का! अब मुझे दादा जी से पशु-पक्षियों जैसे ट्रैगोपैन्स तथा रेड पण्डा जिन्हें उसने कंचनजंघा की अनेक पदयात्राओं के समय देखा था, के बारे में कहानियाँ सुनने की बजाय बैठ कर गृह कार्य करना पड़ेगा।"

फिर भी, लेख के लिए दिये गये विषय से उसमें थोड़ा उत्साह आया। "हमारे देश के हीरो", वह स्वतः बोला। उसका मन पढ़ी हुई अनेक कहानियों की पुस्तकों में घूम रहा था। जो भी हो, वह बाद में विचार करेगा, क्योंकि अभी तो उसे जल्दी से घर लौटना है। उसके पिता जीप द्वारा सबको युक्षम में अपने घर ले जायेंगे।

युक्षम समुद्र तल से ५,८०० फुट ऊपर पर्वतों के पादतल में बसा हुआ है। युक्षम से होती हुई शानदार रथौंग नदी बहती है जिसे सिक्किम के बौद्ध धर्मावलम्बी पावन मानते हैं क्योंकि इसमें १०९ झीलें हैं जिन्हें स्थानीय देवी-देवताओं का निवास-स्थल माना जाता है।

जीप द्वारा सिलीगुड़ी से युक्षम पहुँचने में पाँच घण्टे लगे। जीप में नीरज ने यात्रा के दौरान अपनी मम्मी की तरह कभी झपकी नहीं ली। बल्कि वह गौर से यह देखता रहा कि उसके पिता सड़क के तीखे मोड़ों पर जीप को कितनी आसानी से घुमा लेते हैं। फिर उसका ध्यान गृह कार्य पर चला गया। "आप का हीरो कौन है, पापा?" वह पापा की ओर मुड़ा।

इस प्रश्न को सुनकर मानों ग्याल्टसेन विचारों के प्रवाह में बहने लगा। उसके मन में सोनम और चूकी और पेमा तथा अन्य अनेक के चित्र उभरने लगे जिन्होंने यूक्षम को एक विध्वसंकारी योजना से बचाने के लिए रात-दिन श्रम किया था। वे सब हीरो थे, उसने सोचा। 'रथौंग चू की पावन भूमि में प्रत्येक व्यक्ति हीरो है और उसे कंचनजंघा पर्वत पर रहनेवाले देवता का आशीर्वाद प्राप्त है।' उसने कहा, "मैं तुम्हें अपने गाँव में हुई एक घटना

की कहानी सुनाता हूँ, तब तुम समझ जाओगे कि मैं जो कहता हूँ वह सच है।''

सन् १९९३ की बात है। सामान्य दिनों की अपेक्षा मौसम अधिक गर्म था। हम कुछ लोग गाँव के प्रवेश मार्ग पर बैठे थे। तभी हमलोगों की ओर एक ट्रक आई जिस पर सीमेण्ट की बोरियाँ तथा खुदाई करने के उपकरण लदे थे। ट्रक के ड्राइवर ने बताया कि कुछ लोगों ने नदी पर बाँध बनाने का निश्चय किया है। वे नदी की धारा को रोक कर उस पानी से बिजली बनाना चाहते हैं। उसके बाद बहुत दिनों तक मैं दोस्तों के साथ विचार-विमर्श करता रहा। यह अच्छी बात है कि हमारे घर बिजली के प्रकाश से जगमगा जायेंगे, पर हमारे गाँव और रथौंग चू का क्या होगा?

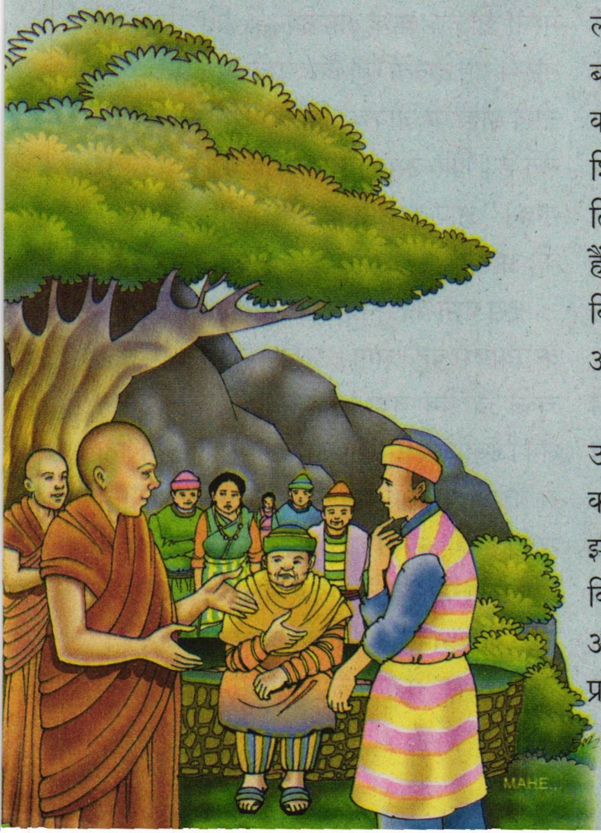

अगले कुछ दिनों तक युक्षम के सभी परिवारों में सिर्फ इसी विषय पर चर्चा होती रही। कुछ बुजुर्गों ने निश्चय किया कि यह बहुत महत्वपूर्ण प्रश्न है और इस पर विचार विमर्श आवश्यक है। इसलिए गाँव के बीचोबीच भिसा पेड़ की छाया में सब बैठ गये। निकटवर्ती गोम्पा मठ के लामा लोग भी सभा के लिए युक्षम आये। और उसमें लामा तथा हमारे बुजुर्गों ने हमें यह समझाया कि युक्षम जैसे विशिष्ट स्थान का, किसी भी लाभ के लिए, बलिदान करना नहीं चाहिये। ''हमारा पावन ग्रंथ 'नयसोल' कहता है कि इस भूमि को गुरु रिनपोक का आशीर्वाद प्राप्त है। हमारे पवित्र देवता इन शिलाओं, पहाड़ियों, वृक्षों तथा झीलों में यहीं पर निवास करते हैं,'' एक क्षीणकाय वृद्ध लाभा ने समझाया। ''यदि गाँव में इस बाँध को बाँधने दिया गया तो रथौंग चू के किनारे के वृक्ष काट दिये जायेंगे और दीवार बनाने के लिए शिलाओं को तोड़ दिया जायेगा। चिड़ियाँ और तितलियाँ जो इस भूमि पर हमारे साथ-साथ रहती हैं उड़ कर दूर चली जायेंगी और हमारे देवगण भी विदा ले लेंगे।'' उन्होंने बड़ी धीमी और उदास आवाज में कहा।

नीरज इस कहानी को ध्यान से सुन रहा था। उसने तुरन्त कहा, ''पिछले साल दादा जी ने कहा तो था कि कुछ लोगों ने एक बार कथोक झील में मिट्टी भरने की कोशिश की थी। क्या किसी ने कभी उन्हें नहीं बताया कि दादा तथा अन्य अनेक लोगों ने उस झील पर देवता से प्रार्थना की थी?

"हाँ, हाँ, यह सब उसी योजना का अंग था।" ग्याल्टसेन ने कहा, "और इसे करने से पहले किसी ने हमलोगों से पूछने की परवाह नहीं की। क्या तुम्हें बुम चू धर्मानुष्ठान के बारे में याद है जहाँ दादा जी तुम्हें पिछले वर्ष ले गये थे?"

"बेशक", नीरज ने कहा। "उन्होंने मुझे अपने कन्धे पर बिठाया जिससे मैं अपने मठ पर एकत्र झीड़ का पूरा दृश्य देख सकूँ। हर व्यक्ति विशेष पात्र से एक बून्द जल पीना चाहता था।

"दादा जी ने कहा कि उस पात्र की एक बून्द यदि कोई पी ले तो वह कभी बीमार नहीं पड़ेगा, क्योंकि उसमें हमारे गुरु पद्मसमभाव का आशीर्वाद होता है।" नीरज ने आगे ज्ञानभरी बात बताई।

ग्याल्टसेन ने अपने पिता को मन ही मन धन्यवाद दिया, क्योंकि उन्होंने नीरज को उनकी परम्परा और निष्ठा की शिक्षा दी। वह कहानी कहता रहा। "लामा और अपने बुजुर्गों की, उस सभा में बतायी गई बातों को सुन कर हमलोगों ने निश्चय किया कि हमलोग अपनी भूमि को बुलडोजर और डायनामाइट से कुचलने नहीं देंगे। नदी पर बाँध निर्माण को स्वीकार कर रथौंग चू की झीलों में रहने वाले देवताओं को निष्कासित नहीं करेंगे।

हमें तब अपने निर्णय को उन तक पहुँचाना था जिन्होंने यह परियोजना बनाई थी। गाँव के हम सब लोग सिक्किम के सभी लामाओं के नेतृत्व में गंगटोक की ओर चल पड़े। यह देखने योग्य दृश्य था। हमलोग ढोल पीटते हुए और लामा लोग अपने सिम्बाल बजाते हुए सड़कों पर जा रहे थे। हमारे बैनरर्स हमारे सन्देश को स्पष्ट घोषित कर रहे थे। लोगों ने इतने लामाओं को कभी एक साथ सड़क पर नहीं देखा था। लोग मार्ग में हमारे साथ होने लगे और अपने देश और जनता के हित में लिये गये हमारे सर्वोत्तम निर्णय पर हमारी खुशी और गर्व में हिस्सा लेने लगे।

"अंकल पेमा, अंकल सोनम, और अंटी चूकी ने लोगों को असंख्य पत्र लिख कर यह बताया कि बाँध बन जाने पर क्या-क्या क्षति होगी। उनके बिना सिक्किम के बाहर रहनेवाले न हमलोग, न और कोई परियोजना के बारे में इतना पहले जान पाते कि उसे रोकने का कोई उपाय कर सकें।

"सन १९९७ में अंकल पेमा ने हमलोगों को खबर सुनाई कि वह परियोजना युक्षम में लागू नहीं होगी," ग्याल्टसेन क्षण भर रुका, उसने नीरज को देख कर आँख मिचकाई और पूछा, "क्या तुम नहीं समझते कि हम सब हीरो हैं?" नीरज हँस पड़ा, उसका भोला मुखड़ा खुशी से दमकने लगा। उसे अवकाश के गृहकार्य के लिए हीरोज की सच्ची कहानी मिल गई।

जीप जब खड़ी ढाल वाली पर्वतीय सड़क पर चढ़ रही थी, नीरज सोच रहा था कि युक्षम के सभी हीरोज क्या क्या बचाने में कामयाब हो सके। रंग-बिरंगे चेड़ और तितलियाँ, पहाड़ी ढालों पर पसरे इलायची के खेत, पुरानी पर ठीक-ठाक आराम से चलनेवाली लकड़ी की पनचक्कियाँ, वृक्षों पर लाखों ऑरकिड्स....। युक्षम इन सब का सदाबहार घर था।

- मंजु मेनन

भारत के नये विश्व-चैम्पियन

पंकज अडवानी

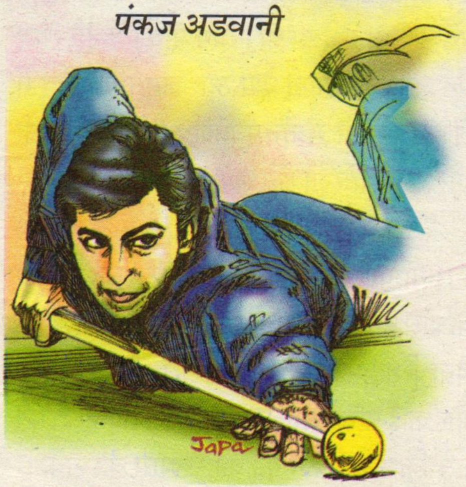

बिलियर्ईस

बंगलोर निवासी पंकज अडवानी बंगलोर में आयोजित आई बी एस एफ विश्व बिलियर्ईस चैम्पियनशिप में पाइण्ट्स तथा टाइम फॉरमेट दोनों में विश्व चैम्पियन घोषित किया गया। पाइण्ट्स फॉरमेट में उसने १० सितम्बर को गीत सेठी को हराया; चार दिनों के बाद उसने देवेन्द्र जोशी को २३७०-२०२० से पछाड़ा। सन् २००५ में माल्टा के विश्व चैम्पियनशिप में पंकज ने इसी तरह दोहरी विजय हासिल की थी। वास्तव में, पंकज अडवानी स्नूकर तथा बिलियर्ईस में विश्व खिताब जीतनेवाले दो खिलाड़ियों में से एक है, दूसरा है माल्टा का पॉल मिफसूद। पंकज, जो यौवन की प्रतिमा माना जाता है, अभी २३ वर्ष का है।

धोनी को आई सी सी एवार्ड

महेन्द्र सिंह धोनी

भारत के एक दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय (ओ डी आई) कप्तान महेन्द्र सिंह धोनी को २००८ के लिए अन्तर्राष्ट्रीय क्रिकेट कौंसिल का ओ डी आई प्लेयर एवार्ड दिया गया है। मतदान के लिए विचारणीय अवधि में उसने ३९ ओ डी आई मैच खेले जिनमें उसे १२९८ रन मिले जो औसतन प्रति १०० बॉल्स पर जिनका उसने सामना किया, ८२.४६ रन की दर से ४९.९२ रन थे। उसने एक शतक और ९ अर्ध शतक लगाये। विकेट किपर की हैसियत से ४६ कैच तथा १६ स्टम्प लिये। अभी उसे आई. सी. सी. के ओ डी आई बल्लेबाज के रूप में प्रथम स्थान प्राप्त है। भारत के युवराज सिंह को २० ओवर के अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शन में प्रथम पुरस्कार दिया गया है। यह पुरस्कार अभी आरम्भ किया गया है। ये पुरस्कार ११ सितम्बर को दुबई में वितरित किये गये।

सौरभ घोसाल

सैना नेहवाल

बैडमिण्टन

हैदराबाद की १८ वर्षीय सैना नेहवाल ने १४ सितम्बर को तायवान में आयोजित इस वर्ष की योनेक्स चीनी ताइपेई ग्रैण्ड प्रिक्स गोल्ड बैडमिण्टन चैम्पियनशिप जीत ली। उसने मलयेशिया की लि या लिडिया को २१-८ तथा २१-९ से हराया। सैना ने २००६ में मलयेशिया की जुलिया जियान पेई वोंग को २१-१५ तथा २२-२० से हरा कर फिलिपिन्ल ओपन जीता था। जब वह तायवान गई तब वह अन्तर्राष्ट्रीय बैडमिण्टन फेडरेशन रैंकिंग में विश्व में १४ वें स्थान पर थी। नवीनतम जीत के साथ वह अब ११ वें स्थान पर छलांग लगा चुकी है। स्मरणीय है कि हाल के बिजिंग ओलम्पिक्स में वह क्वार्टर फाइनल्स तक पहुँच गई थी।

स्क्वैश

सौरभ घोसाल को जायण्ट किलर कहा जाता है। उसने पहले ऑरनानो अन्तर्राष्ट्रीय ओपन समारोह पर १३ सितम्बर को फ्रांस के बोरडो में पी एस ए टूर स्क्वैश के अन्तिम दौर में थर्ड सीड डेविड बियानचेटी को हरा कर उसे हक्का बक्का कर दिया। वह ११-६, ११-६, ९-११, ११-९ से विजयी हुआ। यह उसके जीवन का चौथा विश्व खिताब था। इससे पूर्व, उसने फ्रांस के टॉप सीड रिनन लाविग्ने को क्वार्टर फाइनल्स में तथा पाँचवें सीड मिस्त्र के अम्र स्वेलिम को सेमी-फाइनल्स में हराया था। पी एस ए फाइनल में यह उसका छठा खेल था; वियानचेटी ने १८ फाइनल्स में भाग लिया था। घोसाल ने कहा कि उसकी सफलता का श्रेय ब्रिटिश कोच मालकोम विल्सट्रोप को जाता है जो उसे पिछले तीन वर्षों से प्रशिक्षण दे रहा है।

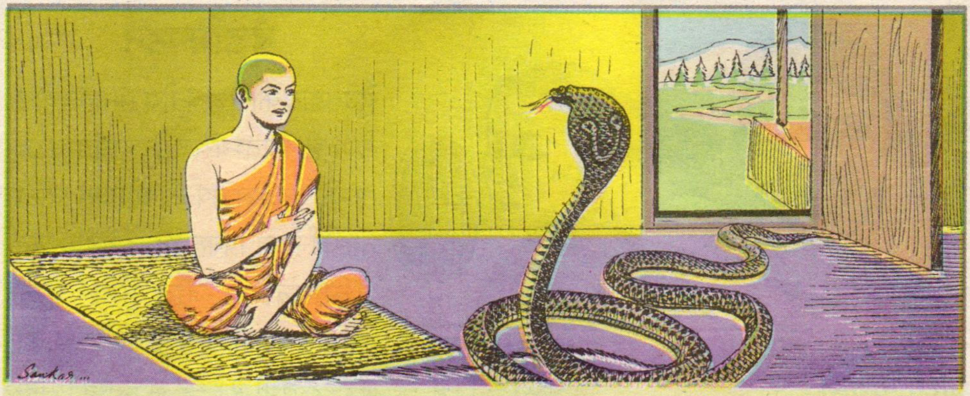

मदिरा का प्रभाव

ब्रह्मदत्त जिन दिनों काशी के राजा थे, उन्हीं दिनों पंडित वंश के रूप में विख्यात एक ब्राह्मण परिवार में बोधिसत्व ने जन्म लिया। बीस वर्ष की आयु तक वे समस्त शास्त्रों का अध्ययन कर महापंडित के रूप में विख्यात हो गये।

माता-पिता ने बोधिसत्व का विवाह करना चाहा, पर उन्होंने विवाह करना स्वीकार नहीं किया, बल्कि संन्यास लेकर हिमालय पर आश्रम बनाकर निवास करने लगे।

एक बार वे अपने शिष्यों के साथ भद्रवती नाम के गाँव में पहुँचे। वहाँ से थोड़ी दूर एक नदी थी और अंबतीर्थ नाम का एक प्रसिद्ध तीर्थ भी था। वे अपने शिष्यों के साथ उस तीर्थ की तरफ़ चल पड़े। उस तीर्थ के किनारे एक मुनि का आश्रम था और उस आश्रम में अंबक कीर्तिक नाम का एक ज़हरीला साँप भी रहता था। उस साँप का समाचार सुनाकर गाँव के निवासियों ने बोधिसत्व से अनुरोध किया कि वे उस आश्रम के अन्दर न जायें। उनके अनुरोध पर बोधिसत्व ने कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की।

बोधिसत्व के शिष्यों में एक शिष्य का नाम सागत स्थविर था। वह मंत्रशास्त्र में प्रवीण था, साथ ही असाधारण साहसी भी था। वह बोधिसत्व और दूसरे गुरु भाइयों से अलग होकर अकेला मुनि के आश्रम में चला गया।

उस समय आश्रम में मुनि न थे। सागत स्थविर ने आश्रम में प्रवेश किया और एक स्थान पर चटाई बिछाकर बैठ गया। उसी समय एक भयंकर जहरीला साँप निकला और अपना फण उठाकर सामने खड़ा हो गया। सागत स्थविर सर्प से पूछा, "क्या तुम्हारा ही नाम अंबक कीर्तिक है?"

यह सवाल सुनते ही सर्प फुत्कारने लगा। उसके मुँह से काला धुआँ निकल आया। स्थविर ने भी अपने मुँह से धुआँ निकाला। इस पर सर्प

जातक कथा

के मुँह से आग के शोले निकलने लगे। स्थविर ने भी अपने मुँह से आग के शोले निकाले।

इस तरह चार-पाँच मिनट तक स्थविर और विषैले सर्प के बीच अपनी-अपनी शक्ति एवं सामर्थ्य का प्रदर्शन चला। स्थविर की निडरता देख कर उस विषैले सर्प ने अपना फण झुका लिया और लावार होकर पीछे की ओर लौट पड़ा। स्थविर ने उसकी पूँछ पकड़ कर उसे पीछे खींच लिया।

''अंबक कीर्तिक! मैं जानता हूँ कि इस तीर्थ में आये हुए कई लोग तुम्हारे डँसने के कारण मर गये हैं!'' इतना कह स्थविर ने सर्प के विषैले दांत निकाल कर उसे जीवित छोड़ दिया।

इस घटना के कुछ दिनों के बाद बोधिसत्व भद्रवती को छोड़ कौशाम्बी नगर में पहुँचे। बोधिसत्व के एक शिष्य ने अंबक कीर्तिक जैसे जहरीले सर्प के दांत निकाल लिये हैं, यह समाचार आस पास के गाँवों और नगरों में आग की तरह फैल गया था। कौशाम्बी के निवासियों ने बोधिसत्व का अभूतपूर्व स्वागत किया और एक विशाल उद्यान में उनके ठहरने का प्रबन्ध किया।

दूसरे दिन सुबह-सुबह नगर के कुछ निवासियों ने बोधिसत्व के दर्शन किये। इसके बाद वे स्थविर के पास पहुँचे, जो अपने कुछ गुरुभाइयों के साथ एक पेड़ की छाया में बैठा हुआ था। उन्होंने उसे प्रणाम किया और पूछा, ''आप तो सुदूर हिमालय में निवास करने वाले हैं। वहाँ आपको हर आवश्यक चीज़ का मिलना तो दुर्लभ है। आपको किसी वस्तु की इच्छा हो तो हम तुरन्त ला देंगे।'' स्थविर मौन रहा।

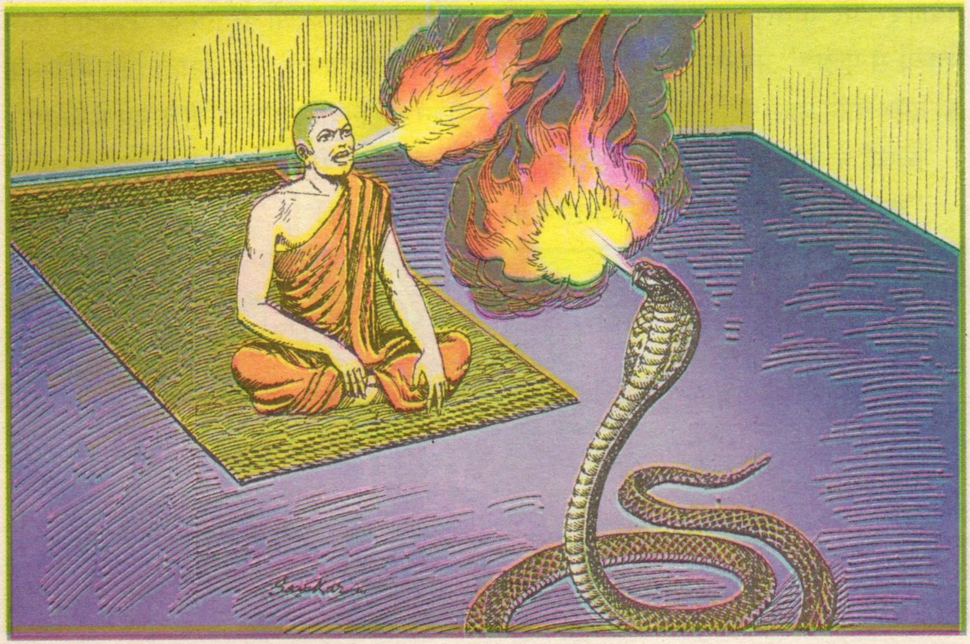

इस पर दूसरे दो शिष्य बोले, ''भद्रजनो! हम पारावत मदिरा का सेवन करना चाहते हैं। इसलिए वह मदिरा तैयार करवाकर हमारे पास भेजने की कृपा करें!''

नगर-निवासियों ने दोपहर तक पारावत मदिरा तैयार की और एक गृहस्थ के घर में छिपाकर वे स्थविर को वहाँ लिवा लाये।

स्थविर ने पारावत मदिरा का पान करना आरम्भ किया। उसे मदिरा का नशा इतना चढ़ गया कि वह नशे में कि नगर के द्वार की तरफ दौड़कर वहाँ गिर गया। उसके साथियों ने उसे उठाकर बोधिसत्व के पास इस तरह लिटा दिया कि उसका मस्तक बोधिसत्व के चरणों का स्पर्श करता रहे।

स्थविर को नशे में ही क्रोध आ गया। वह उठा और बोधिसत्व की तरफ़ पैर पसार कर लेट गया। इस पर बोधिसत्व मुस्करा पड़े और अपने शिष्यों से पूछा, ''अंबतीर्थ में भयंकर विष सर्प का दमन करने वाला व्यक्ति कौन है?''

शिष्यों ने उत्तर किया, ''सागत स्थविर।''

''क्या इस दशा में स्थविर एक जलसर्प को भी वश में कर सकता है?'' बोधिसत्व ने अपने शिष्यों से पूछा।

''नहीं, नहीं भगवान! इस हालत में कदापि संभव नहीं है।'' शिष्यों ने कहा।

''तो तुम लोग इस अनुभव को कभी मत भूलना! मदिरापान देह में नशा ही पैदा नहीं करता, बल्कि चित्तभ्रम भी पैदा कर देता है। इससे चित्त चंचल हो जाता है, इसकी एकाग्रता भंग हो जाती है। एकाग्रता ही तपस्या का मूल है, यही सत्य का द्वार खोलता है। मदिरा विष के समान है जो हमारी वर्षों की तपस्या को क्षण भर में नष्ट कर देती है। इसलिए मैं यह नियम बना रहा हूँ कि आज से कोई भी मदिरा का पान नहीं करेगा।'' बोधिसत्व ने गंभीर होकर कहा।

मदिरा का नशा उतरते ही स्थविर उठा और बोधिसत्व के चरणों पर गिरकर पश्चाताप करने लगा। बोधिसत्व ने उसे उठाया और मदिरा के सेवन से होनेवाले दुष्परिणामों के बारे में बताया।

उस दिन से बौद्ध धर्म में मदिरापान वर्जित कर दिया गया।

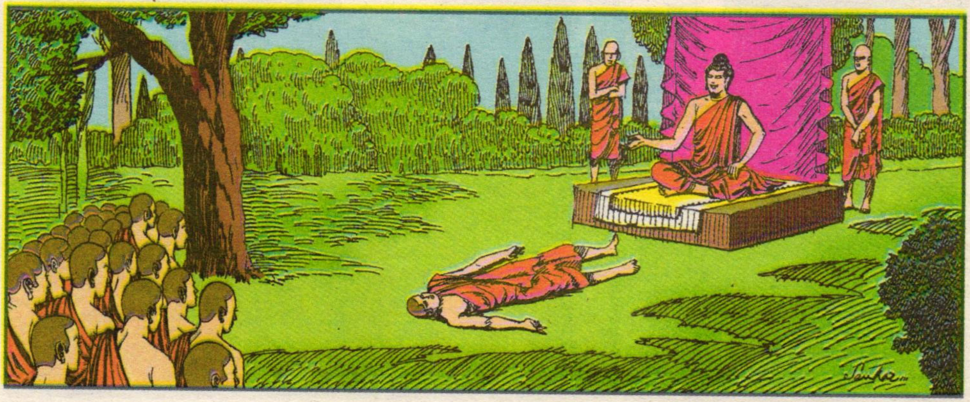

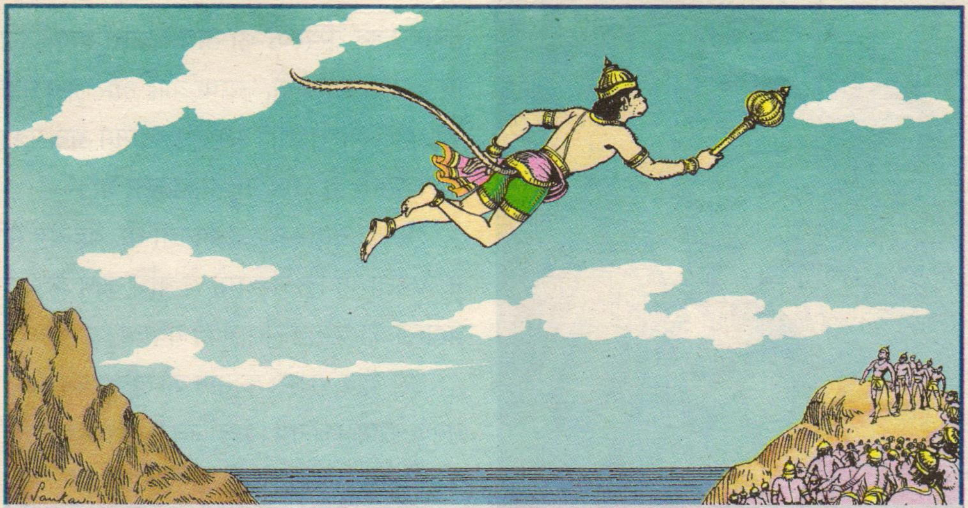

रामायण

रावण को यह जानकर बड़ा दुख हुआ कि हनुमान ने अक्षकुमार को मार दिया। पर उसने दुख को संयमित करके क्रुद्ध हो, इन्द्रजित की ओर देखकर कहा, ''तुम इन्द्र को जीतनेवाले वीर हो। ब्रह्मा से भी तुमने दिव्यास्त्र पाये हैं। तीनों लोकों में तुम-सा कोई योद्धा नहीं है। इस बन्दर ने सबको मार दिया है। जम्बुमालि को, मन्त्री के लड़कों को, पाँचों सेनापतियों को, तुम्हारे भाई अक्षकुमार को भी आखिर मार दिया है। यह निश्चित है कि वह साधारण वानर नहीं है। वह वानर के वेश में कोई देव या यक्ष मालूम पड़ता है। कोई असाधारण वीर ही हमारे बड़े-बड़े महारथियों को मार सकता है। यह स्पष्ट है कि हमारे जितने योद्धा मारे गये हैं, उन सबसे बढ़ कर वीर है यह वानर। यह जानकर कि उसका बल किस प्रकार का है, उसी के अनुसार उससे लड़ना। और शत्रु को जीतकर आना।''

इन्द्रजित पिता की प्रदक्षिणा करके धनुष आदि लेकर, रथ पर सवार हो युद्ध के उत्साह में हनुमान की ओर गया।

हनुमान ने उसको कुछ दूरी पर देखा। सिंह निनाद करके उसने अपना शरीर बढ़ाया। फिर दोनों में भयंकर युद्ध होने लगा।

इन्द्रजित युद्ध के लिए सन्नद्ध ग्यारह हज़ार योद्धाओं से युद्ध कर सकता था। परन्तु हनुमान उसके बाणों से बचता आकाश में विचरने लगा।

बहुत देर युद्ध करने पर भी न हनुमान इन्द्रजित के हाथ आया, न इन्द्रजित ही हनुमान के। अपने बाणों को व्यर्थ जाता देख इन्द्रजित ने सोचा कि

सुन्दर काण्ड - ६

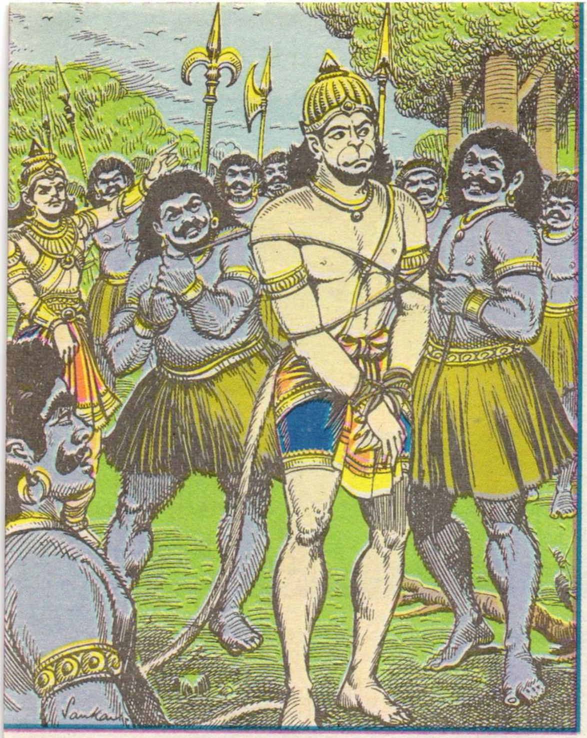

इसको मारना असम्भव है, किसी तरह इसको पकड़ा जाये। यह सोच उसने ब्रह्मास्त्र का उपयोग किया। उसके कारण हनुमान पकड़ा गया, उसकी हालत ऐसी हो गई कि वह हाथ पैर भी न हिला सका। उसे तब वह वर स्मरण हो आया, जिसे ब्रह्मा ने कभी उसे दिया था। ब्रह्मा ने उसको वर दिया था कि उसपर किसी भी अस्त्र का प्रभाव न होगा। यद्यपि उसको ब्रह्मास्त्र लगा था, तो भी उसका ख्याल था कि ब्रह्मा, देवेन्द्र, वायुदेव उसकी रक्षा कर रहे होंगे। उसने राम से बातचीत भी करनी चाही।

हनुमान के पास राक्षस आये और उन्होंने उसको रस्सियों से बाँध दिया। उसको रस्सियों से बाँधते ही ब्रह्मास्त्र का प्रभाव जाता रहा। इन्द्रजित यह जानता था, इसलिए वह बहुत डरा। हनुमान इन रस्सियों को तोड़ सकता था। जिस पर ब्रह्मास्त्र छोड़ा हो, उसपर कोई और अस्त्र नहीं छोड़ा जा सकता था। इसलिए हनुमान अब लंका को कितनी ही हानि पहुँचा सकता था।

परन्तु हनुमान यह न जानता था, वह यह भी न जानता था कि रस्सियों से बाँधे जाने के बाद ब्रह्मास्त्र का प्रभाव समाप्त हो गया है।

इस बीच, राक्षस हनुमान को खूब मारते पीटते रावण के पास ले गये। इन्द्रजित ने सभा में हनुमान को दिखाकर कहा, ''यही है वह वानर।''

उपस्थित राजप्रमुख आपस में पूछने लगे, ''कौन है यह वानर? यहाँ क्यों आया है? किसके भेजने पर आया है? किसको देखने आया है?'' कुछ और राक्षसों ने कहा, ''इस वानर को मारकर भून दो, खायेंगे।''

हनुमान ने सामने आकर रावण के नीचे बैठे वृद्ध मन्त्रियों और मणियों से अलंकृत सभाभवन को देखा। रावण ने हनुमान को राक्षसों द्वारा रस्सियों से इधर-उधर खींचे जाते देखा। उसकी आँखें क्रोध में अंगारें हो गईं। हनुमान को देखकर अपने मन्त्री को आज्ञा दी, ''मालूम कीजिये कि यह वानर कौन है और उसके यहाँ आने और उपद्रव मचाने का प्रयोजन क्या है?''

हनुमान रावण, उसके मन्त्री दुर्धर, प्रहस्त, महापार्श्व, निकुम्भ तथा रावण के अत्यन्त वैभव को देखकर चकित रह गया। उसे लगा कि इस रावण को देखकर यदि तीनों लोक भयभीत हैं, तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं है।

इतने में रावण की प्रेरणा पर, प्रहस्त ने हनुमान से इस प्रकार कहा :

"वानर, तुम डरो मत। तुमको किसने भेजा है? दिक्पालकों ने? या विष्णु ने? चाहे किसी ने भी भेजा हो, हम तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ेंगे। सच बताओ तो हम तुम्हें छोड़ देंगे। तुम देखने में तो बन्दर हो, पर तुम्हारा प्रभाव बहुत अधिक मालूम होता है। झूठ बोलोगे तो तुम्हारी जान नहीं बचेगी। यदि तुम स्वयं आये हो तो बताओ कि क्यों आये हो?"

प्रहस्त के यह पूछते ही हनुमान ने रावण की ओर मुड़कर कहा, "मुझे इन्द्र, कुबेर, वरुण और यम ने नहीं भेजा है, न विष्णु ने ही। मैं जन्म से ही वानर हूँ। यह मेरा कोई नकली रूप नहीं है। क्योंकि तुम्हें देखना आसान नहीं है, इसलिए ही मैंने अशोक वन को नष्ट किया। मैं तुमलोगों से मिलना चाहता था, तुमलोगों का चरित्र, रहन-सहन और शक्ति के बारे में जानना चाहता था। मैंने सोचा कि अशोक वन नष्ट होने से तुम लोग जरूर मुझे पकड़ कर लाओगे और तुम्हारी सभा और वैभव को देखने का अवसर मिलेगा। तब मुझ पर बलवान राक्षसों ने हमला किया और मैंने आत्मरक्षा में उनको मार दिया। ब्रह्मा के वर के कारण मुझपर किसी भी अस्त्र का असर न हुआ। परन्तु तुम्हें देखने की इच्छा से मैंने अपने को ब्रह्मास्त्र से प्रभावित होने दिया। तुमसे मुझे कुछ राजकीय कार्य भी है। मैं राम का दूत हूँ। तुमसे कुछ हितकर बातें कहूँगा। ध्यान से सुनो। इन बातों को सुग्रीव ने मुझे तुम से कहने के लिए कहा है। दशरथ का लड़का राम अपनी पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण के साथ पिता की आज्ञा पर दण्डकारण्य आया। वहाँ राम की पत्नी सीता गुम हो गई। राम सीता को खोजता ऋष्यमूक पर्वत पर सुग्रीव से मिला। फिर उन्होंने वाली को मारकर सुग्रीव को वानर और भल्लूकों का राजा बनाया। इसके बदले में सुग्रीव ने वचन दिया कि वह सीता की खोज करवा देगा। उस वचन के अनुसार उसने सब दिशाओं में वानरों को भेजा। उनमें से मैं एक हूँ। वायुपुत्र हूँ और मेरा नाम हनुमान है। मैं सौ योजन समुद्र को पार करके सीता को देखने आया हूँ। मैंने सीता को यहाँ तुम्हारे पास देखा। तुमने कितनी ही तपस्या की है, धर्म जानते हो, यह काम तुम्हें नहीं शोभता। शास्त्रों के ज्ञानी हो, वीर

हो, पर तुमने राम की पत्नी का अपहरण करके नीच कर्म किया है। इस तरह का कार्य दुष्ट किया करते हैं। राम का अपकार करके, उसका प्रतिफल पाये बगैर रहना किसी के लिए सम्भव नहीं है। राम आगे क्या करेंगे, यह मैं नहीं जानता। सीता को राम को वापस दे देना तुम्हारे लिए श्रेयस्कर है। यह सच है कि तुम कई जातियों द्वारा नहीं मारे जा सकते, परन्तु सुग्रीव उन जातियों से सम्बन्धित नहीं है। वह वानर है। नर राम से और वानर सुग्रीव के हाथ तुम्हारी मौत निश्चित है। राम मानेंगे नहीं, क्योंकि यह उनकी मर्यादा और प्रतिष्ठा के विरुद्ध होगा नहीं तो मैं अकेला ही तुम्हारी लंका का नाश कर सकता हूँ। जब तुमने सीता का अपहरण किया था, तभी तुमने अपने गले में मृत्यु देवता को लपेट लिया था। मैं दूत हूँ। न मैं मनुष्य हूँ। न राक्षस ही हूँ। इसलिए तुम्हारे हित की बात कर रहा हूँ। राम से शत्रुता करके, तुम जीवित नहीं रह सकते। यह जान लो। यही कहने के लिए मैं ब्रह्मास्त्र में बँधा यहाँ आया हूँ। मेरी सलाह मान लेने में तुम्हारी भलाई है।''

ये बातें सुनकर रावण क्रोध से काँपने लगा और दाँत पीसने लगा। उसकी अपनी ही सभा में अपने सेवकों के सामने तीनों लोकों को भयकम्पित करनेवाले रावण को एक वानर ने अपमानित किया था। इसलिए वह तिलमिला गया। उसका गर्व चूर-चूर हो गया। यह वह सहन नहीं कर सका। उसने क्रुद्ध होकर, हनुमान को मार देने की आज्ञा दी। तब विभीषण ने अपने भाई को रोकते हुए यूँ कहा, ''दूत को मारना राजधर्म के विरुद्ध है। क्रोध में धर्म विरुद्ध कार्य

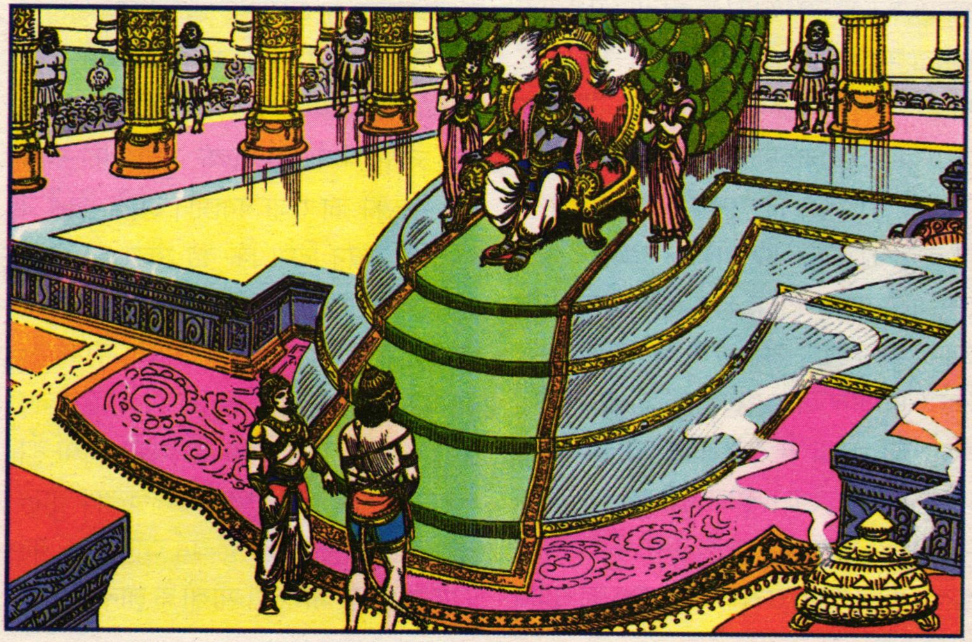

करना ठीक नहीं है। यह केवल दूत नहीं है, चूँकि इसने हमारे योद्धाओं में अक्ष आदि को मारा है, इसलिए शत्रु भी है। फिर भी दूत के रूप में आये हुए व्यक्ति के लिए अलग दण्ड है। उसका अंग भंग किया जा सकता है, कोड़े से मारा जा सकता है। सिर मुँड़वाया जा सकता है। परन्तु मारा नहीं जा सकता। धर्म को नहीं छोड़िये, इसको मारने से हमारा कोई लाभ भी नहीं है। जिसने इसको भेजा है, उसको मारो।''

यह बात रावण को जंची। ''हाँ, दूत है, इसलिए न मारना ही ठीक है। कोई और दण्ड दिया जाये। बन्दरों को पूँछ प्यारी होती है। इसलिए इसकी पूँछ जलाकर भेज दो। फिर इसे जगह-जगह गलियों में घुमाओ।''

राक्षस, हनुमान की पूँछ पर चिथड़े लपेट कर तेल डालकर और जला कर, चारों ओर गलियों में घुमाते चिल्लाये, ''पागल को देखो।''

हनुमान ने इसकी परवाह न की। उसने सोचा कि इस तरह नगर देखकर कहाँ कहाँ रक्षा का क्या प्रबन्ध है, देखा जा सकता है। उसे देखने के लिए राक्षस स्त्रियों और बच्चों का जमघट-सा लग गया।

कुछ राक्षस स्त्रियों ने सीता के पास जाकर कहा, ''जो वानर, तुमसे बात करके गया था, उसकी पूँछ जलाकर उसको सारे शहर में चिल्ला-चिल्लाकर घुमाया जा रहा है।''

सीता यह सुनकर बड़ी दुखी हुई। ''यदि मैं पतिव्रता हूँ, तो हनुमान सुरक्षित रहे।'' सीता ने प्रार्थना की।

सीता के यह कहते ही हनुमान की पूँछ की ज्वाला और भी चमकने लगी। परन्तु हनुमान को आग की गर्मी न लगी। यह देख हनुमान को आश्चर्य हुआ। उसको जो कुछ करना था, उसके बारे में उसने सोचा। उसने पहले बहुत छोटा बनकर अपने बन्धन ढीले कर लिये। फिर उसने अपना शरीर बड़ा किया और नगर द्वार के पास के खम्भे को उठाकर आस पास के राक्षसों को खूब मारा। फिर उसने नगर की ओर देखकर सोचा, 'अब क्या किया जाये?' उसने तब तक लंका नगरी का काफ़ी नुकसान कर दिया था।

लंका के किले का नाश करना ही बाकी रह गया था। लंका के महाभवनों को अपनी पूँछ की आग से जलाकर अग्नि को आहुति दे देना ही उसने अपना कर्तव्य समझा।

यह सोचकर हनुमान लंका के बड़े-बड़े भवनों पर अपनी जलती पूँछ घुमाने लगा। निर्भय हो वह राक्षसों के घरों में गया। प्रहस्त के घर में आग जलाकर महापार्श्व के घर पर कूदा। उसके घर को जलाकर इन्द्रजित, जम्बुमालि, सुमालि आदि के घर जला दिये। सिवाय विभीषण के घर के उसने बाकी राक्षसों के घर, उनकी सम्पत्ति, धन बगैरह सब जला कर राख कर दिये। लंका को जलाने में वायुदेव भी हनुमान की सहायता कर रहा था। लंका और भी तेज़ी से जलने लगी।

अपने जलते घरों को राक्षस नहीं बचा सके। पुरुष, स्त्री, बच्चों की बुरी हालत हो गई। कितने ही आग में मारे गये। धू-धू कर जलती लंका भयंकर मालूम हो रही थी। राक्षसों के आर्तनाद से यह दृश्य और भी भयंकर हो गया।

हनुमान ने एक बार लंका की ओर देखा। नगर के सभी प्रान्तों को जलता देख, अपनी पूँछ उसने समुद्र में डुबोई।

उस समय उसको एक भयंकर सन्देह सताने लगा। कहीं लंका के साथ सीता तो नहीं जल गई हैं? यह ख्याल आते ही हनुमान अपने को कोसने लगा। उसने सोचा कि शायद क्रोध में मनुष्य कर्तव्य और अकर्तव्य में अन्तर नहीं कर पाता। जिस काम पर आया था, वह सब खराब हो गया है।

पर इतने में उसको धीरज हुआ। जब जिस काम पर मैं आया था, उसमें इतनी सफ़लता मिली है, तो सीता का जल जाना सम्भव नहीं हो सकता। क्या वह अग्नि, जिसने मेरी पूँछ जलाई है, सीता को भस्म करेगी? यह कभी न होगा, सीता स्वयं अग्नि-सी है। उसका अग्नि क्या बिगाड़ सकती है? वह यह सोच ही रहा था कि आकाश से उसको चारणों की बातें सुनाई दीं। यह जानकर लंका के जल जाने पर भी, सीता सुरक्षित है, वह बड़ा आनन्दित हुआ।

हनुमान अपनी कर्तव्यनिष्ठता पर सन्तुष्ट थे। उन्होंने सोचा, सीता का पता लग गया। मैंने सीता के अपहरणकर्ता रावण को, उसकी शक्ति और वैभव को जाँच-परख लिया। राम का सन्देश उसे सुना दिया। राम की शक्ति का विवरण दे दिया और बानगी के रूप में राम के दूत की शक्ति का प्रदर्शन भी कर दिया। अब राम के पास लौट कर यह सब उन्हें बताना चाहिये।

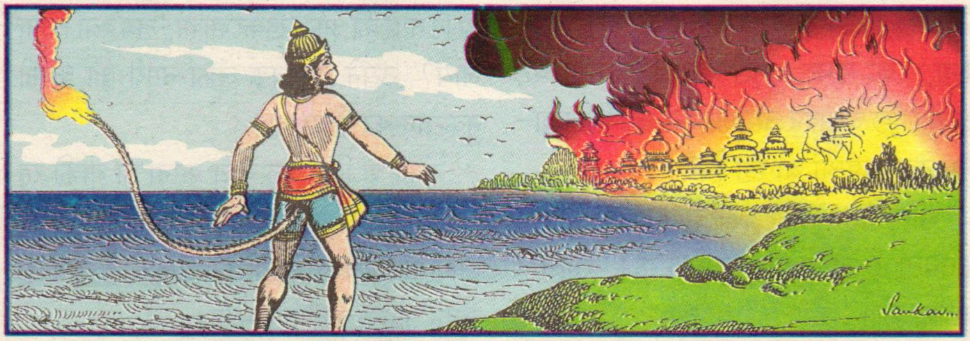

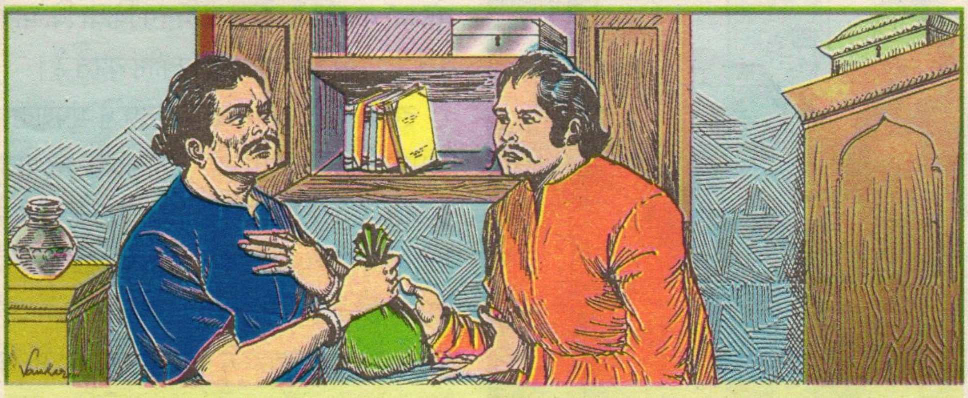

करनी का फल

बढ़ई शंभुप्रसाद के दो बेटे थे। बड़ा बेटा शिवराम शहर में किसी व्यापारी के यहाँ नौकरी करता था और दूसरा गोविंद अपने बाप के पेशे बढ़ईगिरी में उसकी मदद करता था।

एक बार गोविंद अपने बड़े भाई को देखने शहर में गया। तब शंभुप्रसाद को अचानक दिल का दौरा आया। शंभुप्रसाद को लगा कि वह गोविंद के लौटने तक ज़िंदा न रहेगा। तब वह अपने पड़ोसी धनी भूषणदास को बुला भेजा, उसके हाथ एक थैली देकर मिन्नत की, ''महाशय, इस थैली में पाँच हज़ार सिक्के हैं, मेहरबानी करके आप यह धन मेरे बेटों के हाथ सौंप दीजिए, हो सके तो ऐसा इंतज़ाम कीजिए कि मेरे बेटे इस धन की वजह से आलसी न बनें और वे इसके सहारे अपने दिन आराम से बिता सकें।''

भूषणदास ने मान लिया, धन की वह थैली ले जाकर अपने घर छिपा दी और फिर लौट आया। इस बीच शंभुप्रसाद के प्राण निकल गये थे। उसी वक़्त शहर में रहनेवाले शंभुप्रसाद के लड़कों के पास ख़बर भेजी गई। बेटों ने गाँव लौटकर अपने पिता की अत्येष्टि क्रियाएँ कीं। उन्हें घर की एक अलमारी में अपने पिता के हाथों से लिखी एक चिट दिखाई दी। भूषणदास को बुलवाने के पहले शंभुप्रसाद ने अपने बेटों के नाम एक चिट लिखकर उसे अलमारी में रख दिया था।

उस चिट में यों लिखा हुआ था, ''मैंने पाँच हज़ार सिक्के जमाकर रखे हैं। ये सिक्के मैं धनी भूषणदास के हाथ सौंप देता हूँ। तुम लोग उनकी सलाह के मुताबिक़ इस धन का उपयोग करो, पर कभी तुम लोग आलसी न बनो।''

शंभुप्रसाद के बेटों ने वह चिट ले जाकर भूषणदास को दिखाया। भूषणदास ने दुख का

२५-वर्ष पूर्व चन्दामामा में प्रकाशित कहानी

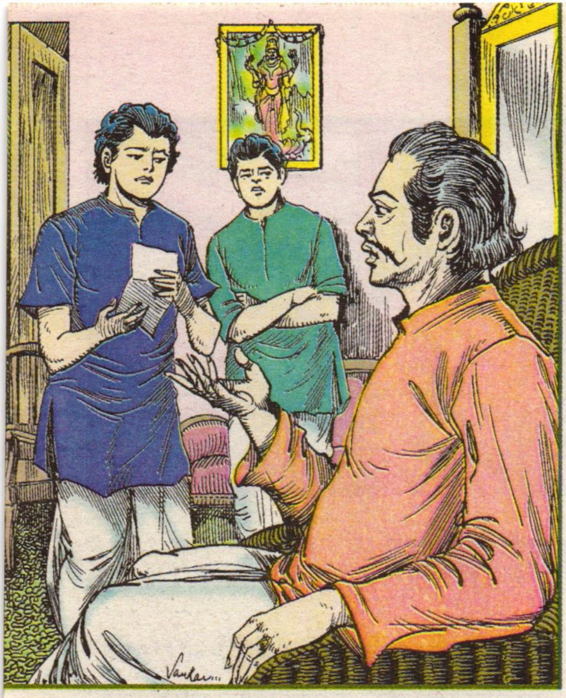

स्वांग रचते हुए कहा, ''बेचारे, तुम्हारे बाप मेरे हाथ वह धन देने के पहले ही चल बसे।''

शंभुप्रसाद के लड़कों ने समझ लिया कि भूषणदास झूठ बोलकर धोखा देना चाहता है, क्योंकि उन्हें यह बात स्पष्ट मालूम हो गई कि उनके बाप के मरने के पहले ही भूषणदास उनके घर आया और फिर चला गया, लेकिन दुबारा जब वह लौटकर आया, तब तक उनका बाप मर चुका था। हो सकता है कि शंभुप्रसाद ने भूषणदास के हाथ धन सौंपने के पहले चिट लिख दी हो, पर यह सच है कि उसने मरने से पहले वह धन भूषणदास के हाथ सौंप दिया, क्योंकि घर में कहीं वह धन उन्हें न मिला।

शंभुप्रसाद के बेटों ने भूषणदास को इस धोखे का सबक़ सिखाना चाहा। इस वास्ते उन्होंने एक योजना बनाई और ऐसा अभिनय किया कि मानों वे भूषणदास की बातों पर यक़ीन करते हैं।

इसके थोड़े दिन बाद शिवराम ने भूषणदास के पास जाकर बिनती की, ''काकाजी, मेरे पिता ने आप की सलाह के मुताबिक़ चलने को हमें बताया है। मेरा छोटा भाई गोविंद बढ़ईगिरी का पेशा करते इसी गाँव में रहना चाहता है। मैं उसे अकेले यहाँ छोड़ शहर में नहीं जा सकता। मेरे भी पेट भरने का यहाँ पर कोई उपाय कीजिए।''

''सुनो बेटा, तुम मेरे घर का हिसाब क़िताब देखते मेरे ही यहाँ काम करो। मैं तुम्हारी थोड़ी-बहुत मदद करूँगा ही।'' भूषणदास ने समझाया।

फिर क्या था, शिवराम भूषणदास के घर काम पर लग गया। उसने सारे परिवार के लोगों का विश्वास प्राप्त किया और उस परिवार के एक सदस्य के रूप में ही रहने लगा। उसने धीरे-धीरे उस परिवार के सारे रहस्यों को जान लिया।

भूषणदास ने अपना सारा धन एक भारी संदूक़ में छिपाकर ऐसी जगह रखा, जहाँ अक्सर परिवार के लोग आते-जाते हैं। उस पर ऐसा पुराना वस्त्र ढककर रखा जिससे लोग यह समझें कि उस भारी संदूक़ के अंदर पुराने कपड़े हैं और क़ीमती चीज़ें नहीं हैं, मगर उस परिवार का कोई न कोई सदस्य सदा उस संदूक़ पर निगरानी रखता था।

शिवराम ने एक दिन मौक़ा पाकर उस संदूक़ की माप ले ली। एक दिन रात को किसी ने भूषणदास के दर्वाजे पर दस्तक दी। भूषणदास ने दरवाजा खोला। बाहर कोई राजकुमार की

पोशाक धारणकर खड़ा था। उसके पीछे अंधेरे में थोड़े से आदमी भी थे।

राजकुमार ने भूषणदास को प्रणाम करके कहा, ''मैंने सुना है कि इस प्रांत में आप से बढ़कर कोई बड़ा धनी नहीं है। मैं पड़ोसी राज्य का निवासी हूँ। अचानक हम पर आफ़त आ गई है। मैं अपनी थोड़ी-सी संपत्ति बचाकर निकल आया हूँ। मेरी सारी संपत्ति इस संदूक में है। आप कृपया इसे अपने घर सुरक्षित रखिये। मेरे दिन जब फिरेंगे, तब मैं आकर यह संदूक़ ले जाऊँगा। आप मेरी यह मदद करें तो में कभी आप के इस उपकार को भूल नहीं सकता।''

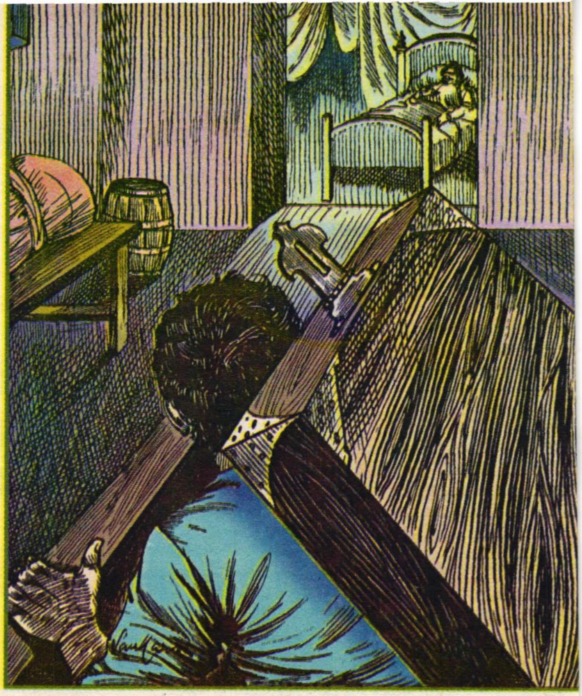

संदूक़ भूषणदास के मकान के बाहर चबूतरे पर था। उस पर मखमल लपेटा हुआ था।

भूषणदास ने उस संदूक़ को अपने घर में रखने को मान लिया। राजकुमार ने अपने अनुचरों के द्वारा उसे भीतर पहुँचवा दिया। वह भी एक भारी संदूक़ था। भूषणदास ने राजकुमार के संदूक को अपने सन्दूक के पास ही रखवा दिया।

इसके बाद राजकुमार भूषणदास से विदा लेकर चला गया। भूषणदास अपनी क़िस्मत पर फूला न समाया। वह सोचने लगा, अगर राजकुमार के अच्छे दिन न आये तो सारी संपत्ति उसी की हो जाएगी। अगर उसके अच्छे दिन आ गये तो उसे ज़िंदगी भर राजकुमार का सहारा प्राप्त होगा। दोनों हाथ में लड्डू हैं।

फिर भूषणदास चैन से सो गया। इसके थोड़ी देर बाद राजकुमार के संदूक़ के ऊपर का मखमल खिसककर नीचे गिर गया। उसका ढक्कन ऊपर उठा। उसके भीतर से गोविंद बाहर आया। उसने भूषणदास के संदूक़ के ऊपर का पुराना वस्त्र राजकुमार के सन्दूक के ऊपर तथा राजकुमार के संदूक़ के ऊपर का मखमल भूषणदास के सन्दूक पर रख दिया और चुपचाप पिछवाड़े का दरवाजा खोलकर बाहर चला गया।

भूषणदास जब गहरी नींद में था, तब किसी ने उसे थपकी देकर जगाया। भूषणदास चौंककर उठ बैठा। देखा, उसकी खाट के समीप कोई हथियार बंद सिपाही जैसा व्यक्ति खड़ा हुआ है। वह घबरा गया और पूछा, ''तुम कौन हो? इस घर के अन्दर कैसे आ गये?''

सिपाही ने कड़ककर कहा, ''तुम मेरे सवालों का जवाब दो। हमें मालूम हुआ है कि पड़ोसी देश

का राजा थोड़ी देर पहले तुम्हारे घर आया और वह तुम्हारे घर दो संदूक छिपाकर चला गया है। नये राजा का आदेश है कि उस राजा को तुरंत बन्दी बनावे।''

भूषणदास भय के मारे काँप उठा।

''वह राजा तो तभी चले गये। मेरे घर कोई एक संदूक़ रख गये हैं। पर मैं नहीं जानता कि उसके अन्दर क्या है? चाहे तो आप वह संदूक़ ले जाइये।'' भूषणदास ने कहा।

सिपाही ने दोनों संदूक़ों को देख कर कहा, ''ये दोनों उसी के हैं।''

इस पर भूषणदास ने कहा, ''महाशय, जिस पर सादा वस्त्र ढका हुआ है, वह मेरा है और जिस पर मखमल ढका है, वह उस राजा का है।'' सिपाही ने कहा, ''अच्छी बात है। आप तो बुज़ुर्ग मालूम होते हैं। इसलिए मैं आपकी बात पर यक़ीन करता हूँ।'' यों कहकर उसने अपने अनुचरों को पुकारा और मखमल वस्त्र से ढका हुआ संदूक़ उनके द्वारा उठवा ले गया। उसी संदूक़ में भूषणदास का सारा धन था।

इस घटना से भूषणदास एकदम घबरा गया। बड़ी देर बाद जब थोड़ा आश्ववस्त हुआ, तब उसने सोचा कि एक बड़ी भारी आफ़त टल गई है। तब संदूक़ पर से पुराना वस्त्र हटाकर उसका ढक्कन उठाया, पर उसमें कुछ न था।

अपना सारा धन खोकर पूरे परिवार के लोग रात भर रोते रहे। सवेरे शिवराम आ पहुँचा। उसने सारी कहानी सुनी, फिर रोता हुआ बोला, ''साहब, मैं अब आपके घर का हिसाब किताब क्या देखूँ? जो कुछ था, सारा खो गया।'' कहकर आँसू पोंछते शिवराम विदा लेकर चला गया।

इसके थोड़े दिन बाद गाँव में यह अफ़वाह फैल गई कि शंभुप्रसाद ने गुप्त रूप से जो धन छिपा रखा था, वह उनके बेटों के हाथ लग गया है। फिर क्या था, उस धन से शिवराम ने अपना व्यापार शुरू किया।

इस प्रकार भूषणदास पाँच हजार हड़पने के लालच में अपना भी सारा धन खो बैठा। सच कहा गया है, लालच बुरी बला। उसे अपनी करनी का फल मिल गया।

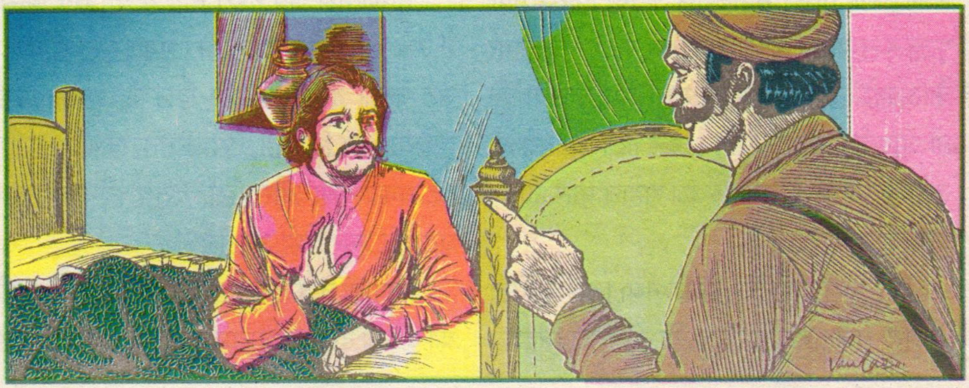

विहंग भेरी

बहुत पहले की बात है। पूरब के समुद्र के बीचो बीच गंभीर गिरि नामक एक महापर्वत हुआ करता था। लगता था, मानों वह पर्वत आकाश को छू रहा हो। इस पर्वत पर एक तरफ तरह-तरह के मधुर फल के वृक्षों की भरमार थी तो दूसरी तरफ़ सुगंध से वातावरण को व्याप्त करनेवाले पुष्पवन हुआ करते थे। इस वजह से यहाँ तरह-तरह के पक्षी निवास करते थे। इन पक्षियों में मुख्य पक्षी थे, गंडबेरुंड पक्षी।

इन पक्षियों का एक राजा हुआ करता था, जिसका नाम था, विहंग भेरी। ऐसे तो विहंग भेरी बड़ा ही बलवान पक्षी था, पर इससे भी बड़ी बात थी, उसका निर्मल मन। इसलिए विहंग भेरी के संरक्षण में बाकी पक्षी भी बिना किसी कष्ट या भय के आराम से रह रहे थे। सभी पक्षी आनंदमय जीवन व्यतीत करते थे।

अकस्मात इन पक्षियों को एक समस्या का सामना करना पड़ा। गंभीरगिरि को अपने में मिला लेने के लिए समुद्र बड़ी-बड़ी लहरों से पर्वत के पत्थरों को पिघलाने का प्रयत्न कर रहा था। गंभीर गिरि की सुंदरता पर मुग्ध होकर वह आगे बढ़ने की भरसक कोशिश कर रहा था। लहरें जब उस पर्वत से टकराती थीं, तब पर्वत इंच मात्र भी पीछे नहीं हटता था। वह समुद्र के इस प्रयत्न पर हँसता था। इससे समुद्र बहुत ही क्रोधित हो उठता था। लहरों के टकराने से भयंकर ध्वनि उत्पन्न होती थी। वह ध्वनि पक्षियों की शांति को भंग कर रही थी।

एक दिन आकाश राजा की पुत्री मेघमाला गगन विहार करती हुई गंभीर गिरि की सुंदरता पर मुग्ध होकर उस पर्वत पर उतरी। पक्षी राजा विहंग भेरी ने मेघमाला का सादर स्वागत किया और

नागेश्वर

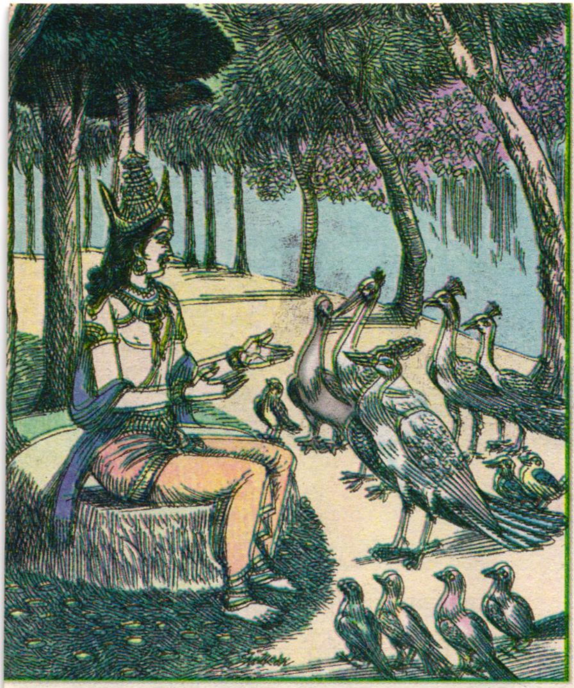

कहा, ''आकाश राजा की पुत्री का सुस्वागत। हमारे आतिथ्य को स्वीकार करते हुए यहाँ की प्रकृति की शोभा को देखिये। इसके लिए आवश्यक प्रबंध करता हूँ।''

विहंग भेरी के विनय पर मुग्ध होकर मेघमाला ने उसके आतिथ्य को स्वीकार किया। विहंग भेरी ने उसे मधुर फल और सुगन्धित पुष्प समर्पित किये। फिर उसे अपनी पीठ पर बिठाकर अनेक पक्षियों को साथ लिये, गंभीर गिरि के सहज सुंदर प्रदेशों और सुंदर वनों को उसे दिखाया, मणि माणिक्य उसे भेंट में दिया और बड़े ही प्यार के साथ उसे विदा किया। पक्षियों के आतिथ्य पर मेघमाला अत्यंत प्रसन्न हुई और स्वस्थल चली गयी।

मेघमाला से विहंग भेरी के आतिथ्य के बारे में आकाश राजा ने सुना और उससे वह बेहद खुश हुआ। दूसरे ही दिन वह विहंग भेरी को देखने आया और राजा से कहा, ''मेरी लाड़ली पुत्री मेघमाला को तुमने बहुत ही तृप्त किया। हम भी तुमसे बहुत संतुष्ट हैं। इसके बदले में तुम हमसे कोई वरदान माँगो।''

विहंग भेरी ने कहा, ''किसी प्रतिफल की आशा लेकर मैंने आपकी पुत्री का आतिथ्य नहीं किया। वह तो हृदयपूर्वक दिया गया आतिथ्य है। कृपया इसका कोई मूल्य मत आंकिये।''

''कम से कम मेरे मन को आनंद पहुँचाने के लिए ही सही, कोई न कोई वरदान माँगो'', आकाश राजा ने कहा।

तब विहंग भेरी ने कहा, ''आप वरदान देने पर ज़ोर दे रहे हैं, इसलिए मेरी एक विनती है। भगवान की कृपा से इस पर्वत पर हमारी पक्षी जाति को किसी बात की कमी नहीं है। पर, समुद्र व गंभीर गिरि के बीच में वैर बढ़ता जा रहा है, जिसके कारण हमारी शांति भंग हो रही है। जब-जब समुद्र अपनी बलशाली लहरों से गंभीर गिरि को तोड़ने का प्रयत्न करता है, तब-तब भयंकर ध्वनि उत्पन्न होती है और हमें अशांत करती है। इस समस्या का आप परिष्कार कर सकेंगे तो हम आपके चिर ऋणी होंगे।''

आकाश राजा ने कहा, ''पक्षी राजा, तुम बड़े उदार हो। तुमने जो वरदान माँगा, वह अपने लिए नहीं बल्कि दूसरों के लिए माँगा है। तुम्हारा व्यक्तित्व महान है। तुम्हारे जैसे शीलवान बहुत

ही क्रम पाये जाते हैं। अवश्य ही तुम्हारी इच्छा पूरी करूँगा।''

एक चाँदनी रात को जब पक्षी समूह आपस में बातें कर रहे थे तब उनके कानों को मधुर संगीत सुनायी पड़ा। वे उस मधुर संगीत को सुनकर आश्चर्य में डूब गये। आज तक उन्होंने ऐसा मधुर संगीत सुना नहीं। अब तक वे समुद्र की लहरों के पत्थरों से टकराने से जो भयंकर ध्वनि उत्पन्न होती थी, उसी को सुनते आ रहे थे। उस मधुर संगीत का आस्वादन लेते हुए विहंग भेरी ने पूछा, ''यह संगीत कहाँ से आ रहा है। देखें, यह कहाँ से निकलता है'', कहते हुए उसने बलशाली पंखों को फैलाया और हवा में उड़ गया। कुछ और पक्षी भी उसके साथ-साथ गये।

थोड़ी देर बाद हवा में उड़ते हुए विहंग भेरी ने अपनी दृष्टि नीचे फैलायी। महासमुद्र की तरंगें गंभीर गिरि से जहाँ टकराती थीं, वहीं से यह मधुर संगीत निकल रहा था।

विहंग भेरी को यह जानने में देर नहीं लगी कि यह सब कुछ आकाश राजा का दिया वरदान है। मन ही मन उसने आकाश राजा के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। शिलाओं और लहरों के टकराने से जो भयंकर ध्वनि उत्पन्न होती थी उसकी जगह पर आकाश ने पंचभूतों में से अपने अंश को संगीत में निक्षिप्त कर दिया। इससे लहरें सुमधुर संगीत की तरंगें उत्पन्न करने लगीं।

भीषण ध्वनि से वे बच गये, इसके लिए पक्षियों ने पक्षी राजा को धन्यवाद दिया।

गंभीर गिरि उसके उद्रेक का सामना कर नहीं पाया, इसी कारणवश भयभीत होकर वह उससे मैत्री करना चाहता है, यों समझकर समुद्र ने दबाव कम कर दिया। गंभीर गिरि समझने लगा कि आज तक रात-दिन उससे समुद्र टकराता रहा, पर कोई फ़ायदा नहीं निकला। इसलिए अब वह उससे समझौता करना चाहता है और अपनी लहरों से संगीत की सृष्टि करते हुए दोस्ती निभाना चाहता है। वह समुद्र के इस रुख पर बहुत प्रसन्न हुआ।

यों पर्वत और सागर के बीच का विरोध मिट गया, यद्यपि रहस्य कभी न जान सके। यह केवल विहंग भेरी और आकाश राजा जानते थे।

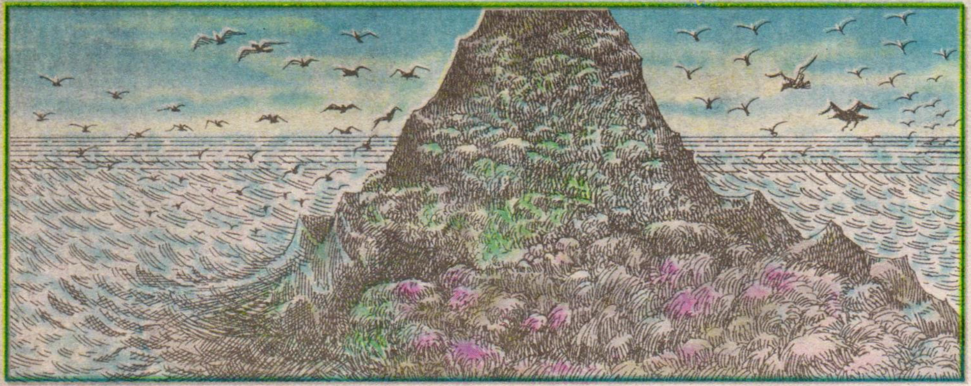

असली अंधा

जगपति राय लक्ष्मीपुर के ज़मींदार थे। दूसरों को सताना, उन्हें परेशान करना और उसका मज़ा लेना उनकी आदत थी। एक दिन वे शिव मंदिर गये और भगवान के दर्शन के बाद लौट रहे थे। मंदिर के सामने एक भीखमंगा भीख माँगते हुए कह रहा था, ''दान दीजिये बाबूजी, भगवान आपका भला करेगा, आपको सुखी रखेगा।'' वह जन्म से ही अंधा था।

राय ने जैसे ही उसे देखा, उसे रुलाने का निश्चय कर लिया। इधर-उधर देखने के बाद एक कंकड़ उठाया और उसे भीखमंगे के जस्ते के बरतन में डाल दिया। भीखमंगे ने तुरंत कहा, ''कंकड़ को बरतन में डालनेवाले आप कौन हैं बाबूजी? मैं अंधा हूँ, पर इतना अवश्य जान सकता हूँ कि वह सिक्का है या कंकड़। आपकी आँखें हैं, बखूबी देख सकते हैं, पर इतना भी नहीं जानते? असली अंधे तो आप हैं।'' राय के पीछे-पीछे आये उनके सेवक ने कहा, ''इन्हें क्या समझ रखा है? हमारे ज़मींदार जगपति राय हैं। सावधान।''

''बरतन में जो गिरा, उसकी ध्वनि के आधार पर मैंने कहा था। मैं थोड़े ही जानता था कि यह ज़मींदार का काम है; मैं तो जन्म से ही अंधा हूँ, किन्तु इतने बड़े आदमी को ऐसा क्यों सूझा।'' भिखारी ने कहा।

उसकी बातें सुनकर ज़मींदार शरमा गये और सिर झुका लिया। उस दिन से किसी और को सताने की आदत उन्होंने छोड़ दी। वे अपनी ग़लती समझ गये। ***- जयकिरण***

चन्दामामा प्रश्नोत्तरी-१०

(१६ वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए)

Co-sponsored by Infosys FOUNDATION, Bangalore

जो सही उत्तर देंगे, उनमें से एक को २५० रुपये दिये जायेंगे।*

भारत वास्तव में पर्वों का देश है। इस महीने की प्रश्नोत्तरी से तुम्हें पता चलेगा कि तुम इन पर्वों को कितना जानते हो?

**यदि सर्वशुद्ध प्रविष्टि एक से अधिक हों तो सफल प्रतियोगियों में से प्रत्येक को रु.५० की राशि मिलेगी।*

तुम्हें क्या करना चाहिये: १. एक कागज पर उत्तरों को लिखो; २. अपना नाम, आयु तथा पिन कोड के साथ घर का पूरा पता लिखो; ३. लिफाफे पर लिखो **चन्दामामा प्रश्नोत्तरी-१०** लिखो ; ४.तुम्हारी प्रविष्टि ३० नवम्बर से पहले हमें मिल जानी चाहिये। उत्तर जनवरी २००९ के अंक में प्रकाशित होंगे।

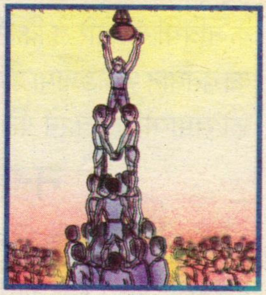

१. एक पवित्र महीना की विशेषता है सभी ३० दिनों का उपवास। कुछ भक्त दूसरे देश में स्थित तीर्थ की यात्रा करते हैं। यह पवित्र महीना कौन-सा है।

२. किस त्योहार में गलियों में मानव पिरामिड बना कर ऊपर टंगे दही के मटके को छूने का तमाशा देखा जाता है जिसमें सबको बहुत आनन्द मिलता है?

३. एक त्योहार केवल स्त्रियाँ मनाती हैं। वे इस अवसर के लिए बनाये झूले पर झूलती हुई गीत गाती हैं। वह त्योहार कौन-सा है?

४. अपने नये वर्ष के अवसर पर कुछ लोग अच्छे विचारों के साथ रहने, अच्छे शब्द बोलने और अच्छे कर्म करने की शपथ लेते हैं। ये कौन हैं और उस दिन को क्या कहते हैं?

बच्चे अख़बार की सुर्खियों में

इस तारे के पाँव जमीन पर हैं

बारह वर्षीय दरशील सफारी ने काफी प्रशंसित फिल्म 'तारे ज़मीन पर' में अपने आश्चर्यजनक प्रदर्शन से रूपहले परदे पर तहलका मचा दिया है। जबकि भारत में आम तौर पर बाल कलाकारों को बेमतलब की 'आकर्षक' भूमिकाओं में डाल दिया जाता है, दरशील ने एक ऐसे वाचन-विकलांग बच्चे का पार्ट अदा करने का सफल प्रयास किया है जो इस भाग-दौड़ की दुनिया में अपनी एक जगह बनाने के लिए संघर्ष करता है। इस प्रतिभा की 'खोज' पटक कथा लेखक अमोल गुप्ता ने की है जिन्होंने उसका चयन शियामक डवर नृत्य स्कूल से किया है।

नटखट पर कमजोर इशान अवस्थी, जिसकी भूमिका दरशील ने निभाई है, सहानुभूति नहीं चाहता; वह एक ओर वाचन-विकलांग बच्चे को उसके योग्य गौरव प्रदान करता है, तो दूसरी ओर हमारे हृदय के तंत्रियों को धीरे से किसी तरह झकझोरता है। 'तारे ज़मीन पर' फिल्म ने शिक्षाविदों और अभिभावकों को वर्तमान जकड़जामा शैक्षणिक पद्धति पर दूसरी नज़र डालने पर मजबूर कर दिया है, जो भिन्नताओं को समायोजित करने की गुंजाइश नहीं रखती।

नन्ही-सी शिक्षिका का पाठ बड़ा

ओमेगा पेरम्बूर में सेण्ट ऐन्स स्कूल में पढ़ती है और कुल १२ वर्ष की है। पर वह चेन्नई के व्यासरपाड़ी में एक हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी के अपने १० गुना १० के मकान में अपना स्कूल चलाती है। ओमेगा, शिक्षा और खेलकूद में बेहद दिलचस्पी रखती है। गर्मी के दिनों में अपराह्न में इसके घर पर १८ बच्चे डेरा डाले रहते हैं। वह अपने घर में सब के लिए किसी तरह जगह बनाती है और कक्षाएँ चलाती है। वह उन्हें नियमित कक्षाओं के अतिरिक्त पैर हिलाने और ट्यून गाने के लिए भी प्रोत्साहित करती है। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि वह बड़ी होने पर सामाजिक कर्त्री बनना चाहती है।

इसके माता-पिता तथा बड़ी बहन को इस पर गर्व है। ग्रीष्म कालीन शिविर के लिए सामान एड इण्डिया की आरे वह से दिये गये हैं और उसे बच्चों के साथ उन्हें बाँटने में बहुत प्रसन्नता अनुभव करती है।

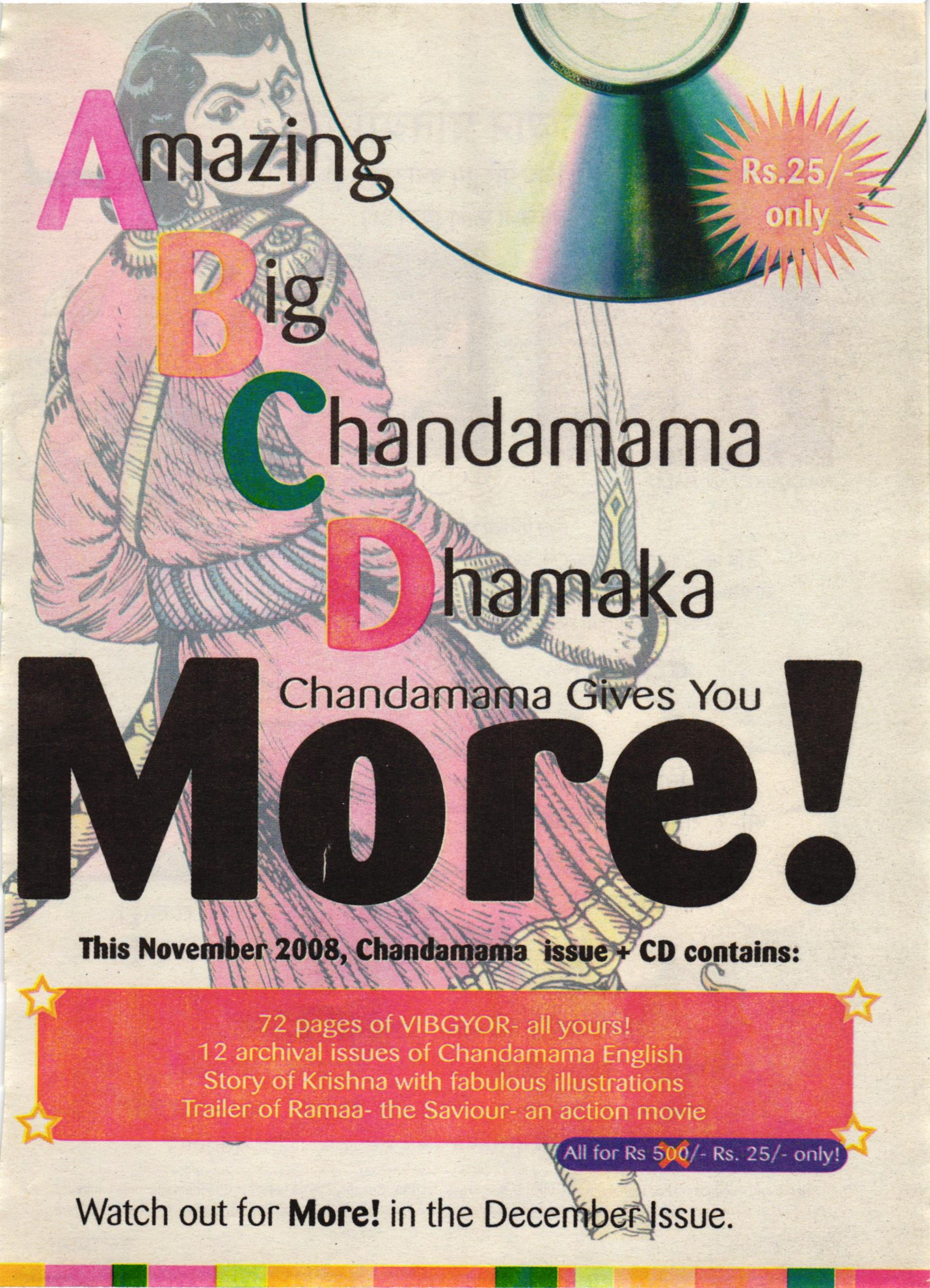
Amazing
Big
Chandamama
Dhamaka
Chandamama Gives You
More!
Rs.25/- only
This November 2008, Chandamama issue + CD contains:
72 pages of VIBGYOR- all yours!
12 archival issues of Chandamama English
Story of Krishna with fabulous illustrations
Trailer of Ramaa- the Saviour- an action movie
All for Rs ~~500~~/- Rs. 25/- only!
Watch out for More! in the December Issue.

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

KALANIKETAN BALU

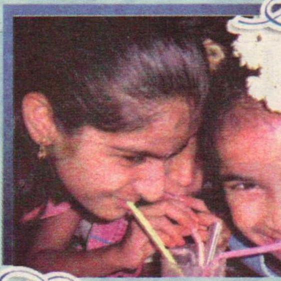

KALANIKETAN BALU

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,
जे वि एल प्लाज़ा, छठी मंजिल, नं. ६२६(पु.नं.५०१), अण्णा सालई, तेनाम्पेट, चेन्नई - ६०० ०१८.
जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए । सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/- रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा ।

बधाइयाँ

नितिन वार्ष्णेय
सी-१, राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड
कैम्पस, आनन्द - ३८८ ००१
(गुजरात)

विजयी प्रविष्टि

मैं खिलौनों से खेलूँ।
मैं आकाश को छू लूँ॥

अपने भारत को जानो प्रश्नोत्तरी के उत्तर:

१. द अलमिडा; २. कैप्टन हॉकिन्स; ३. सम्राट अशोक; महीन्द्र तथा संघमित्रा; ४. नादिर शाह; ५. तैमूर लंग; ६. जजिया; ७. लॉर्ड लुइस माउण्टबेटेन; ८. बहादुर शाह ज़फर; ९. सन १२८८ में और दूसरी बार १२९३ में; १०. रजिया सुलताना।

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 26 on behalf of Chandamama India Limited, JVL Plaza, 6th Floor, 626 (Old 501), Anna Salai, Teynampet, Chennai - 600 018. Editor : B. Viswanatha Reddi (Viswam)

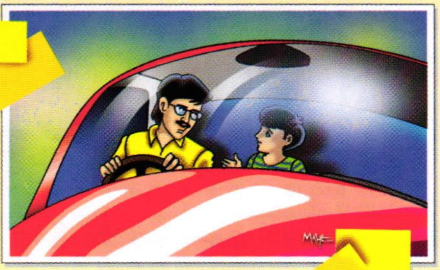

धीरे-धीरज से बने काम...

केतन के चाचा उसे अपनी नई स्टाइलिश कार में बाहर सैर के लिए ले जा रहे थे। ''क्या तुम जानते हो, मैं इस कार को कितनी तेज गति से ले जा सकता हूँ?'' उसने एक्सलेटर पर जोर से पाँव दबाते हुए पूछा।

''यह मत कीजिये, चाचा जी,'' केतन ने कहा। ''यदि आप प्रति घण्टा ७० किलो मीटर की गति से चलायेंगे तो केवल २० प्रतिशत अधिक पेट्रोल ही बचा सकेंगे। परन्तु ४०-५० किलोमीटर प्रति घण्टा चलाने से इन्धन के साध धन भी बचा सकते हैं।''

''यह तो मज़ेदार बात है! लगता है, तुम कारों के बारे में काफी कुछ जानते हो! कुछ और बताना।''

''हमारा स्कूल इन्धन-संरक्षण पर वार्ताओं का आयोजन करता है और इस विषय पर मैंने काफी कुछ जानकारी प्राप्त की है। क्या आप जानते थे कि जब आप को लाल बत्ती पर १५ सेकेण्ड से अधिक देर तक रुकना पड़े तब इंजन बन्द कर देने पर पेट्रोल के बिल में काफी कमी ला सकते हैं और प्रदूषण की मात्रा में भी?''

''केतन, तुम्हें मेरा वित्त प्रबन्धक होना चाहिये!'' चाचा मुस्कुराते हुए बोले।

''यदि आप इतनी तेजी से चलायेंगे तो आप को बार-बार ब्रेक लगाना भी पड़ सकता है। रुक-रुक कर गाड़ी चलाने में इन्धन की बहुत बर्बादी होती है! इसलिए जब भी लाल बत्ती के आने की आशा हो तो मध्यम गति से गाड़ी चलायें, इससे इन्धन बचा सकते हैं।'' केतन बोला।

''ओह, तब ऐसी कार लेने का क्या फायदा यदि मैं तेज रफ़्तार से उसे नहीं चला सकता ! मजा किरकिरा न करो केतन!'' चाचा ने आह भरते हुए कहा।

''अच्छ, चाचा जी, इन्धन के बिना आप कार चला नहीं सकते; यदि इन्धन का संरक्षण न करें, तो भविष्य में हमलोगों के लिए इन्धन बचेगा ही नहीं !''

''यह तो सच है,'' चाचा ने सोचते हुए कहा। ''यदि प्रत्येक व्यक्ति इन युक्तियों को अमल में लाये, तो हम काफी मात्रा में इन्धन और धन बचायेंगे।''

''बिलकुल ठीक! कृपया यह सन्देश अपने सभी मित्रों तक पहुँचा दीजिये। यदि इन सरल युक्तियों को प्रत्येक व्यक्ति मन में बैठा ले तो भविष्य में हमें इन्धन के संकटों का सामना नहीं करना पड़ेगा।'' एक मुस्कान के साथ केतन ने कहा।

Dear Children,
Write your suggestions on "How to Save Fuel and Money while Driving" and send it to PCRA address given alongside & win attractive prizes!

Name...

Age...................................Class...............

Address..

....

E-mail..

MINISTRY OF PETROLEUM AND NATURAL GAS

PCRA PETROLEUM CONSERVATION RESEARCH ASSOCIATION

Additional Director (EC),
Sanrakshan Bhawan, 10, Bhikaiji Cama Place,
New Delhi 110066.
E-mail : pcra@pcra.org

CHANDAMAMA (Hindi) November 2008 Registrar of Newspapers of India No. 1087/57. Regd No. TN/CC(S)Dn/163/06-08
Licensed to post WPP - Inland No.TN/CC(S)Dn/92/06-08, Foreign No. 93/06-08